पितृकर्म समुच्चय

सम्पूर्ण

अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्

(भाषा टीका)

पं० शिव स्वरुप 'याज्ञिक'

श्री गंगाये नमः   श्री सरस्वत्यै नमः   श्री राधाकृष्णाय नमः

पितृकर्म समुच्चय

सम्पूर्ण अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्

भाषा टीका

लेखकः पं० शिवस्वरूप 'याज्ञिक'
भाष्कर प्रयाग, उत्तरकाशी

मूल्य 120

मुख्य वितरक
कर्मसिंह अमरसिंह, पुस्तक विक्रेता
बड़ा बाजार, हरिद्वार-२४९४०१

प्रकाशक :

बी.एस. प्रमिन्दर प्रकाशन

दिल्ली-51

मुख्य वितरक :

कर्मसिंह अमरसिंह

पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार

हरिद्वार-249401

फोन-01334-225619

नवीन संस्करण

मूल्य

परिचय

महापुण्य प्रभावेण मानुषं जन्म लभ्यते।
यस्त्यप्राप्य चरेद्धर्मं स याति परमांगतिम्।।

कर्मभूमि भारतवर्ष में जन्म लेने वाला मनुष्य अपने स्वर्गगत् पितामाता आदि के निमित्त अन्त्येष्टिकर्म आज भी विधिपूर्वक करता आ रहा है और करता रहेगा, क्योंकि हजारों जन्म के पुण्य के प्रभाव स्वरूप मनुष्य जन्म मिलता है और मनुष्य शरीर ही जीवन के उद्धार का सेतु है, जिसको प्राप्त कर अपने उद्धार के प्रति सचेत रहना ही मानव का प्रथम धर्म है।

जिसने इस दुर्लभ मानव शरीर को प्राप्त कर इस योनी में अपने उद्धार अथवा मोक्ष के उपाय नहीं किये, उसने मानों आलस्यवश हो हाथ में आये हुए अमृत कलश को गिरा दिया। आवागमन रूपी पाशो से मुक्ति के लिए पितृश्राद्ध (अन्त्येष्टि कर्म) अवश्य ही करने योग्य है, क्योंकि मानव मात्र भगवान की मायावश घड़ी की सुई के समान घूमते हुए अनेक योनियों में जन्ममृत्यु को प्राप्त करता रहता है, क्योंकि इस नाशवान जगत् में सभी शरीरधारियों को जन्म विनाश के लिए ही होता है।

मनुष्य धर्म का त्याग कर दुःख को प्राप्त करता है, केवल धर्म के सेवन से ही मानव जीवन सफल हो सकता है। मनुष्य (पिता) की मृत्यु के पश्चात् पुत्र का

पहला धर्म पिता आदि के निमित्त अन्त्येष्टि संस्कार करना है। प्रेत संस्कार करने से पुत्रादि को अवश्य ही यज्ञों के फल की प्राप्ति होती है यथा-

स्त्रि वाथ पुरुषः कश्चिचदिष्टस्य कुरुते क्रियाम्।
अनाथ प्रेत संस्कारात्कोटियज्ञ फलं भवेत्।।
पितुः शतगुणं पुण्यं सहस्त्रं मातु रुच्यते।
भागिन्या दश साहस्त्रं सोदर्येदत्तमक्षयम्।।

अतः पुत्र वही है जिसनें पितृऋण से मुक्ति के लिए पिता आदि के अन्तेष्टि संस्कार किये, क्योंकि मनुष्य संसार में अनेक प्रकार से पल प्रतिपल शुभाशुभ कर्म करता हैं, जिससे स्वार्थवश हो अनेक पाप करता है, इस पाप की मुक्ति के लिए पुत्र को पिता आदि के अन्त्येष्टि कर्म अवश्य ही करने चाहिए, जिससे पिता को तृप्ति तथा पुत्र को फल की प्राप्ती हो सके। इसलिए पुत्र वही है जिसनें पिता आदि का अन्त्येष्टि कर्म किया, स्वयं ब्रह्मा ने कहा-

पुन्नाम्नो नरकद्यस्मात्पितरं त्रायते सुतः।
तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयंभुवा।।

पुत्र पिता माता की मृत्यु के पश्चात् क्रोध लोभ से रहित हो शास्त्र की रीति से पिता आदि के निमित्त श्राद्ध आदि करे, जिससे पितर श्राद्ध के प्रभाव से तृप्त हो धर्म के मार्ग से धर्मराज की सभा में धार्मिक लोगों के साथ आदरपूर्वक स्थिर रहकर स्वर्ग व मोक्ष की प्राप्ति करें।

पितरों के प्रभाव से ही वंश की वृद्धि होती है ऐसा शास्त्रों का वचन है। इसलिए पितृकार्य अवश्य ही करने चाहिए जो पुत्र पिता आदि के निमित्त तर्पण आदि कार्य नहीं करता उसका पुत्र होना व्यर्थ है। ऐसे पुत्र को स्वयं पितर ही कष्ट देते हैं यथा-

नास्तिक्यादथवा लौल्यान्नतर्पयति यः सुत।
पिबन्ति देहिनः स्त्रावं पितरोऽस्य जलार्थिनः।।

इसलिए इस नाशवान जगत में मनुष्य को अवश्य ही मृतक के निमित्त अन्त्येष्टि कर्म को शास्त्रोक्त रीति से करना चाहिए क्योंकि शास्त्र वचनों के अनुसार मेरा ऐसा विश्वास है कि श्राद्ध तर्पणादि से पितृगण स्वर्ग व मोक्ष को प्राप्त होंगे।

आज तक ऐसी पुस्तक अप्राप्य थी जिससे सम्पूर्ण अन्त्येष्टि कर्म पूर्ण किया जा सके जो पुस्तकें प्राप्त होती है उसमें गूढ़ संस्कृत होने के कारण कम पढ़े लिखे ब्राह्मणों को पितृ. कार्य करने करवानें का साहस नहीं होता था तथा सरल ढंग से लिखी अन्त्येष्टि कर्म पद्धति के अभाव में ब्राह्मण लोग भी इस कार्य करने से कतराते थे।

अतएव विद्वान पुरुषों के आशीर्वाद से प्रस्तुत पुस्तक बनाने का मेरा प्रथम प्रयास है जिसको कर्मकाण्ड के महासागर से चुनकर सरल रूप से आपके पास इस रत्न रूपी ग्रन्थ को प्रस्तुत कर सका हूँ। प्रस्तुत पुस्तक में अन्त्येष्टि कर्म के लिए सब विषयों का समावेश कर दिया

गया है, जिससे पुस्तक की उपयोगिता बढ़ जायेगी। तथा अन्त्येष्टि कर्म करवाने के लिए ब्रह्मणों को सरल पुस्तक प्राप्त हो जायेगी।

जिस प्रकार आपने **'सम्पूर्ण पूजन रहस्यम्'**, **'सम्पूर्ण हवन रहस्यम्'** तथा **'सम्पूर्ण ग्रहनक्षत्रादि शान्ति रहस्यम्'** को अपनाकर मेरा मान बढ़ाया उसनें मुझे पुनः लेखनी उठाने के लिए प्रेरित किया और मैं इस पुस्तक को आपके समक्ष प्रस्तुत कर सका। विद्वद् वृन्द इस पुस्तक को स्वीकार करेंगे, ऐसी मेरी आशा है। यह पुस्तक कम पढ़े लिखे विद्वानों ब्राह्मणों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगी तथा जो भी पुत्र पिता आदि के निमित्त अन्त्येष्टि श्राद्ध करेंगे, पितर तृप्त हो स्वर्ग एवं मोक्ष को प्राप्त करेंगे ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

इस पुस्तक में मानवजन्य त्रुटियां रहना संभव है। मेरे द्वारा अथक प्रयास किये जाने के उपरान्त भी यदि कुछ त्रुटियां रह गई हो तो भूल सुधारकर मुझे सूचित करने तथा अपने विचारों से अवगत करने की कृपा करेंगे। पुनः विद्वद् वृन्दों की सेवा में तत्पर रह सकूं, विद्वानों का आर्शीवाद चाहता हूँ आपका अपना ही–

भाष्कर प्रयाग
उत्तरायण संक्रान्ति
१५ जनवरी २०००

पं0 शिवस्वरूप 'याज्ञिक'
भटवाडी उत्तरकाशी
'उत्तराखण्ड' (उ.प्र.)
दूरभाष-०१३७४४-४४२४

विषयानुक्रमणिका

पितृ गायत्री पाठ

विश्वदेवों की परिक्रमा करते हुए पितृमण्डल में आ जाये, सव्य पूर्वाभिमुख हो आचमन करके निम्न पितृ गायत्री मन्त्र का तीन बार पाठ करें-

ॐदेवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः

दशदान

पुत्र पिता[१] या माता की मृत्यु निकट जानकर उससे पहले दश दान शान्ति हेतु करा देवे।

गोभूतिल हिरण्याज्यवासोधान्य गुडानिच।
रौप्यं लवण मित्याहु दशदानानि पण्डिताः॥

विष्णु देवता के निमित भूमि-

भूमि सर्वाश्रया च यः वराहेण समुद्धृता।
अनन्त पुण्य फलदा शान्तिदानात्प्रच्छतु॥

पुनः विष्णु देवता के लिए तिल-

महर्षे गोत्र सम्भूताः कश्यपश्य तिला स्मृता।
तस्मादेषां प्रदानेन सर्व पापं व्यपोहतु॥

अग्निदेवता के लिए सोना-

हिरण्यं गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।
अनन्तं पुण्यं फलदं मतः शान्तिप्रयच्छ मे॥

विष्णु देवता के लिए घी-

कामधेनु समुद्भूतं सर्व यज्ञेषु संस्थितम्।
देवानामाज्यमाहारोदानेनास्या सुखं स्थिरम्॥

बृहस्पति देवता के लिए वस्त्र-

---

१. जनकोश्चोपनेता च यश्च विद्या प्रयच्छति।
अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरः स्मृताः॥

शीतोवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षकं परम्।
देहालंकरणं वस्त्रं दानेनास्यास्तु मे सुखम्।।

प्रजापति के लिए धान्य-

सर्वदेवमयं धान्यं सर्वोत्पत्ति करं परम्।
प्रणिनाजीवनोपायो दानादस्य सुखं मम।।

सोम देवता के लिए गुड़-

गुडमिक्षुरसोद्भूतं मंत्राणां प्रणदोयथा।
दानेनास्य सदाशान्तिर्भवत्वीश प्रसादतः।।

चन्द्रदेवता के लिए रौप्य-

रजतः प्रीतिश्च पितृणां विष्णुशंकरयोस्तथा।
शिवनेत्रोद्भवरौप्यमस्य दानेन मे सुखम्।।

सोमदेवता के लिए नमक-

यस्माद‌न्ये रसाः सर्वे नोत्कृष्टाः लवणं बिना।
सोमः प्रीतिकरा यस्मादानेनास्य सदा सुखम्।।

गायदान

धेनुदान-पाप धेनुदान, ऋण धेनुदान, प्रायाश्चित धेनु दान तथा वैतरंणी धेनु दान चार गाय दान पुत्र पिता से करवाये मरण समय उक्त पापों को दूर करने के लिए इन धेनुदान को करे, धेनु के अभाव में यथाशक्ति गाय का मूल्य रखकर मुंह पूर्व या उत्तर की ओर कर पृथक-पृथक संकल्प करें-

१-पापधेनुदान- पाप धेनवे नमः सम्पूज्य श्वेत गाय

का पूजन कर ब्राह्मण का पूजन कर लेवे। फिर संकल्प करें-

अद्येत्यादि० अमुकोऽहं मम सर्व क्षय पाप पूर्वकं स्वर्गलोकावाप्तये इमां सुपूजितां श्वेतां गां रुद्र दैवतां वा तन्निष्क्रयीभूत द्रव्यं चन्द्रादिदैवतं अमुकगोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददेनमम:।

पुन: गाय की प्रार्थना कर लेवे-

आजन्मोपार्जितं पापं मनोवाक् कायकर्मभि:।
तत्सर्वनाशमायातु पापधेनु प्रदानत:।।

२- ऋण धेनुदान - ऋण धेनवे नम: सम्पूज्य।

रक्त गौ का पूजन कर फिर ब्राह्मण पूजन कर संकल्प करे- **अद्येत्यादि. अमुकोऽहं अनेक जन्मार्जित पाप प्रशमन पूर्वक सद्गति प्राप्तये सूपूजितां मिमात्रृण धेनुरक्तांब्रह्मदैवतां अमुक गोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।**

पुन: प्रार्थना-

एहिकामुष्मिकं यच्च सप्तजन्मार्जितं मम।
विजयं तदृणं यातु गांमेता प्रदतो मम।।

3- प्रायश्चित धेनुदान- प्रायश्चित धेनवेनम:।

गाय का पूजन कर ब्राह्मण का पूजन कर लेवे।

पुन: संकल्प-

अद्येत्यादि अमुकोऽहं सप्तजन्मार्जित ज्ञाताज्ञात

अनेकविध प्रायश्चित्तोपयोगी समस्त दूरित दूरिकरण पूर्वक सद्गति प्राप्तये इमां सुपूजितां प्रायश्चित धेनु अमुक गोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रदे।

प्रार्थना-

प्रायश्चित्ते समुत्पन्ने निष्कृतिर्न कृता मया।
सर्वपाप शान्त्यर्थं धेनुर्येषार्पिता मया।।

४- वैतरणी धेनुदान- वैतरणी धेनवे नमः।

कृष्ण गाय का पूजन कर ब्राह्मण का पूजन करे।

पुनः संकल्प-

अद्येत्यादि० अमुकोऽहं ममजन्मजन्मान्तर्जिता पापापनोदन पूर्वक शतयोजन विस्तृर्णां वैतरणीनदी तुर्तकामायै सुपूजितां वैतरणीय धेनु मिमां यमराज देवतां अमुक गोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।

प्रार्थना-

यमद्वारे पथे घोरे घोरां वैतरणीनदीम्।
तुर्तकामः प्रयच्छामि कृष्णां वैतरणीं चगाम्।।

मोक्ष धेनुदानम्

गो पूजन-आवाहन-

आवाहयाम्यहं देवी गां त्वां त्र्यैलौक्य मातरम्।
यस्यास्मरण मात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते।।१।।
त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुन्धरा।
गायत्री त्वं च सावित्री गंगा त्वं च सरस्वती।।२।।

तृणानि भक्ष्यसे नित्यं अमृतं स्त्रवसे प्रभो।
भूतप्रेत पिशाचांश्च पितृदेवर्षि मानुषान्॥३॥
सर्वास्तारयते देवी नरकात्पाप संकटात्॥

गाय का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, दक्षिणा से कर ब्राह्मण पूजन कर फिर संकल्प करें[1]-

अद्येत्यादि० अमुकोऽहं मम ज्ञाताज्ञात मनोवाक्काय कर्मजन्य पाप प्रशमन पूर्वकं मुक्ति हेतवे सुपूजितां कपिलां मोक्षधेनुमिमां रुद्रदेवतां मोक्षप्राप्तये अमुक गोत्राय अमुक ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।

प्रार्थना-

मोक्षं देहि जगन्नाथ मोक्षं देहिजनार्दनः।
मोक्षधेनु प्रदानेन श्री विष्णुः प्रीयतांमम॥

मृत्यु समय निकट देखकर पुत्र अथवा सम्बन्धी लोग भक्ति का उपदेश, भगवान के नामों का उच्चारण[2] गायत्री मंत्र का जाप, ॐकार का जाप, गंगा, राम, कृष्ण का स्मरण करवायें या जिसकी मृत्यु निकट आ गई हो उसे गीता, विष्णु सहस्त्र नाम, गंगा सहस्त्र का पाठ सुनायें जिससे अन्तकाल में प्राणी भगवान के नाम को स्मरण[3]

---

1. गाय दान फल- एकाः गौः स्वस्थ चित्तस्य ह्यातुरस्य च गोशतम्।
सहस्त्रं म्रियमाणस्य दत्तं चित्त विवर्जितम् (ग.पु.)

2. मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नारसिंहश्च वामनः। रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की तथ्यैव च॥ एतानि दश नामानि स्मर्तव्यानि सदा बुद्यैः। समीपे रोगियो ब्रूयुर्बान्धि वास्ते प्रकीर्तिताः।

3. ओमित्येकाक्षरं ब्रह्मव्यावहरन् मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमांगतिम्॥ (भ.गी.)

अथवा श्रवण कर मुक्त हो सके। प्राण प्रयाण के समय मृतक के मुख में गंगाजल, तुलसी दल[१], सुवर्ण अथवा पंचरत्न भी देना चाहिए इस समय कुटुम्बीजन जमीन गोबर से लीप कर तिल बिखेर देवे कुशा डालकर उसके ऊपर ऊर्णवस्त्र बिछाकर उसके ऊपर मृतक को लिटा देवे। यदि सुवर्ण न हो तो सुवर्ण के अभाव में मुख में घृत की बूंद भी दे सकते है।

प्राण प्रयाणान्तर

पिता आदि की मृत्यु के बाद कर्मकर्ता दक्षिण मुख हो मुण्डन करावे, स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र पहन लेवे तथा मृतक के शरीर को शुद्धजल या गंगाजल से स्नान करा वस्त्र पहनाकर गोपीचन्दन का तिलक तथा शरीर में सुगन्धित द्रव्य लगाकर पुष्पों की माला पहना देवें। अरथी बनाकर पैर आगे, सिर पीछे रख अरथी उठाकर श्मशान के लिए प्रस्थान करें।

पिण्डदान

जौ के आटे में तिल घी मिलाकर गंगाजल से राधकर छः[२] पिण्ड बना लेवें। पहला पिण्ड मृतक स्थान

---

१. तुलसीदलं मुखेकृत्वा तिल दर्भासनंमृतः।
नरो विष्णुपुरं याति पुत्रहीनोऽप्यसंशयः॥ (ग.पु.)

२. स्थाने द्वारेऽर्ध मार्गे च चितायां शवहस्तके।
अस्थि संचयने षष्ठ दश पिण्डा दशाह्निका॥ (ग.पु.)

पुत्र मुण्डन करे- माता पित्रोर्मृतायेन कारितं मुण्डनं न हि।
आत्मजः स कथं ज्ञेयः संसारर्णव तारकः॥

में अपसव्य, होकर जल तिलकुश सहित (स्थान पिण्ड)देवें ब्राह्मण संकल्प कहे-

१. अद्य अमुक गोत्रः शवनाम प्रेत मृतस्थाने एष ते पिण्डो मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।

पिण्ड को कर्मकर्ता मृतक के हाथ में अंगूठे की ओर से देवें पिण्ड के ऊपर तिल और जल डाल दें। तिलकुश जल सब पिण्डों के साथ रखकर संकल्प करें।

२. द्वार पिण्ड-

अद्यामुकगोत्रः अमुक प्रेतद्वार देशे पान्थनिमित्त एषते पिण्डोमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पहले जैसे ही पिण्ड मृतक के हाथ में रखकर तिल जल छोड़ दें।

३. चौराहे पर-

अद्य अमुक गोत्र अमुक प्रेत चत्वरे खेचर निमित्त एष ते पिण्डो मयादीयते तपोपतिष्ठताम्।

पूर्ववत्त पिण्ड के ऊपर तिलजल छोड़कर रख देवें।

४. विश्राम स्थान पर या जहां से श्मशान नजर आए

अद्य अमुक गोत्रः अमुकप्रेत विश्रान्तो भूतनाम्ना एषते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

मृतक के हाथ में पिण्ड रखकर तिल जल डाल देवें! यहां से मृतक की अरथी का सिर बदल देवें अर्थात् मृतक का सिर आगे और पैर पीछे कर दें। श्मशान में चिता बनाकर

५. पांचवां पिण्ड मुर्दे को चिता में रखकर दें। संकल्प-

अद्यामुकगोत्रः साधकनाम प्रेत एषः चित्रगुप्त दैवतःचितापिण्डस्ते मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।

६. कर्मकर्ता शव के दक्षिण में बैठकर पूर्ववत् संकल्प लेकर पिण्ड को शव के हाथ (या अस्थि संचय के समय) में दें-

अद्येत्यादि अमुकगोत्रः अमुकप्रेत शवहस्ते प्रेतदेवतो एषपिण्डो मयादीयते तवोपतिष्ठताम्॥

पुनः अवनेजन (जल तिल) पिण्ड पर डाल दें। पश्चात् शव के मस्तक की तरफ भूमि को शुद्धकर पंच भू संस्कार कर क्रव्यादान नाम से अग्नि को जलावें पूजन कर निम्न आहुति देवें-

ॐ लोमेभ्यः स्वाहा॥१॥ ॐ त्वचेभ्यः स्वाहा॥२॥
ॐ लोहिताय स्वाहा॥३॥ ॐ मेदेभ्यःस्वाहा॥४॥
ॐ मांसेभ्यःस्वाहा॥५॥ ॐ स्नायुभ्यःस्वाहा॥६॥
ॐ अस्थिभ्यःस्वाहा॥७॥ ॐ मज्जाभ्यःस्वाहा॥८॥
ॐ रेतसे स्वाहा॥९॥ ॐ पायवे स्वाहा॥१०॥
ॐ आयासाय स्वाहा॥११॥ ॐ प्रायासाय स्वाहा॥१२॥
ॐ संयासाय स्वाहा॥१३॥ ॐ वियासाय स्वाहा॥१४॥
ॐ उद्यासाय स्वाहा॥१५॥ ॐ शुचे स्वाहा॥१६॥
ॐ शोचते स्वाहा॥१७॥ ॐशोचमानाय स्वाहा॥१८॥
ॐ शोकाय स्वाहा॥१९॥ॐतपसे स्वाहा॥२०॥

ॐ तप्यते स्वाहा॥२१॥ ॐ तप्यमानाय स्वाहा॥२२॥
ॐ तप्ताय स्वाहा॥२३॥ ॐ धर्म्माय स्वाहा॥२४॥
ॐनिष्कृत्यै स्वाहा॥२५॥ ॐ प्रायश्चित्यै स्वाहा॥२६॥
ॐ भेषजाय स्वाहा॥२७॥ ॐ यमाय स्वाहा॥२८॥
ॐ अन्तकाय स्वाहा॥२९॥ ॐ मृतवे स्वाहा॥३०॥
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा॥३१॥ ॐ ब्रह्म हत्यायै स्वाहा॥३२॥
ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यःस्वाहा॥३३॥ॐ द्यावापृथिभ्यां स्वाहा॥३४॥

हवन के बाद जलती हुई अग्नि हाथ में लेकर मुंह दक्षिण रख ये मंत्र कहें-

ॐ कृत्वासुदुष्कृतं कर्म जानता वाप्य जानता।
मृत्यु कालवंश प्राप्य नरं पंचत्वमागतः॥
धर्माधर्म समायुक्तः लोभ मोह समावृतः।
देहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् सगच्छतु॥

हाथ की अग्नि को लेकर चिता की परिक्रमा कर सिर की तरफ से चिता में अग्नि लगा देवें।

कपाल क्रिया

शव के अर्ध दग्ध होने पर कर्मकर्ता बांस के डंडे से कपाल बेधन कर घी को उसमें डाले शव पूर्ण जल जाने पर सब लोग जलाशय में स्नान करें। चाहे तो स्नान के

मृतकसूतक में न करे-

पर्यंके शयनं स्पर्शं न कुर्यान्मृतसूतकै।
सन्ध्यादानं जपं होम स्वाध्याय पितृतर्पणम्॥

पूर्व कर्मकर्ता अस्थि संचय करे चिता को गो दुग्ध से ठंड़ी कर अस्थि संचय करना श्रेष्ठ हैं कोई लोग अस्थिसंचय के निमित्त एकोदिष्ट समान श्राद्ध भी करते हैं।

मेरा अपना मत है कि यदि दाह गंगा[१] आदि नदियों में किया हो तो अस्थिसंचय न करें क्योंकि गंगा तो सबको पवित्र करने वाली है विद्वान लोग मुझ अल्पबुद्धि की बात का ध्यान न करते हुए शास्त्रोक्त कर्म करें।

अस्थि संचय कर्म

प्रथम दिन से दस दिन के अन्दर मृतक की अस्थियों को गंगा आदि तीर्थों में छोड़ दें[२] चिता भष्म को ठंडी होने के बाद पहले या तीसरे दिन एक मटकी या ताम्बे के वर्तन को शुद्ध करले अपसव्य होकर कर्मकर्ता अनामिका अंगुष्ठ से मृतक की अस्थियों को चुने[३] (छठवां पिण्ड पहले न दिया हो तो दे देवें) पिण्ड देकर अस्थियों को गंगाजल व दूध से धोकर कलश में रखे,

---

१. यावदस्थिमनुष्याणां गंगातीर्थेषु तिष्ठति।
तावद्वर्ष सहस्त्राणि स्वर्गलोके महीयते॥

२. अस्थिसंचयन-
दशाहाभ्यन्तरे यस्य गंगातोयेषु मज्जति।
गंगायां मरणे यादृक तादृक्फलमवाप्नुयात्॥

३. प्रथमेऽह्नि तृतीये वा सप्तमे नवमे तथा।
अस्थि संचयनं कार्य दिनं तद्गोत्रजः सह॥

रेशमी वस्त्र से ढककर तीर्थ में भेजने की व्यवस्था करें अथवा बाद में भेजना हो तो अस्थि कलश को सुरक्षित स्थान में रख देवें।

पुनः चिता की भष्म को बहाकर अन्य लोग (पुत्र आदि बान्धव) दक्षिण मुख कर मुण्डन कर लें। अर्थि ले जाने वाले स्नान कर दक्षिणमुख कर अपसव्य हो (सगोत्री) तिलांजलि दें-

ॐअद्यामुकगोत्रामुक प्रेततच्चित्ता दाहोपशामनार्थं एषा तिलतोयांजलिस्ते मयादीयते तवोपतिष्ठताम्॥

पुनः घर के लिए प्रस्थान करे अर्ध मार्ग में कांटे को रख कर उसका उलंघन करे घर में गोमूत्र आदि का स्पर्श कर अन्य समन्धि सदुपदेश देकर अपने घर जायें कर्मकर्ता ब्रह्मचर्य हो एक समय भोजन कर पृथ्वी पर सोये। दशगात्र में गरुड़ पुराण की कथा श्रवण करें जिससे मृतक की आत्मा को शांति पहुंचे।

कर्मकर्ता घर आकर नीम के पत्ते दांतों से कांटे ऐसा भी प्रचलन है। सांयकाल मृतक स्थान में बारहवें दिन तक दीपक[1] जलावें।

---

१. मृतकस्थानमालिप्यदक्षिणाभिमुखं ततः।
द्वादशाहक पर्यन्तं दीपंकुर्यादहर्निशम्॥ (ग.पु.)

दशगात्र विधि

दशगात्र की सामग्री लेकर ग्राम के बाहर पीपल वृक्ष के पास या नदी तालाव के समीप श्राद्ध भूमि बनाकर पिण्डदान की व्यवस्था कर कर्मकर्ता शिखा खोलकर स्नान के लिए संकल्प करें। अपसव्य हो कुश तिल जल हाथ में रखें-

अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्यामुक प्रेतस्य (स्त्री हो तो **गोत्रायाः प्रेतायाः** ऐसा हर जगह संकल्प में कहें) **प्रेतत्व निवृत्तये उत्तमलोक प्राप्त्यर्थं च करिष्यमाण** प्रथम दिन **कृत्यर्थं** (जितना दिन हो वैसा कहे) **स्नान महं करिष्ये।** स्नान के बाद तिलांजलि देवें- **अद्येत्यादि० अमुकगोत्रस्यामुक प्रेतस्य चितादाहजनित तापशमनार्थं प्रथम दिन समन्धि एष तिलतोयांजलिर्मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।**

(तिलतोय अंजलि दश दिन तक प्रत्येक दिन एक एक अंजली बढ़ाकर देवें) अंजलि के पश्चात् चतुर्दश यम तर्पण, कर देवें।

चतुर्दश यम तर्पण

ॐ यमाय नमः ३ ॐ धर्मराजाय नमः ३ ॐ मृत्युवे नमः ३ ॐ अन्तकाय नमः ३ ॐ वैवश्वताय नमः ३ ॐ कालाय नमः ३ ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ३ ॐ औदुम्बराय नमः ३ ॐ दध्नाय नमः ३

ॐ नीलाय नमः३ ॐ परमेष्ठिने नमः३ ॐ वृकोदराय नमः ३ ॐ चित्राय नमः ३ ॐ चित्रगुप्ताय नमः ३ इस प्रकार अपसव्य हो कुशतिल सहित यम तर्पण देवें।

चितानल विधि

यह कार्य प्रथम दिन से दश दिन तक का है। जहां पिण्ड देना हो वहां भूमि लेपन कर[1] यव का चूर्ण लेकर उसमें तिल डालकर पिण्ड बना देवे यह कार्य चतुर्थ दिन से दशम दिन तक करना है, यदि चौथा दिन हो तो चार अथवा जितने दिन मृतक के हो गये हो उतने ही पिण्ड का निर्माण करना। सिर्फ दसवें दिन उड़द की दाल के चूर्ण का पिण्ड बनाना। त्रिकाष्टि के ऊपर मध्य में छेदवाला घड़ा रखना उसके नीचे चिता भष्म अथवा कुश का प्रेत बनाकर रखना जो कि घड़े से जलधारा प्रेत पर पड़ती रहे। प्रेत स्थापित करने के लिए पूर्व से पश्चिम दिशा में बेदी बनाना। कर्मकर्ता कुशा के आसन पर बैठे, कर्मकर्ता के ब्राह्मण गंगामाटी से ललाट, हृदय, नाभि, कंठ, पृष्ठ, दोनों भुजा पीठ दोनों कानों, मस्तक पर तिलक लगा लेवें। ब्राह्मण मंत्र भी बोले।

तिलकं च महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम।
आपदा हरते नित्यं ललाटे हरिचन्दनम्॥

---

१. अतोऽग्निहोत्रं श्राद्धं च ब्रह्मभोज्यं सुरार्चनम्।
मण्डलेन विना भूम्यांमातुरं नैव कारयेत्॥

अब [illegible] की पवित्री दाहिने हाथ की अनामिका [illegible] कुशा की पवित्री बायें हाथ की अनामिका में [illegible]। नीवी बन्धन कर ले शिखा तथा आसन में भी कुशा रख ले, आचमन शिखाबन्धन मानसिक प्राणायाम कर बांये हाथ में जल लेकर दहिने हाथ से शरीर में छीटें देवें-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽ पिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचि।

भूमि का पूजन भी कर ले-

पृथ्वीत्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वंच धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम्।।

अब जल लेकर कर्मकर्ता श्राद्ध हेतु संकल्प करें-

ॐ विष्णु विष्णु विष्णुः अद्य श्री ब्रह्मणो द्विद्वितीये परार्द्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवश्वत् मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगा-यमुनयोर अमुकदिग्भागे अमुक ग्रामे (नगरे) अमुकनाम संवत्सरे अमुकायने अमुकमासे अमुकपक्षे तिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये सद्गति प्राप्त्यर्थे प्रथम दिवसादारभ्य दशमाहनिक श्राद्धमहं करिष्ये।

सूतक प्रारंभ व्रत यज्ञ विवाहेषु श्राद्धे होमार्चनै जपेः।
आरब्धे सूतकं नस्यात् अनारब्धे तु सूतकम्।।

घट पूजन

अकामेतु निरालम्बो वायुभूत निराश्रय।
प्रेतघटो मयादत्तस्तवैष उपतिष्ठताम्॥

त्रिकाष्ट के ऊपर घट को स्थापित कर उसमें दूध और जल डाल दें-

चितानल प्रदग्धोऽसि परित्यक्तोऽसिबान्धवैः।
इदंनीरमिदं क्षीरं अत्रस्नाहि इदं पिवः॥

चितानल पूजन हेतु संकल्प करे-

अद्येत्यादि० अमुकगोत्रस्यामुक प्रेतस्य चिता-दाहोपशमनार्थं प्रेतत्व विमुक्तये दशगात्र निष्पत्यर्थंच प्रथम दिन सम्बन्धि रौरवनाम नरकोत्तारणाय विष्णुस्वरूप चितानल पूजनं करिष्ये॥

कर्मकर्त्ता पूर्व मुंह हो हाथ जोड़ के पितृगायत्री का स्मरण करे-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमोनमः॥

अपसव्य होकर बांया घुटना मोड़कर दान्तुन हाथ में लेकर दक्षिण मुंह हो घड़े में डाल दें-

ॐ अद्यामुकगोत्रामुक प्रेत शौचार्थे प्रथमदिन सम्बन्धि दन्त धावनं काष्ठमेतन्मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।

थोड़ा मृतिका भी घड़े में छोड़ दें। सव्य होकर

चितानल का पूजन कर दें-

विष्णुस्वरूप चितानलाय नमः गन्धाक्षतं पुष्पाणि धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणांच समर्पयामि। ॐ इदं विष्णु-र्विचक्रमेत्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पा ँसुरे स्वाहा। विष्णवे नमः।

पूजन कर प्रार्थना कर दें-

ॐ अनादि निधनो देव शंखचक्र गदाधरः।
अक्षय पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्ष प्रदोभव॥

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्ष दायिकाः।

प्रार्थना कर अपसव्य होकर दक्षिण मुख कर बांया घुटना टेककर तिल जल से घड़े के ऊपर तर्पण दें-

ॐ यमाय नमः ३ ॐ धर्मराजाय नमः ३ ॐ मृत्युवे नमः ३ ॐ अन्तकाय नमः ३ ॐ वैवस्वताय नमः ३ ॐ कालाय नमः ३ ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ३ ॐ औदुम्बराय नमः ३ ॐ दध्नाय नमः ३ ॐ नीलाय नमः ३ ॐ परमेष्ठिने नमः ३ ॐ वृकोदराय नमः ३ ॐ चित्रायनमः ३ ॐ चित्रगुप्ताय नमः ३॥

चितानल पूजन कर पिण्ड बेदी के पास आ जाये।

पिण्डदान (मलिनषोडशी)

कर्म पात्र स्थापित कर उसमें जल दूध आदि छोड़े।

मंत्र

जल–ॐ शन्नोदेवि रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये
शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।

दूध– ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्त-
रिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

तिल–ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देव निर्मितः।
प्रत्नमद्भि पृक्तः स्वधयापितृलोकान्प्रीणाहिनः॥

यव– ॐ यवोऽसियवयास्मद्द्वेशोयवयारातीः

कुश[१]–ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवः॥
उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः
तस्य ते पवित्रपतेपवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥

कुशा से जल को हिला लेवे–

ॐ यद्देवादेवहेडनं देवाशश्चकृमाव्ययम्।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुंचत्वꣳहसः॥१॥
यदि दिवा यदिनक्तमेनांसि च कृमा वयम्।
वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान मुंचत्व ꣳ हसः॥२॥
यदि जाग्रद्यपि स्वप्न एनांसि च कृमा वयम्।
सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान मुंचत्वंꣳहसः॥३॥

---

[१]दस प्रकार के दर्भ — कुशाःकाशा यवा दूर्वा उशीराश्चकुंदका।
गोधूमा ब्रीहयोमंजा दशदर्भाः स बल्वजा॥

[२]अन्यदभ लेना — कुशाभावेकाशाः स्युः काशाःकुश समास्मृताः।
कुशाभावे ग्रहीतव्या अन्येदर्भा यथोचितम्॥

इस जल से कुशा के द्वारा सब सामग्री पर छीटा देकर संकल्प करें, तिल जल कुशा[१] हाथ में लेवें-

अद्येत्यादि० अमुकगोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये प्रथमदिन सम्बन्धि रौरवनाम नरकोत्तारणाय मूर्धावयव निष्पत्यै शिरः पूरक पिण्ड दानंकरिष्ये।

अपसव्य होकर बांये गोड़े को जमीन पर टेक कर दक्षिण मुंह हो तिल जल हाथ में लेकर संकल्प करे-

अद्यामुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रथमदिन सम्बन्धि शिरः पूरक पिण्डस्थाने इदमासनं मया दीयतेतवोपतिष्ठताम्।

प्रेत के लिए एक कुश पर गांठ बांध कर प्रेत को स्थापित करे-

गतोऽसि दिव्यलोकांस्त्वं कर्मणा प्राप्त सत्पथः।
मनसा वायु रूपेण कुशे त्वां विनियोजये।।

प्रेत के पैर धोने के लिए कर्म कर्ता जल तीन बार देवे-

एततै पाद्यं पादावनेजनं पादयोः। पादप्रक्षालनम्।

एक पत्ते में जल लेकर दूध, तिल, पुष्प से अर्घ्यपात्र बनावे कुशा की चट पर डालें।

अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य इदं हस्तार्घ्यमुपतिष्ठताम्।

स्नान के लिए जल चढ़ावें-

स्नानमुपतिष्ठताम्।।

---

१. विना तिलैश्च दर्भैश्च पितृणां नोपतिष्ठति।
तिलाभावे निषिद्धाहे सुवर्ण रजतान्विते।।

कुश ग्रहण मंत्र विरंचिना समुत्पन्नो परमोष्ठिनिसर्गज।
दहस्व सर्व पापानि दर्भ स्वस्तिकरोभव।।
।।ॐ हुँ फट् स्वाहा।।

तीन सूत का तागा चढ़ावें-**एतत्ते वासः उपतिष्ठताम्॥**
ऊर्ण सूत्र चढ़ावे-**एततै ऊर्ण सूत्रः उपतिष्ठताम्॥**
तर्जनी अंगुली से चन्दन चढ़ावे-

चन्दन मुपतिष्ठाम्॥

तिल अक्षत-

एतानि अक्षतानि उपतिष्ठताम्॥

राल का धूप एवं दीप दिखावे-

एतत्ते धूपमुपतिष्ठाम्॥ एतत्ते दीपमुपतिष्ठाम्॥

नैवेद्य चढ़ा देवे-

नैवेद्यमुपतिष्ठताम्।

दक्षिणा चढ़ा देवे-

दक्षिणामुपतिष्ठाम्।

ताम्बूल चढ़ा देवे

ताम्बूलमुपतिष्ठाम्।

जल चढ़ा देवें-

पिण्डस्थाने अवनेजनं तवोपतिष्ठताम्।

पहले दिन का पिण्ड[1] तिल कुश जल के साथ हाथ में लेकर संकल्प-

अमुकगोत्रस्य अमुक प्रेतस्य शिरः पूरकः एषः।
प्रथमदिवसीयः पिण्डोमयादीयते तवोपतिष्ठाम्॥

---

1. पिण्ड से शरीर निर्माण-दग्ध देहे पुनर्देहः पिण्डै रुत्पपद्यते खगः।
हस्तमात्र पुमान् येन पथि भुंक्ते शुभा शुभभ् (ग0पु0)

ऐसा कहकर अंगूठे की तरफ से पिण्ड को वेदी के कुश के ऊपर रख दें। फिर एक दोने में जल लेकर पिण्ड के ऊपर अंगूठे की ओर से जल धारा दें-
अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य तेऽवनेजनं मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥

पिण्ड पूजन

पिण्ड के ऊपर पूजन के लिए निम्न सामग्री चढ़ा दे-
स्नानिय जल- पिण्डोपरि स्नानियजलं उपतिष्ठताम्।
कार्पास सूत्र- पिण्डोपरि कार्पाससूत्रं उपतिष्ठताम्।
ऊर्ण सूत्र- पिण्डोपरि ऊर्ण सूत्रं उपतिष्ठताम्।
चन्दन- पिण्डोपरि चन्दनं उपतिष्ठताम्।
तिलाक्षत- पिण्डोपरि तिलाक्षतं उपतिष्ठताम्।
पुष्प- पिण्डोपरि पुष्पं उपतिष्ठताम्।
भृगराजपत्र- पिण्डोपरि भृगराज दीयते तवोपतिष्ठताम्
रालधूप- पिण्डोपरि रालधूपमुपतिष्ठताम्।
दीप- दीपमुपतिष्ठताम्।
नैवेद्य- एतत्ते नैवेद्यमुपतिष्ठताम्।
दक्षिणा- दक्षिणाचोपतिष्ठताम्।
हल्दि- चर्मपूरक हरिद्राग्रन्थि तवोपतिष्ठताम्।
मजीठ- रक्तपूरिकं मंजिष्ठा तवोपतिष्ठताम्।
खस- नासाजालोत्पादकं खशं तवोपतिष्ठताम्।

कमगढ्ढा- षट्चक्रपूरकं कमल बीजं तवोपतिष्ठताम्।
आंवला- वीर्यपूरक धात्रीफलं तवोपतिष्ठताम्।
शतावरी- दन्तोन्पादकानिशतावरीमूलानिउपतिष्ठताम्।

तिलतोय पात्र हाथ में लेकर निम्न मंत्र से पिण्ड के ऊपर देवे-

अमुकगोत्रऽमुक प्रेत चितादाह जनित तापतृषोपशमनाय प्रथमदिन सम्बन्धि एत्त तिलतोयं मद्दतं तवोपतिष्ठताम्।

तिलतोयांजलि प्रथम दिन एक-दूसरे दिन दो के क्रम से दें।

प्रार्थना- **ॐ अनादि निधनो देवः शंखचक्र गदाधरः।**
अक्षय पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्ष प्रदोभव॥

ॐ अतसी पुष्प संकाशं पीतवास समन्वितम्।
धर्मराज नमस्तुभ्यं प्रेतमोक्षप्रदो भव॥

पिण्ड देकर कर्मकर्ता 'प्रेताप्यायनमस्तु' कहकर पिण्ड जल में डालकर स्नान कर ले और घर आकर स्वयं भोजन बनाकर तीन बलि अपसव्य होकर दक्षिणमुख हो देवे-

कागग्रास- **काकोसि यम दूतोसि गृहाण बलिमुत्तमाम्।**
ममद्वारगतं प्रेतं त्वमाप्यायितु मर्हसि॥

गौग्रास- **सौरभे या सर्वहिता पवित्रा पुण्य राशयः।**
प्रतिगृणन्तु मे ग्रासं गावस्त्रोलोक्य मातरः॥

श्वानग्रास- **द्वौश्वानौश्याम शबलौ वैवश्वत कुलोद्भवौ।**
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ॥

तीनों ग्रास देकर जल छोड़ दें। अब कर्मकर्ता स्वयं भी भोजन कर ले सांयकाल को मृतक के लिए एक दीप जलाकर कहे-

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रथम दिन निमित्त प्रेतलोका दित्यवद् द्यौतन कामः इमं दीपं विष्णु दैवतं न मम॥

दीप देकर प्रार्थना करे-

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम्॥

इस प्रकार प्रथम दिन का पिण्ड, चितानल पूजन पूर्ण हुआ, दसवें दिन तक इसी क्रम में पिण्ड दान देना है प्रत्येक दिन पिण्ड देने में असुविधा हो तो यह कार्य दशवें दिन ही किया जा सकता है, ऐसा विद्रानों का मत है। दूसरे दिन से शरीर पूरक तथा नरक तारण के लिए संकल्प अलग-अलग है। दूसरे दिन से दस दिन तक के संकल्प अलग-अलग दे रहे है जितना दिन हो उसका संकल्प पिण्डदान में कहे-

दूसरे दिन से दस दिन के पिण्डदान संकल्प

२- **अद्यामुक गोत्रस्य अमुक नाम प्रेतस्य द्वितीय दिने योनिपुंसनाम नरकोत्तारणाय चक्षु श्रोत्रनासिका सम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥**

३- अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य तृतीय दिने महारौरव नाम नरकोत्तारणाय भुज वक्षो ग्रीवा मुखावयव निष्पत्यर्थं एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

४- अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य चतुर्थ दिने तामिस्त्र नाम नरकोत्तारणाय उदरनाभि गुदवस्थि मेढ्य सम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

५- अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य पंचम दिने अन्धतामिस्त्र नाम नरकोत्तारणाय गुल्फ उरुजानुजंघा चरण सम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

६- अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य षष्ठे दिने संभ्रमनाम नरकोत्तारणाय सर्वमर्म सम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

७- अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य सप्तमे दिने अमेद्ध्यक्रमी नाम नरकोत्तारणाय अस्थिमज्जाशिरा पूरणाय एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

---

१. नवमे दिवसे चैव सपिण्डैः सकलैर्जनैः।
तैलाभ्यंगः प्रकर्तव्यो मृतक स्वर्ग काम्यया॥

सगोत्री तथा स्त्रियाँ मृतक के घर लावा तथा दूर्वा फेकें-
दूर्वावत्कुल वृद्धिस्ते लाजाइव विकासता।
एवमुक्त्वा त्यजेद् गेहे लाजान्दूर्वा समन्वितान्॥ (ग.पु.)

८- अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य अष्टमे दिने पुरीष भक्षण नाम नरकोत्तारणाय नख दन्त रोम केश पूर्णाय एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

९- अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य नवमे दिने स्वमांस भक्षण नाम नरकोत्तारणाय वीर्य्य पूर्णाय एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

१०-उड़द पिण्ड- अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य दशमे दिने कुम्भीपाक नाम नरकोत्तारणाय क्षुत्पिपासा पूर्णाय एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

दसवें दिन का कार्य पूर्ण होने पर दशगात्र के पहने हुए वस्त्र यज्ञोपवीत कर्मकर्ता छोड़ कर नये वस्त्र पहन लें कुम्भ तथा वेदी, पिण्ड को जल में विसर्जन कर दे। अपने देशाचार द्वारा कर्मकर्ता पुनर्मुण्डन[१] भी कर देवे घर की शुद्धि भी कर दें दधि दूध दुर्वा का स्पर्श करें तथा कर्म कर्ता ब्राह्मण हो तो अग्नि का, क्षत्रिय हो तो वाहन या आयुध का, वैश्य हो तो सोनें का, सूद्र वृषभ का स्पर्श कर लें।

---

१. पुनर्मुण्डन-दशमे दिवसे क्षौरं बांधवानां च मुण्डनम्।
क्रियाकर्तुः सुतस्यापि पुनर्मुण्डनमाचरेत्।। (ग०पु०)
यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्या समानि च।
केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात्केशा न्वपाम्यहम्।।

एकादशाह

शास्त्र प्रमाण के अनुसार एकादशाह को दम्पती पूजन, शय्यादान, गोदान, कुम्भदान, वृषोत्सर्ग करने के बाद एकादशाह का पिण्ड श्राद्ध करना। जैसे जिनके यहाँ प्रचलन हो वैसा भी करना श्रेय कर है हम यहाँ पर निम्न प्रमाण के अनुसार एकादशाह कर्म लिख रहे हैं-

आदौ च दम्पती पूज्यौ शय्या देया ततः परम्।
पश्चाच्च कपिला देया उद्कुम्भांस्तथैव च॥
वृषोत्सर्गस्ततः कार्यः पश्चादेकादशाहिकम्॥

एकादशाह के दिन कर्मकर्ता प्रातःकाल उठकर स्नान कर एकादशाह की सामग्री रखकर पूर्व मुख या उत्तर मुख हो सव्य से द्विजदम्पती का पूजन करे हाथ में तिल जल कुश लेकर संकल्प करे-

अद्येत्यादि अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्ति पूर्वक अक्षय स्वर्ग प्राप्तर्थं द्विजदम्पत्योः पूजनमहं करिष्ये।

द्विज दम्पति के अभाव में कुश वट का पूजन कर लेवे। गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य तथा दक्षिणा भी चढ़ा देवे।

शय्यादान

प्रेत के लिए उपयुक्त शय्या दक्षिण उत्तर रख शिर की तरफ घृत कुम्भ रख दें, आभूषण आदि रखकर चतुर्मुख दीप जला देवें शय्या के ऊपर

सप्तधन्य[१] रख उसके ऊपर सुवर्ण की प्रतिमा (कांचन पुरुष) को पंचामृत से धोकर स्थापित कर दें शय्या के ऊपर सुवर्ण (कांचन पुरुष) की प्रतिमा का पूजन कर तथा चारों दिशाओं का पूजन कर परिक्रमा कर दें, पूजन कुश वट ब्राह्मण का भी करके तिलकुश जल हाथ में लेकर संकल्प करे-

अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्य अमुक नाम प्रेतस्य सकल नरकयातना शीतादिबाधा याम्य पुरुष प्रहार निवृत्ति पूर्वक अनेकानेन कल्पान्त पुरन्दरादि सकल लोक प्रात्यर्थं घृतकुंभ जलकलश ताम्बूल दीपिका पादुका छत्र आसन चामर नानाविधि भोजन सुवर्णाभूषण ऊर्णकार्पास वस्त्र हैममय कांचन पुरुष प्रतिमायुतामिमां शय्या प्रजापति दैवतां युवाभ्यां सम्प्रददे।

दक्षिणा संकल्प- **अद्यकृतस्य शय्यादानस्य प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं इदं निष्क्रिय द्रव्यं वा युवाभ्यां सम्प्रददे।**

प्रार्थना- **प्रेतस्य प्रतिमा सैषा विष्णु सानिध्यदायिनी। स्यातामस्याः प्रदानेन सन्तुष्टौ द्विजदम्पती।।**

।। इति शय्यादान ।।

---

१. सप्तधान्य- ब्रीहयो यव गोधूमा मुद्गा माषाः प्रियंगव। चणकाः सप्तमाज्ञेया सप्तधान्य मुदाहृतम् (ग०पु०)

कपिलादान

गाय के लिए स्वर्णसींग, चांदी के खुर, ताम्र पीठ, कास्य पात्र दूहने के लिए, माला आदि रख संकल्प करे-

अद्येत्यादि अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्तिपूर्वक तदङ्गत्वेन गवादिपूजनं च करष्ये।

गो का पूजन गन्ध अक्षत वस्त्र फूल धूप दीप से कर नैवेद्य देवें गाय का मुंह धो दे, दक्षिणा भी देवे पूजन कर कुश तिल जल हाथ में लेकर संकल्प करे-

अद्येत्यादि० अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्ति पूर्वक उत्तम लोक प्राप्तर्थं इमां कपिलागां रुद्र दैवतां यथालंकारै अलंकृतां यथा नाम गोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।।

प्रतिष्ठा देकर गाय की प्रार्थना भी कर लें-

कपिले सर्व देवानां पूजनीयासि रोहिणी।
अर्थधेनुमयी यस्मादत्तः शान्ति प्रयच्छ मे।।

गाय ब्राह्मण को देकर कर्मकर्त्ता गाय की परिक्रमा कर लें।

उदकुम्भदान

जितने दिन वर्ष में होते हैं उतने घड़े जल के और अधिक मास वर्ष के अन्दर आ जाय तो तीस घट अधिक रख, घट का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प से कर के

तथा इस संख्या के बराबर दीप दान तथा दन्त धावन काष्ट को रखकर पूर्व मुख ब्राह्मण का पूजन कर संकल्प करें-

अद्येत्यादि० अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य मरण-दिनमारभ्य तिथिवृद्धि चान्द्रमानेन संवत्सरपूर्ति पर्यन्तं जायमान प्रात्यहिक क्षुत्पिपासा निवृत्यर्थं षष्ठ्यधिक त्रिंशत संख्याकान् सान्नान् सदीपान् सदन्तधावनान् उद्कुम्भान् ब्राह्मणाय दास्ये।

वृषोत्सर्ग

प्राय: आजकल एक आध ही लोग वृषोत्सर्ग[1] करते है तथापि क्रिया का लोप न हो इसलिए वृषोत्सर्ग लिख लिया है वृषोत्सर्ग में बछड़ा बछड़ी का पूजन कर त्याग करने का विधान है। यदि न हो सके तो मेनफल को ही नाला बांधकर कुशा लपेट कर साते फेरे करवाकर सूर्य चन्द्रमां की पूजा कर दें। अनेंक विद्वानों ने वृषोत्सर्ग से पूर्व ग्रहशान्ति विधान के अनुसार गणपति का पूजन करने का विधान बताया है। अत: गणपति पूजन स्मरण कर के तिलकुशजल लेकर यह संकल्प करे-

अद्येत्यादि० अमुकमासे अमुक पक्षे तिथौ वासरे अमुक गोत्रस्य अमुक नाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्ति पूर्वकाक्षय

---

१.   पतिपुत्रवती नारी भर्तुरग्रे मृता यदि।
     बृषोत्सर्गं न कुर्वीत गां चदद्यात्पयस्विनीम्॥

स्वर्गलोक प्राप्तिकामः एकादशेऽहनि वृषोत्सर्ग कर्माहं करिष्ये।

ईशान कोण में नवग्रह के पास बृषमातृ के लिए पंच मण्डल बनाकर तथा सात रेखा घी से बनाकर प्रेतमातृओं का पूजन करे-

वृषमाताओं का पूजन

नन्दा च सुमना चैव सुशीला च पयस्विनी।
सुरभी पंचभी प्रौक्ताः पंचेशा वृषमातरः॥

गन्धाक्षत पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, से पूजन कर रक्त वस्त्र चढ़ाकर नवग्रह का पूजन करे-

ॐ सूर्याय नमः। ॐ चन्द्राय नमः। ॐ भौमाय नमः। ॐ बुधाय नमः। ॐ बृहस्पतये नमः। ॐ शुक्राय नमः। ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ राहवे नमः। ॐ केतवे नमः॥

सात प्रेत माताओं का पूजन

काली कराली विकटा भीषणा च मदोत्कटा।
संहारिणी दुराधर्षाः सप्तैताः प्रेत मातरः॥

ईशान मे रुद्र कलश स्थापना करे कलश रख भूमि का स्पर्श करे- **ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसिविश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथ्वी यच्छ पृथिवी दृ॑ꣳह पृथिवीं मा हिꣳसीः॥**

अब भूमि पर धान्य रखे- **ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिनाचक्षुषेत्वा महीनां पयोऽसि।**

धान्य के ऊपर कलश रखे- **ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वां विशन्त्विन्दवः पुनरुर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्षोरुधारा पयस्वती॥**

कलश में जल डाले-**ॐ वरुण स्योस्तंभनमसि वरुणस्यस्कंभ सर्जनी स्थो वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽ ऋत सदनमसि वरुणस्यऽ ऋत सदनमासीत्॥**

कलश में गन्ध छोड़े- **ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्ठां करीषिणीम् इश्वरी सर्वभूतानांतामिहोपह्वये श्रियम्॥**

कलश में सर्वोषधि डाले- **ॐ या औषधीः पूर्वजाता देवेभ्यस्त्रियुगंपुरा मनैनुबभ्रुणामहꣳशतं धामानि सप्तच॥**

दूर्वा डाल दे-**ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषस्प्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥**

कुशा डाल दे- **ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥**

सप्तमृत्तिका- ॐ **स्योना पृथिवीनो भवान्नृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्म सप्रथाः॥**

पूगीफल- ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसू तास्तानो मुंचन्त्व ॐ हसः॥
पंचरत्न- ॐ परिवार्जपतिः कविरग्निर्हव्यान्य क्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥
दक्षिणा- ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्। सदाधार पृथिवी द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥
पंचपल्लव- ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृत् गोभाज इत्किला सथयत् सनवथ पुरुषम्॥
पूर्णपात्र-ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणा वहाऽइषमूर्जॐशतक्रतो॥
वस्त्र- ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उश्रेयान भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

पूर्णपात्र के ऊपर वस्त्र बान्धकर श्रीफल को रख दे पूजन के लिए विनियोग छोड़ दें-
तत्वायामिति शुनषेफ ऋषि त्रिष्टुप्छन्दो वरुणो देवता वरुणावाहने पूजने विनियोगः॥ वरुण का आवाहन कर लें। **ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते। यजमानो हविर्भिः। अहेडमानोः वरुणेह बोध्युरुशॐस मान आयुः प्रमोषीः॥ भूर्भूवः स्वः वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ वरुणं सांगमावाहयामि॥** इस प्रकार आवाहन

कर ॐ वरुणाय नमः।

षोडशोपचार से पूजन कर प्रार्थना करें-

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः।
मूलेतस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथवर्णः।
अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिता॥

कलश पूजन के बाद रुद्र प्रतिमा का अग्न्युतारण कर रुद्राध्याय के 16 मंत्रों का पाठ करे-

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो त ऽइषवे नमः। वाहुभ्यामुत ते नमः॥१॥ याते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपाप काशिनी। तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥२॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत्॥३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ꣳसुमनाऽअसत्॥४॥ अद्यवोच दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जंभयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽ धराचीः परासुव॥५॥ असौयस्ताम्रो ऽ अरुण उत वभ्रु सुमंगल। ये चैनꣳरुद्रा ऽ अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशो-ऽवैषाꣳहेडऽईमहे॥६॥ असौ यो ऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा ऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।

अथो ये ऽ अस्य सत्वानो ऽ हं तेभ्योऽ करं नमः॥८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रार्त्न्योयाम्। याश्चते हस्तऽइषवः पराता भगवो वप॥९॥ विज्यं धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो वाणवाँ २ ऽउत। अनेशन्नस्य या ऽ इषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः॥१०॥ या ते हतिर्मीदुष्टम हस्ते वभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य ऽ इषुधि स्तवारे ऽ अस्मन्निधेहि तम्॥१२॥ अवतत्य धनुष्टव ꣳसहस्त्राक्ष शतेषुधे। निर्शीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमनाभव॥१३॥ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्णवे उभाम्यांमुतते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥१४॥ मानो महान्तमुत मा नो ऽ अर्भकं मान ऽ उक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्। मानो वधीः पितरं मोत मातरं मानः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥१५॥ मा नस्तोके तनये मानऽ आयुषि मा नो गोषु मानोऽ अश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥१६॥

रुद्र पूजन कर कलश के ऊपर प्रतिमा स्थापित कर दें।

अग्निस्थापन

कर्मकर्ता हाथ में पुष्प चन्दन ताम्बूल तथा वरण द्रव्य, जल दक्षिणा लेकर संकल्प करें-

देशकालौ संकीर्त्य अद्य कर्तव्य वृषोत्सर्गाङ्गभूत होम कर्मणि कृताकृतावेक्षण रूप ब्रह्म कर्म कर्तु अमुक गोत्र अमुक शर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहंवृणे। ब्राह्मण कहे- **वृतोऽस्मि।** कर्मकर्ता कहे- **यथा विहितं कर्म्मंकुरु। ब्राह्मण कहे- करवाणीति।** कर्मकर्ता रुद्र कलश के पश्चिम में एक हाथ लम्बाई चौड़ाई प्रमाण की बालु का स्थडिंल बनाकर संकल्प करे-

देशकालौ संकीर्त्य अद्यकर्तव्य वृषोत्सर्ग कर्मणि पंचभूसंस्कार पूर्वक अग्निप्रतिष्ठापनं करिष्ये॥

हवन वेदी पर कुशकण्डिका करने का क्रम-

स्थडिलं कुशैः परिसमुह्यतानैशान्यां परित्यज्य।

वेदी को कुशा से साफ कर उसको ईशान में छोड़ दे। **गोमयोदकेनोपलिप्य।** वेदी को गोबर से लीप देवे। **स्त्रुवेण प्राग्रगा उदकसंस्थास्तिस्त्रोरेखाः स्थंडिल प्रमाणेन कृत्वा अनामिका अंगुष्ठाभ्यां यथोलिखिताभ्यो रेखाभ्यः पांसन्द धृत्येशानकोणे प्रक्षिपेत्।**

श्रुव मूल द्वारा पूर्व से स्थंडिल प्रमाण (लम्बाई) की तीन रेखा अपनी तरफ खीचें श्रुव से मिट्टी अनामिका

अंगूठा से निकाल कर ईशान में फेंक दें।

उदकेनाभ्युक्ष्य। जल छिड़क दें।

ताम्र पात्रेणाग्निं गृहित्वावेद्यां स्वाभिमुखं स्थापयेत्।

ताम्र पात्र में अग्नि लाकर स्थडिल के ऊपर पात्र मुख अपनी तरफ कर डाल दें। अग्नि स्थापित करते हुए इस मंत्र का उच्चारण करें-

ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ ऽ आसाद यादिह।। अग्नि का ध्यान कर लें

ॐ चत्वारि श्रृंगात्रयोऽ अस्यपादा द्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽ अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवो मर्त्यां२ आविवेश।। अग्ने वैश्वानर शांडिल्य गोत्र भूमिर्माता वरुणः पिता मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव।। रुद्रनामग्ने नमः।।

रुद्र नाम से अग्नि को प्रतिष्ठापित कर कुशा का ब्रह्मा बनाकर पूजन कर दें।

ततः प्रणीता पात्रं पुरतः कृत्वा जलेना पूर्य।

प्रणीता पात्र को सामने रख जल से भर दें।

कुशैराछाद्य ब्रह्मणोमुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिदध्यात्।

प्रणीता पात्र को कुश से ढककर ब्रह्मा को देखकर अग्नि के उत्तर में कुश के ऊपर रख दें।

ततः वर्हिपरिस्तरणं कुशाओं को बिछाने का क्रम-

वर्हिष प्रथम भाग मादाय उत्तराग्रै आग्नेयादीशानान्तं।

चार भाग बनाकर पहला भाग आग्नेय से ईशान तक।

आग्नेया दक्षिणस्याम्। दूसरा भाग आग्नेय से दक्षिण।

तृतीय भागमादाय नैर्ऋत्याद् दक्षिणस्याम्।

तीसरा भाग नैर्ऋत्य से दक्षिण तक।

चतुर्थ भागमादाय नैर्ऋत्याद् वायव्यान्तं।

चौथा भाग नैर्ऋत्य से वायव्य तक बिछाकर पुनः शेष को वायव्यादीशान्तम्। वायव्य से ईशान तक बिछा देवे।

ततो अग्निरुतरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थः कुशत्रयम् पवित्र करणार्थः साग्रमनन्तगर्भ कुशपत्र द्वयम्।

पवित्र छेदन के लिए अग्नि के उत्तर में तीन कुशा, पवित्र करने के लिए दो कुशा **प्रोक्षणी पात्रं आज्यस्थाली चरुस्थाली संमार्जनार्थं कुशत्रयम् उपयमनार्थं कुश त्रयं** प्रोक्षणी पात्र, घी का बर्तन, चरुपात्र तीन कुशा संमार्जन के, तीन कुशा उपयमन के लिए **प्रादेशमात्राः समिधस्तिस्त्रः पालाश्यः श्रुवः** प्रादेश मात्र प्रमाण की तीन समिधा, पलाश का श्रुव **आज्य तण्डुल पूर्णपात्रम् दक्षिणां** घी चावलों से भरा पूर्णपात्र दक्षिणा सहित रख देवे।

पवित्र छेदन कुशानां पूर्व पूर्व क्रमैणेता न्यासादनीयानि।

पवित्र छेदन कुशा से पूर्व में इन वस्तुओं को रखकर
त्रिभिः पवित्रच्छेदन कुशैर्द्वे पवित्रेद्दित्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदिकं त्री प्रोक्षणी पात्रे निधाय प्रोक्षणी पात्रं वामहस्ते धृत्वा दक्षिण हस्तानामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रं गृहित्वात्रिरुत्पवनम्।।

तीन कुशाओं से दो कुशाओं को तोड़कर प्रणीता के जल को तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डालकर प्रोक्षणी पात्र को बांये हाथ में रख दक्षिण हाथ की अनामिका अंगूष्ठ से तीन बार ऊपर उछालें।

प्रोक्षणी जलेनासादितवस्तुसेचनम्।

प्रोक्षणी के जल के छींटे सब सामग्री पर डाल दें।

अग्नि प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निधाय आज्यास्थाल्यामाज्यं निरुप्य चरुपात्रे चरुप्रक्षेपः।

अग्नि और प्रणीता के मध्य प्रोक्षणी पात्र रख घी के बर्तन में घी चरु के पात्र में चरु रख दें।

ततोज्वलतृण मवदाय आज्योपरि प्रदाक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः। ज्वल तृण लेकर घी के ऊपर प्रदक्षिणा क्रम से घुमाकर उसे अग्नि में डाल दें।

दक्षिण हस्तेन स्रुवमादायाधोमुखमग्नौ तापयित्वा-सव्ये पाणौ कृत्वा दक्षिणहस्तेन संमार्जन कुशानामग्रै रग्रंमध्येर्मध्यं मूलैर्मूलं स्रुवंसंमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रताप्य श्रुवंदक्षिणतो निदध्यात्।

कर्मकर्ता दक्षिण हाथ में श्रुव लेकर उल्टे मुख अग्नि में तपाकर बायें हाथ में रख दाहिने हाथ में सम्मार्जन कुशा से श्रुव के अग्र को अग्र भाग से मध्य को मध्य भाग से मूल को मूल भाग से साफ कर दे प्रणीता के जल के छींटे देकर पुनः तपा कर दक्षिण में रख दे।

ततः आज्य प्रतपनं उत्पवनम् कृत्वा तदवेक्षणम् अपद्रव्य निरसनंच। घी को गरम कर देख ले कोई अपद्रव्य पड़ा हो तो निकाल लें।

ततः उत्थाय उपयमन कुशानादाय वाम हस्ते धृत्वा अग्निपर्युक्षणं कृत्वा मनसा प्रजापतिम् ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ता समिधस्तिस्त्र क्षिपेत्।

अब कर्मकर्ता खड़ा होकर उपयमन कुशा को उठाकर बांये हाथ में रख मन में प्रजापति का ध्यान कर तीन समिधाओं को घी में भिगोकर चुपचाप अग्नि में डाले।

ततः उपविश्य सपवित्र प्रोक्षण्युदकेन अग्निं पर्युक्ष्य पवित्रे प्रणीता पात्रे निधाय दक्षिण जानुनिपात्य कुशाग्रेण ब्रह्मणाऽ न्वारब्धः आज्येन जुहुयात्।

बैठकर पवित्र से प्रोक्षणी के जल द्वारा अग्नि के छींटे देकर कुशा को प्रणीता पात्र में रख दक्षिण जंघा नवाकर कुश द्वारा ब्रह्मा को अन्वारब्ध कर घी से आहुती दें।

ॐ इह रतिः स्वाहा। इदमग्यने॥१। ॐ इहरमध्वं स्वाहा। इदमग्नये॥२॥ ॐ इहधृतिं स्वाहा। इदमग्नये॥३॥ ॐ

इह स्वधृतिः स्वाहा। इदमग्नये॥४॥ ॐ उपसृजन्धरुणं मात्रं धरुणोमातरं धयन् स्वाहा। इदमग्नये॥५॥ ॐ शयस्पोषमस्मासु दीधरत् स्वाहा। इदमग्नये॥६॥ ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय॥६॥ रुद्रनामग्ने नमः सम्पूज्य।

रुद्र नाम से अग्नि का पूजन गंधाक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य से कर निम्न आहुति दें-

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये॥१॥ ॐ रुद्राय स्वाहा। इदं रुद्राय॥२॥ ॐ शर्वाय स्वाहा। इदं शर्वाय॥३॥ ॐ पशुपतये स्वाहा। इदं पशुपतये॥४॥ ॐ उग्राय स्वाहा। इदं उग्राय॥५॥ ॐ अशनाय स्वाहा। इदं असनाय॥६॥ ॐ भवाय स्वाहा। इदं भवाय॥७॥ ॐ महादेवाय स्वाहा। इदं महादेवाय॥८॥ ॐ ईशानाय स्वाहा। इदं ईशानाय॥९॥ एक आहुति घी शक्कर की पूषा देवता को दें। **ॐ पूषा गावेन्तु नः पूषा रक्षतु सर्वतः पूषावाजसनोतु नः स्वाहा॥ इदं पूष्णे॥**

अब पायस चरु घृत को एकत्र कर एक आहुति दे-

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते॥

पुनः ९ आहुति दें-

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये॥१॥ ॐ भुव स्वाहा इदं वायवे॥२॥ ॐ स्वःस्वाहा इदं सूर्याय॥३॥ ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमॐशोशुचानो विश्वा द्वेषा सि प्र

मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम॥४॥ ॐ सत्वन्नो अग्नवमो भवोती ने दिष्ठोऽउस्या ऽउषसो व्युष्टौ।अव यक्ष्व नो वरुण ꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳसुहवो नऽएधि स्वाहा॥ इदमग्नि वरुणाभ्यां न मम॥५॥ ॐ अयाश्चाग्नेश्यनभिशस्ति पाश्च सत्वमित्वमयाअसि। अयानो यज्ञ वहास्ययानोधेहि भेषजꣳस्वाहा। इदमग्नये न मम॥६॥ ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्त्रं यज्ञिया: पाशा वितताम्हान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोतविष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्का: स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुभ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥७॥ ॐ उदुतमं वरुणपाश मस्म दवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय। अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणाय॥८॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये (मनसा)॥९॥

इस प्रकार हवन कर इन्द्रादि दश दिक्पाल को बलिदान देवे- ॐ पूर्वे इन्द्रायनमः। आग्नेयां अग्नये नमः। दक्षिणे यमाय नमः। नैर्ऋत्ये निर्ऋतये नमः। पश्चिमे वरुणाय नमः। वायव्य वायवे नमः। उत्तरे कुवेराय नमः। ईशान ईश्वराय नमः। ब्रह्मणे नमः। अनंताय नमः॥ ततः संस्रवप्रासनम्।[१]

---

१. विवाहादौ क्रियायां च शालायां वास्तु पूजने।
नित्यहोमे बृषोत्सर्गे पूर्णाहुतिं न कारयेत। (प्रयोगरत्ने)

ध्रुव का अवशिष्ट घी का प्राशन कर आचमन कर के पूर्णपात्र संकल्प करे-
अद्यकृतैतद् वृषोत्सर्ग होमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूप ब्रह्म कर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदेवतममुक गोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

ब्राह्मण पूर्णपात्र लेकर ॐ 'स्वस्तीति' कहकर ब्रह्मा की ग्रन्थी खोल प्रणीता के जल का छींटा कर्मकर्ता के लगाये।
ॐ सुमित्रियान ऽ आप ऽ ओषधयः सन्तु ईशान में प्रणीता पात्र को उल्टा कर देवे- **ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टियंचवयंद्विष्मः॥ वर्हिहोम॥** जिस क्रम से कुशायें विछाई थी उसी क्रम से उठाकर घी में भिगोकर अग्नि में डाल दें- **ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत ऽइमं देव यज्ञꣳस्वाहा वाते धाः स्वाहा॥** कर्मकर्ता हवन करने वाले ब्राह्मणों को सुवर्ण वस्त्र दक्षिणा से सन्तुष्ट करे।
ब्राह्मण रुद्राध्याय **'नमस्ते रुद्रमन्यव'** से प्रारंभ कर **षां जम्भेदध्मः॥** तक पाठ करे।

॥ वृषवत्सरी पूजन ॥

अग्नि के उत्तर में वृष, वत्सी को रख **'मानस्तोके तनयेमान ऽ आयुषि मा नो गोषु मानो ऽअश्वेषुरीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा**

हवामहे॥ मंत्र से दाहिने पीठ पर वृष के रक्त चन्दन से त्रिशूल वांये पीठ पर चक्र बनावे। लोहार को बुलाकर तप्त शूल से वृषभ के निशान लगवादे। दोनो का अभिषेक निम्न मंत्रों से करें-

ॐ हिरण्यवर्णा शुचयः पावकायासु जातः कश्यपो या स्विन्द्रः। अग्नियागर्भ दधिरे विश्वरूपास्ता न आपः शꣳस्योना भवतु॥१॥ ॐ यासां राजा वरुणो यातिमध्ये सत्यानृते अवपश्यन् जनानाम्। मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपशꣳस्योना भवन्तु॥२॥ यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्ष्यं या अन्तरिक्षे बहुधाभवति। याः पृथिवीं पयः सोदति शुक्रास्ता न आपः शꣳस्योना भवन्तु॥३॥ ॐ शिवेनमा चक्षुषा पश्यतापः शिवयातन्वो पस्पृशत त्वचं मे। सर्वाऽअग्नीꣳरप्सुषदो हुवे बो मयि वर्चो बलमोजोनिधत॥४॥ ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तुपीतये। शंय्योराभिस्रवन्तुनः॥

वृषवत्सरी को घंटी घुंघरू माला से सजाकर पूजन कर ले। गठजोड़ा कर मौली बाधे तिलक कर दें ग्रास या घास देकर ७ बार परिक्रमा करते हुए निम्न मंत्र बोले-

ॐ अश्वस्तुपरो गो मृगस्ते प्रजापत्याः कृष्णग्रीव आग्नेयौ रराटेपुरस्तात् सारस्वती मेष्यधस्ताद्धन्वोराश्विनावधोरामो बाह्वोः सोमा पौष्णं श्यामो नाभ्यां सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रै लोभशसक्थौ सक्थोर्वायव्यः श्वेतः पुच्छ इन्द्राय स्वपश्याय वेहद्वैष्णवो वामनः।

वत्सी के कान में निम्न मंत्र बोले- **तीक्ष्ण श्रृंगायै विद्महे वेदपादाय धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात्॥**

वृष के कान में भी निम्न मंत्र बोलें- **तीक्ष्ण श्रृंगायै विद्महे वेदपादाय धीमहि तन्नो वृषः प्रचोदयात्॥**

वृष को वत्सी देते हुए यह मंत्र कहे- **अय हिवो मयादतः पत्न्यः सर्व मनोरमा॥**

कर्मकर्ता उत्तर मुंह कर हाथ में तिल जौ तुलसी दूध एकत्र कर बछड़े बछड़ी की पूंछ हाथ में लेकर तर्पण करे-**ॐ समुद्रोऽसि नभस्वामाद्रदानुः शं भूर्मयो भूरभि या वाहि स्वाहा। मारुतोऽसि मरुतां गणः शं भूर्मयो भूरभिमा वाहि स्वाहा॥ अवस्यूरसि दुवस्वांद्दं रश्मिभिः। ताभिर्नो अद्य सर्वामी रुचे जनाय न स्कृधि॥** पुनः पुरुष सूक्त के 18 मंत्रों से तर्पण कर अपसव्य हो तिल, कुश, जल हाथ में ले पुनः पूछों का पकड़ कर निम्न मंत्रों से तर्पण करें। **ॐ स्वधा पितृभ्यो मातृभ्यो बन्धुभ्यश्चापि तृप्तये। मातृपक्षाश्च ये केचिद् ये चान्ये पितृपक्षजा॥ गुरुश्वसुर बन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवा। ये प्रेतभावमापन्ना ये चान्ये श्राद्धवर्जिताः॥ बृषोत्सर्गेण ते सर्वे लभतां प्रीतिमुन्त्तमाम्॥**

पुनः अपसव्य हो तिल जल लेकर पूंछों को पकड़ कर कहे- **अद्यामुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्यर्थ वैतरणी तरणार्थ उत्तमलोक प्राप्तर्थं वृषवत्सरांपुच्छे**

मद्दतं तर्पणं तवोपतिष्ठताम्।। सव्य हो वृष वत्सी की कर्म कर्ता प्रार्थना करे-

धर्मस्त्वं बृषरूपेण ब्रह्मणा निर्मिता पुरा।
तवोत्सर्ग प्रभावेण प्रेतोद्धारो भवार्णवात्।।

वृष उत्सर्जन के लिए तिलजल हाथ में लेकर संकल्प करे- **अद्येत्यादि० अमुकगोत्रस्य अमुक नाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तिपूर्वकाक्षय उत्तमलोक प्राप्तये इमं वृष यथाशक्तिलंकृत वत्सरी सहित रुद्र देवता अहमुसृजामि।।** ईशान दिशा में वृष छोड़कर पुनः प्रार्थना वाक्य कहे-

नमो वृषभ देवेश भूतर्षि पितृपोषक।
त्वयिमुक्तेऽ क्षयालोकाः प्रेतासन्तु निरामयः।।

एक आचमन जल छोड़ दे- **अनेन वृषोत्सर्गकर्मणा कृतेन अमुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्तिः। असदगति विनाशः। सद्गति प्राप्तिः।।**

।। इति बृषोत्सर्ग ।।

विष्णु श्राद्ध प्रयोग

(मध्यमषोडशी)

ग्यारहवें दिन कर्मकर्ता स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहनकर श्राद्ध भूमि को गोबर से लीप कर मध्यमषोडशी के लिए वेदी का निर्माण कर तिल के तेल से दीपक जलाकर पूर्व मुख हो कुश पवित्री धारण कर के आचमन प्राणायाम कर ले। कर्मपात्र में जलभर गन्ध, पुष्प, जौ, तीन कुशा उसमें डालकर बांये हाथ में जल लेकर दाहिनें हाथ की अनामिका अंगुष्ठ से उसको हिलावे।

मंत्र- ॐ अपवित्रः पवित्रोर्वा सर्वावस्थां ऽ गतोपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षः सवाह्याभ्यन्तर शुचि।।

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।। श्राद्ध सामग्री के ऊपर जल के छीटे देकर शेष जल से अपने शरीर में छींटे देवे। अब भूमि का पूजन करे- **श्राद्धस्थल भूम्यै नमः।। ॐ भगवत्यै गयायैनमः।। ॐ भगवते गदाधरायै नमः।।** प्रणाम कर तीन कुश जल यव हाथ में लेकर संकल्प करें- **अद्येत्यादि० अमुकगोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्यर्थं असद्गति विनाशार्थं विष्णुलोक प्राप्त्यर्थं एकादश विष्णु श्राद्धं विष्णावादि विष्णु पर्यन्तम् पिण्डदान विधिनावाहं करिष्ये।** श्राद्ध स्थल में संकल्प छोड़कर पितृगायत्री का तीन बार स्मरण करे- **ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगगिभ्य एवच। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः।**

सरसों लेकर पूर्वादि दिशाओं में डाले-

नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम।
इदं श्राद्धं ऋषिकेश रक्षतां सर्वतो दिशः॥१॥
पूर्वेनारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे।
प्रद्युम्न पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे॥२॥
एशान्यां रक्षतां विष्णुराग्नेय्यां च त्रिविक्रमः।
नैर्ऋत्यां पद्मनाभस्तु वायव्यां माधवो ऽवतु॥
ऊर्ध्वं गोवर्द्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः॥३॥

सरसों दिशाओं में डालकर एक पात्र में जल डाल कर कुशा से हिला देवें-

ॐ य द्देवा देव हेडनं देवासश्च कृमावयम्। अग्नि-र्मातस्मादेन सो विश्वान् मुंचन्त्वꣳहसः॥९॥ यदि दिवायदिनक्त मेनांसि चकृमा वयम्। वायुर्मातस्मादेनसो-विश्वान् मुंचन्तुꣳहसः॥२॥ यदि जाग्रद्यदि स्वप्नऽ एनांसिचकृमावयम्। सूर्यामातस्मादेनसो विश्वान् मुंचन्तुꣳहसः॥३॥

इस जल के छींटे पूजन सामग्री पाक सामग्री श्राद्ध स्थल पर लगा देवे। ग्यारह कुशाओं पर गांठ देकर वेदी के ऊपर खड़े कर दें। उन पर देवताओं को क्रम से स्थापित कर दे। प्रेत की पूजा स्थापना के समय अपसव्य[1] से तथा अन्य का सव्य होकर पूजन करें-

---

१. निपात्य दक्षिण जानुं देवान् परिचरेत्सदा।
पितृणां परिचर्या तु वामजानु निपातनम्॥ (ध०सि०)

प्रथम चटे विष्णुमुपतिष्ठताम् इदं कुशासनस्ते नमः।
द्वितीये शिवंमुपतिष्ठताम्। इदं कुशासनस्ते नमः॥
तृतीये यममुपतिष्ठताम्। इदं कुशासनस्ते नमः॥
चतुर्थे सोमराजमुपतिष्ठताम्। इदं कुशासनस्ते नमः॥
पंचमे हव्यवाहनमुपतिष्ठताम्। इदं कुशासनस्ते नमः॥
षष्ठे कव्यवाहनमुपतिष्ठताम्। इदं कुशासनस्ते नमः॥
सप्तमे मृत्युमुपतिष्ठताम्। इदं कुशासनस्ते नमः॥
अष्टमे रुद्रमुपतिष्ठताम्। इदं कुशासनस्ते नमः॥
नवमे पुरुषमुपतिष्ठताम्। इदं कुशासनस्ते नमः॥
दशमे प्रेतमुपतिष्ठताम्। इदं कुशासनस्ते नमः॥
एकादशो विष्णुमुपतिष्ठताम्। इदं कुशासनस्ते नमः॥

अब दोनें में जल लेकर पाद्य अर्पण करे-

ॐ शन्नोदेविरभिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः॥ विष्णु से विष्णु तक पाद्य समर्पण कर दें। अर्घ्य-ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् सूभूमि ७ँसर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्॥ विष्णु से विष्णु तक अर्घ्य चढ़ा देवे। अर्घ्य पात्र न्युब्जिकरणम्। अर्ध्यपात्र उलट दें। विष्णवादि विष्णुपर्येन्तेभ्यो गंन्ध (चन्दन) विष्णवादि विष्णु पर्येन्तेभ्यो यवाच्छादनम् (जौ) माल्यार्थे पुष्पाणि (फूल) तुलसी दलं (तुलसी पत्ता) पूगींफलं (सुपारी) यज्ञोपवीतं (जनेऊं) अनुलेपानार्थे चन्दनम् (चन्दन) एषवो धूपः (धूप दिखायें) ज्योतिर्दीपः

(दीपक दिखादें) **शेषोपचारार्थे** यवकुशा (जो कुशा चढ़ा दें) पुनः पिण्ड के लिए कुश आसन रख दें। एकादश विष्णु श्राद्ध[१] के लिए जो चावल पकाये हैं उनको जल छींटा देकर संकल्प करें-

अद्येत्यादि० अमुक मासे अमुक पक्षे तिथौ अमुकगोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व निवृर्त्यर्थं असद्‌गतिविनाशार्थं विष्णु लोक प्राप्तर्थं च एकादशः विष्णुश्राद्ध विष्णवादि विष्णु पर्यन्तानाम् एकोदिष्ट विधिनां एकतंत्रेणाहं करिष्ये।

पिण्ड निर्माण कर क्रम से अंगूठे की तरफ से तिल कुश जल सहित पिण्ड कुश आसन के ऊपर रखते जाये।

प्रथम विष्णवे एष ते पिण्डः॥१॥
द्वितीये शिवाय एष ते पिण्डः॥२॥
तृतीये यमाय एष ते पिण्डः॥३॥
चतुर्थे सोमाय एष ते पिण्डः॥४॥
पंचमे हव्यवाहाय एष ते पिण्डः॥५॥
षष्ठे कव्यवाहाय एष ते पिण्डः॥६॥
सप्तमे मृत्यवे एष ते पिण्डः॥७॥
अष्टमे रुद्राय एष ते पिण्डः॥८॥
नवमे पुरुषाय एष ते पिण्डः॥९॥

---

१. विष्णु शिवो यमश्चैव सोमश्च हव्यवाहनः।
कव्यश्च मृत्यु रुद्राश्च पुरुषश्च क्रमादिमान्॥
प्रेतस्तु दशमः प्रोक्तो विष्णुरेकादशः स्मृत।
एवमेकादशः प्रोक्ता श्राद्धेऽस्मिन्नधिकारिणः॥

दशमे प्रेताय एष ते पिण्डः॥१०॥

एकादशो विष्णवे एष ते पिण्डः॥११॥

अब पिण्ड का पूजन कर ले ध्यान रहे कि दशवें प्रेत पिण्ड का पूजन अपसव्य तथा चन्दन तर्जनी से लगायें बाकी विष्णु से विष्णु पिण्ड का पूजन सव्य होकर करे-

पिण्डे त्रिगुण सूत्रः ऊर्ण सूत्र च उपतिष्ठताम् पिण्डे वस्त्रं उपतिष्ठताम् वस्त्र चढ़ावे।

पिण्डे गन्धं उपतिष्ठताम् चन्दन चढ़ावे।

पिण्डे यवाक्षतौ उपतिष्ठताम् जौ अक्षत चढ़ावे।

पिण्डे पुष्पमुपतिष्ठताम् पुष्प चढ़ावे।

पिण्डे तुलसीपत्रं उपतिष्ठताम् तुलसी पत्र चढ़ावे।

पिण्डे धूपः उपतिष्ठताम् धूप दिखायें।

पिण्डे दीपः उपतिष्ठाम् दीप दिखायें।

पिण्डे नैवेद्य उपतिष्ठताम् नैवेद्य अर्पण करें।

पिण्डे फल उपतिष्ठताम् फल चढ़ा दें।

पिण्डे पूगीफलं ताम्बूलं उपतिष्ठताम् पान सुपारी दें।

पिण्डे दक्षिणा उपतिष्ठताम् दक्षिणा चढ़ा दे।

दूध जल दक्षिणा एक पात्र में रख पिण्डों के ऊपर जल दूग्ध धारा दें-

प्रथमे विष्णुपिण्डे पयोधारा जलधाराचोपतिष्ठतु॥

द्वितीये शिवपिण्डे पयोधारा जलधाराचोपतिष्ठतु॥

तृतीये यमपिण्डे पयोधारा जलधाराचोपतिष्ठतु॥
चतुर्थे सोमपिण्डे पयोधारा जलधाराचोपतिष्ठतु॥
पंचमे हव्यवाहपिण्डे पयोधारा जलधाराचोपतिष्ठतु॥
षष्ठे कव्यवाहपिण्डे पयोधारा जलधाराचोपतिष्ठतु॥
सप्तमे मृत्युपिण्डे पयोधारा जलधाराचोपतिष्ठतु॥
अष्टमे रुद्रपिण्डे पयोधारा जलधाराचोपतिष्ठतु॥
नवमे पुरुषपिण्डे पयोधारा जलधाराचोपतिष्ठतु॥
दशमे प्रेतपिण्डे पयोधारा जलधाराचोपतिष्ठतु॥
एकादशे विष्णुपिण्डे पयोधारा जलधाराचोपतिष्ठतु॥

कर्मकर्ता दक्षिणा हाथ में रख तिलकुश जल लेकर संकल्प करें- **देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य एकादशाहे पितृपक्ति प्रवेशार्थं कृतानां मध्यमशोडषश्राद्धाना सांगता सिद्ध्यर्थमिमा रजत दक्षिणा ब्राह्मणेभ्यो मयादीयते तवोपतिष्ठताम्॥**

दक्षिणा देकर प्रार्थना करे-

अनादि निधनो देव शंख चक्रगदाधरः।
अक्षयः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्ष प्रदोभव॥१॥
नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त जनार्दन।
अनेन तर्पणे नाथ प्रेतमोक्ष प्रदोभव॥२॥

॥ पंचदेव श्राद्ध ॥

कर्मकर्ता पांच पिण्ड बना लेवे पांच कुशाओं पर गांठ देकर उनको बेदी के ऊपर खड़ा कर दे। पिण्ड के लिए बेदी पर पांच कुश आसन भी रख दें। जो कुशा खड़े हैं उन पर देवताओं को स्थापित कर दे-

प्रथम चटे ब्रह्मं उपतिष्ठताम्।
द्वितीयं विष्णुं उपतिष्ठताम्।
तृतीयं रुद्रं उपतिष्ठताम्।
चतुर्थं यम उपनिष्ठताम्।
पंचम तत्पुरुष उपतिष्ठताम्।

दोनें में जल भर कर पाद्य अर्पण करे- **ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तुनः॥ अर्घ्य देवे- ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमिꣳसर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्॥ अर्घ्यपात्र न्युब्जिकरणम्।** अर्घ्यपात्र को उलट दें।

ब्रह्मादि तत्पुरुषेभ्यो गन्धं (चन्दन) ब्रह्मादितत्पुरुषेभ्यो यवाच्छादनम् (जौ) माल्यार्थे पुष्पाणि (पुष्प) तुलसी दलं (तुलसी पत्ते) पूगीफलं (सुपारी) आच्छादनार्थे वस्त्रं (श्वेतवस्त्र) एषवो धूपः (धूप) एषवो ज्योर्तिदीपः (दीपक) शेषोपचारार्थे यव कुशां (जौ व क़ुशा चढ़ा दें) पके हुए अन्न को पत्ते के ऊपर रख अर्पण कर दें-
ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते

अमृतं जुहोमि।। पांच पिण्ड बनाकर क्रम से कुशा के ऊपर रखते जाये। पहले जल छोड़े-

प्रथमं ब्रह्मन् अवनेनिक्ष्व।।१।।
द्वितीयं विष्णो अवनेनिक्ष्व।।२।।
तृतीयं रुद्र अवनेनिक्ष्व।।३।।
चतुर्थं यम अवनेनिक्ष्व।।४।।
पंचमं तत्पुरुष अवनेनिक्ष्व।।५।।

जल डालकर एक एक पिण्ड तिल कुश जल के साथ लेकर कुश आसन के ऊपर रखते जाये-

प्रथमं ब्रह्मणे एष ते पिण्डः।।१।।
द्वितीयं विष्णवे एष ते पिण्डः।।२।।
तृतीयं रुद्राय एष ते पिण्डः।।३।।
चतुर्थं यमाय एष ते पिण्डः।।४।।
पंचमं तत्पुरुषाय एष ते पिण्डः।।५।।

पिण्ड देकर निम्न वाक्य बोलते हुए पूजन सामग्री चढ़ाये-

पिण्डे जलं मुपतिष्ठतु जल चढ़ा दें।
पिण्डे वस्त्रं उपतिष्ठतु वस्त्र चढ़ाये।
पिण्डे कार्पास सूत्रं उपतिष्ठतु सूत्र चढ़ाये।
पिण्डे ऊर्णं सूत्रं उपतिष्ठतु ऊन का सूत्र चढ़ाये।
पिण्डे गन्धं उपतिष्ठतु गन्ध चढ़ाये।
पिण्डे यवाक्षतं उपतिष्ठतु जौ अक्षत चढ़ाये।

पिण्डे पुष्प उपतिष्ठतु फूल चढ़ावे।

पिण्डे तुलसी दलं उपतिष्ठतु तुलसी पत्ते चढ़ावे।

पिण्डे धूपः उपतिष्ठतु धूप दिखायें।

पिण्डे दीपः उपतिष्ठतु दीप दिखायें।

पिण्डे नैवेद्य उपतिष्ठतु नैवेद्य अर्पण करें।

पिण्डे पूगीफलं ताम्बूलं उपतिष्ठतु सुपारीपान चढ़ाये।

पिण्डे दक्षिणा उपतिष्ठतु दक्षिणा चढ़ाये।

पिण्डानामर्चन विधेः परिपूर्णता॥

ताम्र पात्र में जल, दूध, तिल, तुलसी, चन्दन, सोना, या चांदी, जौ डालकर प्रत्येक पिण्ड के ऊपर मंत्र द्वारा जलधारा देवे-

१- ब्रह्म पिण्ड पर- ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतः सुरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

२- विष्णु पिण्ड पर- ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥

३- रुद्र पिण्ड पर- ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

४- यम पिण्ड पर - ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मपित्रे॥

५- तत्पुरुष पिण्ड पर- ॐ प्रेताजयतानर इन्द्रोवः शर्म यच्छतु। उग्रा वः सन्तु बाहवोऽ नाधृष्या यथा

सथ।। कर्मकर्ता जलधारा देकर दक्षिणा तिलकुशजल के साथ लेकर संकल्प करे- **देशकालौ संकीर्त्य अमुक-गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य एकादशाहे कृतः पंचश्राद्धैः सांगता सिद्ध्यर्थमिमा रजत दक्षिणा ब्रह्मणेभ्यो मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।।**

दक्षिणा देकर प्रार्थना करें-

अनादि निधनो देव शंख चक्र गदाधरः।
अक्षय पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्ष प्रदोभव।।१।।
अतसी पुष्प संकाश पीतवाससमुच्युतम।
ये नमस्यन्ति गोविन्द न तेषां विद्यते भयम्।।२।।
कृष्ण कृष्ण कृपालोत्वं अगतिनां गतिर्भव।
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम।।३।।
नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त जनार्दन।
अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव।।४।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूणतां याति सद्योवन्दे तमच्युतम्।।५।।

कर्मकर्ता मध्यम षोडशी के ११+५ पिण्डों को उठाकर जल में विसर्जन कर दें, कुशाओं की गांठ खोल कर स्नान कर लें।

।। इति मध्यम षोडशी।।

॥ उत्तम षोडशी[1] ॥

यह कर्म पन्द्रहवे दिन से लेकर वार्षिक श्राद्ध तक का है परन्तु मनुष्य वर्ष भर के बन्धन को नहीं कर सकता, अथवा मनुष्य की अनेक प्रकार की परेशानियों को देखते हुए यह श्राद्ध एकादश दिन को करना ही श्रेष्ठ है।

कर्मकर्ता श्राद्ध के लिए भूमि साफ कर पूर्व में विष्णु भगवान की पूजा के लिए वेदी बनाकर उसके ऊपर तीन कुशाओं में गांठ लगाकर विष्णु भगवान की कल्पना करे घी का दीपक भी जला देवे। एक बड़ी वेदी बनाकर १६ चट स्थापित करे प्रेत के लिए वेदी बनाकर (दक्षिण में) तेल का दीपक भी जला देवे पिण्ड के लिए खीर की व्यवस्था भी कर पूजन, सामग्री रख श्राद्ध कर्म प्रारम्भ करे-

आचमन प्रणायम कर बायें हाथ में जल ले दक्षिण व बांये हाथों में पवित्री पहन कर अनामिका अंगुठा से जल अभिमंत्रित करे-

अपवित्र पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्ष स बाह्याभ्यन्तर शुचि॥

आसन, शिखा में कुशा रख कर्मकर्ता बांये अंट में कुशा सुपारी पैसा रख भूमि का पूजन करें-

---

[1] तीन षोडशी अवश्य करे-
यावन्न दीयति श्राद्धं षोडशत्रय संज्ञकम्॥
स्वदत्तं परदत्तं च तावन्नैवोपतिष्ठते॥

श्राद्धस्थल भूम्यै नमः। भगवते गयायै नमः।
भगवते गदाधराय नमः।

तिल सरसों दिशाओं में बिखेर दे-

ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम।
इदं श्राद्धं ऋषिकेश रक्षतां सर्वतो दिशः॥

दीपक को भी गंध अक्षत-चढ़ाकर ब्राह्मण का पूजन भी कर ले-

नमोस्त्वनंताय सहस्त्र मूर्त्यै सहस्त्रपादाक्षसिरोरुवाहवे सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय सस्वते सहस्त्रकोटीयुग धारणे नमः॥

ब्राह्मण भी कर्मकर्ता को तिलक कर दे।

कर्मकर्ता अपसव्य हो संकल्प करे-

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनामप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तये सद्गति प्राप्तये अक्षयस्वर्गलोक गमनकामनयाः षोडश श्राद्धान्तर्गत पंचदशदिवसीयाद्य श्राद्धमारभ्य वार्षिक श्राद्ध पर्यन्तं षोडशाहश्राद्ध महं करिष्ये।

सव्य हो पूर्व मुंह कर पितृगायत्री का स्मरण तीन बार करे-

देवताभ्यपितृभ्यश्च महायोगीभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

विष्णु भगवान का पूजन कर लेवें-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥

भगवान विष्णु को गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा चढ़ा देवे। दक्षिण में प्रेत वेदी के ऊपर कुश रख प्रेत का आवाहन भी कर लें।

अवाहान

इहलोकं परित्यज्य गतोऽसि परमांगतिम्।
मनसावायु रूपेण चटेत्वाहं निमंत्रये।।

प्रेत का पूजन अपसव्य होकर कर प्रार्थना करे-

अनादि निधनो देव शंखचक्र गदाधरः।
अक्षयः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदोभवः।।

अब कर्मकर्ता किसी ताम्र पात्र में जल डालकर दूध कुशा गेरकर कुशा से उन्हें हिलाता जाये।

मंत्र

ॐ यद्देवा देव हेडनं देवासश्च कृमावयम्।
आग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुंचन्त्वꣳहसः।।१।।
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनांꣳसिचकृमा वयम्।
वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुंचन्त्वꣳहसः।।२।।
ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनांसि चकृमा वयम्।
सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुंचत्वꣳहसः।।३।।

सब श्राद्ध सामग्री पर कुशा से जल के छींटे देवें-

स्वानादि दुष्ट दृष्टि निपातात् दूषितं पाकादि
पूतंभवत्वियुक्त्वा तेन पाकं प्रोक्षयेत्।।

16 टुकड़े कुशा के आसन हेतु हाथ में रख संकल्प करें-

ॐ अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्ट लोकप्राप्तये उत्तम षोडशश्राद्धान्तर्गत एकादशाह श्राद्धे इमान्यासनानि ते मया दीयन्ते तानि तवोपतिष्ठताम्॥

कुश तिल जल के वेदी के ऊपर आसन के लिए छोड़ कुश आसनों को ऊपर तिल भी बिखेर दे-

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः॥

१६ पत्तो के ऊपर जल रख अर्घ्य बना देवे-

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्त्रवन्तुनः॥ पत्ते के जल में तिल कुश मिलाकर संकल्प कहे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये उत्तम लोकावाप्तये एकादश श्राद्धे एषोऽर्घ्यस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥

अंगूठे की तरफ से चटों के ऊपर जलधारा देवे। अर्घ्य पात्रों को उलट दें। जो पहले १६ कुश चट रखे थे उनका पूजन कर दें- चटो पर गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, नैवेद्य, दीपक, ताम्बूल, अंगूठे की तरफ से चढ़ाकर संकल्प करें-

अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्ट-लोकावाप्तये एकादशाह श्राद्धादारभ्य द्वादश मासिक श्राद्धपर्यन्तं एकादशाह श्राद्धे मया गन्धादि दीयते तवोपतिष्ठताम्॥ थोड़ा अन्न सब चटों के पास रख जल

छोड़कर संकल्प करें-**अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्टलोकावाप्तये एकादशाह-श्राद्धादारभ्य द्वादशमासिक श्राद्धपर्यन्तं एकादशाह श्राद्वे इदमन्नोदकं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥**

॥ पिण्ड निर्माण पूजन ॥

पिण्ड के आटे (या खीर) में घी, शहद, तिल मिलाकर विल्वफल के समान 16 पिण्ड बनाकर प्रथम पिण्ड (पाक्षिक) को अपसव्य हो (सब पिण्ड अपसव्य हो कर देने हैं।) तिल, जल, कुशा, हाथ में, रख संकल्प करें-

अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य आद्यश्राद्धे प्रथम पक्ष निमित्त एषते पिण्डो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥

पिण्ड को अंगूठे की तरफ से वेदी पर आसन के ऊपर रख दूसरा पिण्ड लेवे- (तिल, कुश, जौ, जल, सब पिण्डों के साथ लें)

अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रथम मासिक श्राद्ध निमित्तः एष द्वितीयः पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्॥

वेदी के कुशासन में पूर्ववत् रख तीसरा पिण्ड तिल, जौ, कुश, जल के साथ लेकर संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य त्रिपाक्षिकश्राद्ध निमित्त एष ते पिडस्ते मयादीयते तवोपतिष्ठताम्॥

पिण्ड को कुश आसन के ऊपर रख, जौ, तिल, जल, कुश के साथ चौथा पिण्ड हाथ में रख संकल्प

करें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य द्वितीय मासिक श्राद्ध निमित्त एषते पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पिण्ड को वेदी के आसन पर रख, जौ, तिलकुश, जल सहित पांचवां पिण्ड हाथ में रख संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य तृतीय मासिक श्राद्ध निमित्त एषते पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पांचवें पिण्ड को वेदी के कुश आसन पर रख, छटवां पिण्ड, जौ, तिलकुश जल सहित हाथ में रख संकल्प करें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य चतुर्थ मासिक श्राद्ध निमित्त एषते पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पूर्ववत् छटे आसन पर रख, जौ, तिल, कुश, जल सहित सातवां पिण्ड हाथ में रख संकल्प करें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य पंचम मासिक श्राद्ध निमित्त एषते पिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पिण्ड को पूर्ववत् सातवें आसन पर रख आठवां पिण्ड जौ, तिल, कुश, जल के साथ हाथ में रख संकल्प करें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य ऊनषाणमासिक श्राद्ध निमित्त एषते पिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

आठवें पिण्ड को वेदी के आसन के ऊपर पूर्ववत् रख, नवां पिण्ड जौ, तिल, कुश, जल सहित हाथ में रख

संकल्प करें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य षाण्मासिक श्राद्ध निमित्त एषते पिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

नवां पिण्ड पूर्ववत् आसन पर रख, तिल, कुश, जल जौ, सहित दशवां पिण्ड हाथ में रख संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सप्तम मासिक श्राद्ध निमित्त एषते पिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

दसवां पिण्ड आसन के ऊपर पूर्ववत्, रख, ग्याहवां पिण्ड जौ, तिल, कुश, जल सहित हाथ में रख संकल्प करें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य अष्टममासिक श्राद्ध निमित्त एषते पिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पिण्ड को आसन के ऊपर पूर्ववत् रख बारहवां पिण्ड जौ, तिल, जल कुश के साथ हाथ में रख संकल्प करें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य नवममासिक श्राद्ध निमित्त एषते पिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

बारहवें पिण्ड को आसन के ऊपर रख तेरहवां पिण्ड जौ, तिल, जल, कुशा के साथ हाथ में रख संकल्प करें-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य दशममासिक श्राद्ध

निमित्त एषते पिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पूर्ववत् तेरहवें पिण्ड को आसन के ऊपर रख, चौदहवां पिण्ड तिल, जौ, जल, कुशा के साथ हाथ में रख संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य एकादशमासिक श्राद्ध निमित्त एषते पिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पिण्ड को पूर्ववत् आसन के ऊपर रख, पन्द्रहवां पिण्ड तिल, जौ, जल, कुशा सहित हाथ में रख संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य उनद्वादशमासिक श्राद्ध निमित्त एषते पिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पूर्ववत् पिण्ड को आसन के ऊपर रख, सोलहवां पिण्ड तिल, जल, जौ, कुश के साथ हाथ में रख संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य द्वादश श्राद्ध निमित्त एषते पिण्डस्तेमया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

पूर्ववत् सोलहवें पिण्ड को आसन के ऊपर रख देवे। सोलह सव्य होकर अर्घ्यपात्र बनाकर निम्न मंत्र पढ़े-

ॐ या दिव्याऽ आपः पयसासंबभूवुर्य्या ऽआन्तरिक्षाऽ उत पार्थीवीर्याः हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान ऽआपः शिवा सꣳस्योनाः सुहवा भवन्तु॥

ऐसा पढ़ कर तीन कुश, जल, तिल अपसव्य हो

अर्घ्य हाथ में लेकर संकल्प करें-
अमुक गोत्रस्य अमुकप्रेतस्य आद्यादिद्वाशमासिक श्राद्धनिमित्त षोडश पिण्डेषु एषते हस्तेर्घ्यो मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

ऐसा कह अर्घ्यो को पिण्डों के ऊपर छोड़कर अर्घ्य पात्रों को उल्टा रख दें।

अवनेजन जल

एक दोनें पर तिल, जल, पुष्प, गन्ध रख संकल्प करें-**अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्ट लोक प्राप्त्यर्थं षोडशश्राद्धान्तर्गत आद्यश्राद्धमारभ्य द्वादशमासिक श्राद्ध पर्यन्तं षोडश पिण्डो परि प्रत्यवने जन जलानि मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।।** पिण्डों पर जल छोड़ दें।

पिण्ड पूजन

पिण्डेषु जलं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (जल)
पिण्डेषु वासांसि मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (वस्त्र)
पिण्डेषु कार्पासूत्रं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (सूत्र)
पिण्डेषु ऊर्णसूत्रं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (ऊर्णसूत्र)
पिण्डेषु गन्धं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (गन्ध)
पिण्डेषु यवाक्षतं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।।(यव अक्षत)
पिण्डेषु पुष्पं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (पुष्पं)
पिण्डेषु भृंगराजपत्रं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।।(भृंगराज)

पिण्डेषु तुलसीदलं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (तुलसी)
पिण्डेषु धूपं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (धूप)
पिण्डेषु दीपं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (दीपक)
पिण्डेषु नैवेद्यं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (नैवेद्य)
पिण्डेषु ताम्बूलं मयादीयतें तवोपतिष्ठताम्।। (ताम्बूल)
पिण्डेषु दक्षिणां मयादीयते तवोपतिष्ठताम्।। (दक्षिणा)

उपरोक्त सामग्री पिण्डों पर चढ़ाकर नीवी विसर्जन कर सकंल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रतेस्य आद्यादि षोडश श्राद्ध पिण्डेषु यद्दतंगंधाद्यर्चनं तवोपतिष्ठताम्।।

ऐसा कह कर जल छोड़ दें। पुनः एक पत्ते पर जल रखें। **ॐ शिवा आपः सन्तु** पुष्प रखे- **सौमनस्य मस्तु।।** यव, तिल रखे- **अक्षतं चारिष्टं चास्तु।।** तिल, जल, कुशतीन हाथ में रख संकल्प करे-

ॐ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य आद्यश्राद्धे यद्दत्तमन्न-पानादिकं तदुपतिष्ठताम्।। ऐसा कहकर पत्ते के जल को पिण्डों पर छोड़ दें। कर्मकर्ता सव्य हो आचमन लेकर दक्षिणा संकल्प करें-

अमुक गोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये कृतैतदाद्यादिद्वादशमासिकान्तषोडश श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धयर्थं इदं रजतं चन्द्रदैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणा त्वेन दातुमहमुत्सृजे।। ब्राह्मण को

दक्षिणा देकर प्रार्थना करे-

अनादिनिधनोदेवः शंखचक्रगदाधरः।
अक्षयः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्ष प्रदोभव॥१॥
अतसी पुष्पसंकाशं पीतवास समच्युतम्।
येनमस्यन्तिगोवन्द न तेषां विद्यते भयम्॥२॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्ण स्यादिति श्रुतिः॥३॥

अपसव्य होकर दीपक बुझा देवें। देवता विसर्जन कर पिण्डों, चटो को जल में छोड़ दें॥

॥ अश्वत्थ पूजन ॥

पीपल के वृक्ष के पास जाकर संकल्प लेवे-

अद्येत्यादिमुकगोत्रोऽ मुक शर्माहं सपरिवारस्य ममोत्तरणशुभफल प्राप्तर्थं तथाऽ मुकगोत्रस्यामुकशर्मणोऽस्मत पितुरऽक्षय तृप्ति कामनाय विष्णु स्वरूपस्य अश्वत्थस्य पूजनं षष्ट्यधिक शतत्रय संख्याक जलकुम्भै अभिषेचनं च करिष्ये॥

अश्वत्थ में विष्णु भगवान का पुष्प लेकर ध्यान करें-

एकादशात्मक रुद्रोऽसि वसूनांच शिरोमणिः।
नारायणोऽसिदेवानां वृक्षराज नमोऽस्तु ते॥

पुष्प अर्पण कर तीन सूत के धागे से वेष्ठित कर तीन सौ साठ दन्त धावन देकर तीन सौ साठ बार पीपल

को जल प्रदान कर गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य, दक्षिणा, अर्पण कर (पूजन पुरुष सूक्त से भी कर सकते हैं) प्रार्थना करें-

यं दृष्ट्वा मुच्यते रोगैः स्पृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते।
यदाश्रयाचिरंजीवी तमश्वत्थं नमाम्यहम्॥

॥ सपिण्डन श्राद्ध ॥

कलियुग में धर्म की अनित्यता, पुरुष की आयु कम होने से, शरीर के स्थिर न होने से विष्णु भगवान ने धर्म शास्त्र के अनुसार चारों वर्णों को बारहवें दिन सपिंण्डन[1] कहा है। द्वादशाह के दिन प्रातः स्नानादि नित्यक्रियाकर मध्याह्न में कर्मकर्ता श्वेतवस्त्र धारण कर श्राद्ध भूमी को गोबर से लीपकर कर्मपात्र को जल से भर उसमें गन्ध तिल पुष्प डालकर कुशा से हिला देवे-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

अपने शरीर तथा श्राद्धवस्तु को छींटा देवे-

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥

श्राद्ध भूमि का पूजन कर लेवे-

ॐ भगवत्यैगयायै नमः॥ ॐ भगवत्यै गदाधराय नमः॥
ॐ श्राद्धस्थल भूम्यै नमः॥

---

१. यत्फलं सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु यत्फलम्।
तत्फलं स मवाप्नोति द्वादशाहे सपिण्डनात्॥ (ग.पु.)

तीन कुश, तिल, जल हाथ में लेकर कर्मकर्ता संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तये सद्गति प्राप्त्यर्थे सपिण्डीकरणश्राद्धमंहकरिष्ये॥

पितृगायत्री स्मरण तीन बार करें-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्यएव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

अपसव्य होकर दिशाओं में यव बिखेर दें-

ॐ नमो नमस्तेगोविन्द पुराणपुरुषोत्तम।
इदंश्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशः॥

कर्मकर्ता बायें कमर भाग में सुपारी, कुशा, पैसा अंट में दबा ले, एक कुशा आसन के लिए तथा एक कुशा शिखा में रख बायें हाथ में तीन कुशा तथा दांयें हाथ में दो कुशा की पवित्री पहन कर-

एक दोने में जल रख कुशा से हिला लेवें-

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्।
अग्निर्मातस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥१॥
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसिचकृमा वयम्।
वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥२॥
यदिजाग्रद्यदिस्वप्न एनासि चकृमा वयम्।
सूर्यो मातस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चन्त्वꣳहसः॥३॥

जल के छीटे पाक सामग्री पूजन सामग्री पर देवें-

ॐ उदक्यादि दुष्ट दृष्टिपातात् शूद्रादि। संपर्कदोषाच्च पाकादीनां पवित्रतास्तु॥

उत्तर मुंह कर कर्मकर्ता विश्वेदेवा के लिए आसन हेतु तीन कुश, जल, तिल ले संकल्प करें-

अद्यास्मत्पितामहादित्रयश्राद्धसंबंधिनः कामकाल संज्ञकान् विश्वान्देवा नावाहयिष्ये॥ जल विश्वेदेवा वेदी में छोड़ यव बिखेर दे-

ॐ विश्वेदवा स ऽ आगत श्रुणुताम्ऽ इमॐहवम् एदंवर्हिर्निषीदत॥ ॐ यवोऽसियवयास्मद्वेषोयव यारातीः॥

विश्वेदेवा आवाहान

आगच्छतु महाभाग विश्वेदेवा महाबलाः। ये यत्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥

एक पत्ते पर कुश, जल छोड़कर निम्न मंत्र पढ़े।

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय ऽ आपोभन्तुपीतये। शंय्योरभिस्रवंतुनः॥ पत्ते पर जौ डाल दें-

ॐ यवो ऽसि यवयास्मद्वेषो यवयारातीः॥

यव डालकर चुपचाप उसमें गन्ध पुष्प तुलसीदल भी डाल दे। कुशा से अर्घ्यपात्र को अभिमंत्रित करे-

ॐ यादिव्याऽ आपः पयसासंबभूवुर्या ऽ आन्तरिक्षा ऽ उत पार्थिवीर्याः। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽ आपः शिवाः शॐस्योनाः सुहवा भवंतु॥ अर्घ्यपात्र अभिमंत्रित कर दाहिने हाथ में तिल, जल, कुश लेकर-

ॐ अद्यास्मत्पितामहादित्रयश्राद्ध संबंधिनः कामकाल संज्ञका विश्वेदेवा एषवोहस्तार्घः स्वाहानमः॥

दाहिने हाथ से देवतीर्थ द्वारा अर्घ्य विश्वेदेवा को देवे। विश्वेदेवा को वस्त्र, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य, दक्षिणा आदि चढ़ाकर तीन कुश जल यव लेकर संकल्प करें-

ॐ अद्यास्मत् पितामहादि त्रयश्राद्ध संबधिनः कामकालसंज्ञकाविश्वेदेवाः एतानि गन्धपुष्प धूपदीप तांबूलयज्ञोपवीतवासांसि वो नमः॥ अनेन पूजनेन विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्॥

पित्रेश्वरों का आवाहन तिल बिखेर कर करें। पित्रों के लिए आसन दक्षिण में, प्रेत के लिए पश्चिम में वेदी के ऊपर आसन रखे। दक्षिण मुंह कर बायां घुटना मोड़ अपसव्य हो पत्ते पर दो कुश रख संकल्प बोले-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरण श्राद्धे इदमासनमुपतिष्ठताम्॥

प्रेत के लिए आसन रख पितरों के लिए भी तीन आसन पत्ते पर तीन कुशा जल तिल हाथ में रख कहें-

१- अमुकगोत्रस्य पितामहस्य अमुक शर्मणः वसुरूपस्य इदमासनं स्वधानमः॥

२- अमुकगोत्रस्य प्रपितामहस्य अमुकशर्मणोः रुद्ररूपस्य इदमासनं स्वधा नमः॥

३- अमुकगोत्रस्य वृद्धप्रपितामहस्य अमुकशर्मण आदित्य स्वरूपस्य इदमासनं स्वधा नमः॥

आसनों को दक्षिण की वेदी के ऊपर रख-पितरों का आवाहन करें-

ॐ उशन्तस्त्वानिधी मह्य सन्तः समिधीमहि।
उशन्नुशत आवह पितृन हविसे अत्तवे॥

पितरों की वेदी के ऊपर तिल बिखेर दे-

ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासो अग्निष्वाता पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तौधिब्रब्रन्तुतेऽवन्त्वस्मान्॥

अब प्रेत के लिए अर्घ्य बनावे- दोने पर- **शन्नो देवीरमिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः॥** मंत्र से जल डालकर उसमें तिल, पुष्प, गन्ध भी छोड़े। अर्घ्य उठाकर तिल, जल, कुश हाथ में ले अपसव्य हो संकल्प करें-

अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये सपिण्डीकरण श्राद्ध एषते हस्ताघ्र्यो मयादीयते तवोपतिष्ठताम्॥

अर्घ्य पात्र से थोड़ा जल प्रेत कुश के ऊपर रख पितरों के लिए तीन अर्घ्य बनावे। **ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तुपीतये। शंयोरभिःस्रवन्तु नः॥** जल डालकर उसमें तिल, पुष्प, गन्ध, भी डालकर सकंल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक पितृत्व प्राप्तये पितामह प्रपितामह बृद्ध प्रपितामह। अमुक शर्मन् सपिण्डिकरण श्राद्धे एष हस्तार्घ्यस्ते स्वधा॥

ऐसा कहकर अंगूठे की तरफ से पितामह प्रपितामह बृद्धप्रपितामह को थोड़ा-थोड़ा जल दें। अब प्रेत पितरों के अर्घ्य मिलाने के लिए संकल्प कहें-

अमुकगोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्यर्थं सद्‌गति प्राप्त्यर्थं तत्पितृपितामह प्रपिताहानामर्घ्यैः सह अर्घ्यसंयोजन करिष्ये॥

प्रेत और पितरों के अर्घ्य को मिलाते हुए ये मंत्र बोले-

ये समानाः समनसोजीवा जीवेषु मामकाः।
तेषाᳬश्रीर्मयी कल्पतामस्मिन लोके शतᳬसमाः॥

प्रेत के अर्घ्यपात्र को उठाकर कुशा से पितामह प्रपितामह, बृद्धप्रपिताह के अर्घ्यपात्र में जल छोड़ दें। प्रेत के अर्घ्यपात्र को प्रेत वेदी के पास उल्टा रख पितर वेदी के पास तीनों अर्घ्य पात्र को भी उल्टा कर रख दें। एक आचमन जल छोड़ दें।

अनेन अर्घसंयोजनेनप्रेतस्य सद्‌गत्युत्तम लोक प्राप्तिः॥

॥ पिण्ड निर्माण ॥

पकाये हुए चावलों में घी, तिल, शहद, गंगाजल मिलाकर, पुरुष सूक्त का स्मरण करते हुए पिण्ड बनावें- एक प्रेतपिण्ड लम्बा, पितरों के लिए तीन पिण्ड गोल, एक पिण्ड (विकर पिण्ड) छोटा। प्रेत वेदी पर एक कुशा गांठ लगाकर प्रेत निमित्त रख, तीन कुशा इसी प्रकार पितर वेदी पर पितरों के निमित्त रख गन्धादि से

पहले प्रेत का पूजन कर संकल्प करे-**अमुक गोत्रस्य अमुक प्रेतस्य सपिण्डीकरण श्राद्धे एतानि गंध पुष्पधूपदीप ताम्बूल यज्ञोपवीत वासांसि ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।** पितरों का पूजन भी गंधादि से कर संकल्प करें।

अमुकगोत्रास्मत् पितामहप्रपितामह बृद्धप्रपितामह अमुकशर्मन् एतानिगंध पुष्पधूप दीपताम्बूल यज्ञोपवीत वासांसितुभ्यं स्वधा।।

कर्मकर्ता कहे **पितृणां अर्चनं सम्पूर्णमस्तु।।**

अब कर्मकर्ता प्रेत आसन के दक्षिण की तरफ एक पत्ता रख विकिर पिण्ड को हाथ में रख वंश में जिनकी अकाल मृत्यु हो गई हो उनकी तृप्ति के लिए पिण्ड देते हुए कहे-

अग्नि दग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धा कुले मम।।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यांतु परां गतिम्।।

अब चार पत्तों पर अर्घ्य बनावे उसमें कुशा के एक-एक टुकड़े डालकर जल भरें-

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तुपीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।। अर्घ्य पात्रों में पुष्प, गन्ध, तिल डालकर **'अर्धपात्रसंपत्तिरस्तु'** ऐसा कहे। एक अर्धपात्र उठाकर अपसव्य होकर प्रेत के लिए संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य अर्घ्येऽवनेजनं मयादीयते

तवोपतिष्ठताम्॥ ऐसा कहकर अर्घ्य को प्रेत के आसन के ऊपर रख अर्घ्य के जल को प्रेत के आसन के पास रख दे। दूसरा अर्घ्य उठाकर संकल्प बोले-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरण श्राद्ध निमित्तक अमुकगोत्र पितामह अमुकशर्म्मन्। पिण्डस्थाने कुशोपरिअर्घावनेजनं निक्षिप्यते स्वधा।

ऐसा कहकर अर्घ्य का थोड़ा जल पितामह के आसन वाले पत्ते पर छोड़ अर्घ्य को आसन के पास रख तीसरे अर्घ्य को हाथ में उठाकर संकल्प करे-

अमुक गोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिंडीकरण श्राद्धे अमुकगोत्र प्रपितामह अुकशर्मन् पिण्डस्थाने कुशोपरि अर्घावनेजनं निक्षिप्यते स्वधा॥

ऐसा कह थोड़ा अर्घ्य का जल प्रपितामह के आसन के पत्ते पर छोड़ अर्घ्य पात्र को प्रपितामह के आसन के पास रख चौथा अर्घ्य हाथ में ले संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिंडिकरण श्राद्धे अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामह अमुकशर्मन् पिण्डस्थाने कुशोपरि अर्घावनेजनं निक्षिप्यते स्वधा॥

ऐसा कह थोड़ा जल वृद्ध प्रपितामह के आसन पर छोड़ अर्घ्यपात्र को वृद्ध प्रपितामह के आसन के पास रख दें।

॥ पिण्डदान ॥

पहले प्रेत पिण्ड जो लम्बे आकार में बनाया था अपसव्य होकर कर्मकर्ता उसे उठाकर तिल कुश जल हाथ में ले संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेत सपिंडीकरण श्राद्धे एष ते पिण्डो मयादीयते तवोपतिष्ठताम्॥

ऐसा कह पिण्ड को प्रेत के पास आसन के ऊपर अंगूठे की ओर रख पितामह के लिए दूसरे पिण्ड का संकल्प करे।

अमुकगोत्र पितामह अमुकशर्मन् वसुरूप एष ते पिण्डः स्वधा नमः॥ पिण्ड को पितामह के पास आसन के, ऊपर रख तीसरा पिण्ड लेकर संकल्प करे-

अमुकगोत्र प्रपितामह अमुकशर्मन् रुद्ररूप एष ते पिण्डः स्वधानमः॥ पिण्ड को प्रपितामह के पास आसन पर रख चौथा पिण्ड ले संकल्प करे-

अमुकगोत्र वृद्धप्रपितामह अमुकशर्मन् आदित्यरूप एष ते पिण्डः स्वधा नमः॥ पिण्ड को वृद्ध प्रपितामह के पास आसन पर रख प्रेत के अर्घ्य से थोड़ा जल प्रेत के पिण्ड पर छोड़े-

अमुकगोत्र अमुकप्रेत सपिंडीकरण श्राद्धे प्रत्यवने अवनेजनं मयादीयते तवोपतिष्ठताम्॥ अब पितामह, प्रपितामह, वृद्धप्रपितामह के अर्घ्यो से भी पिण्ड पर जल छोड़े-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य सपिंडीकरण श्राद्ध निमित्त अमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह वृद्ध प्रपितामहानां पिण्डोपरि अवनेजनं तेभ्यः स्वधा नमः॥

पिण्ड देने के बाद पके हुए चावलो का शेष जो हाथ पर रहे बांये हाथ में कुशा लेकर दाहिने हाथ को साफ करे और कहे-

ॐ लेपभाग भुजः पितरस्तृप्यन्तु॥ ऐसा कहकर सव्य हो हाथ धो आचमन कर निम्न मंत्र कहे-

ॐ नमो वः पितरो रसायनमो वः पितर शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः नमो वः पितरो नमो वः गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो द्वैष्मै तद्वः पितरो वास आधत।।

अपसव्य हो कर्मकर्ता प्रेतपिण्ड का पूजन करे-

पिण्ड का पूजन गन्ध, यव अक्षत, पुष्प, तुलसीपत्र, धूप, दीपक, नैवेद्य, ताम्बूल, दक्षिणा आदि चढ़ाकर पितामह, प्रपितामह और वृद्धपितामह के पिण्डों का पूर्ववत पूजन कर कर्मकर्ता उत्तर मुंह कर प्राणायाम रीति से बांये नांक से श्वास ले दक्षिण की दिशा की तरफ श्वास छोड़ते हुए पितरों व सूर्य का ध्यान करे।

॥ पिण्ड संयोजन[१] ॥

अपसव्य हो कर्मकर्ता सुवर्ण या रजत शलाका (अभाव में कुशा) से प्रेत पिण्ड के तीन समान भाग करे तथा तिल, जल, कुश हाथ में लेकर संकल्प करे-

अमुकगोत्रस्य अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व निवृत्तिपूर्वक पितृसमप्राप्त्यर्थं वस्वादिलोक प्राप्त्यर्थं च अमुक गोत्राणां तत्पितृ पितामह प्रपितामहानांपिण्डैः सहप्रेतस्य पिण्ड संयोजनं करिष्ये॥

प्रेतपिण्ड का पहला भाग बांयें हाथ में लेकर संकल्प- **अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य प्रथमं पिण्डशकलं अमुकपितामहस्यामुकशर्मणो वसुरूपस्य पिण्डेन सह संयोजयिष्ये॥** प्रेतपिण्ड के पहले भाग के साथ पितामह के पिण्ड के साथ मिला दे-

ॐ ये समानाः समनसः पितरोयमराज्ये। तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्॥१॥ ये समानाः समनसो जीवाजीवेषु मामकाः। तेषाॐश्रीर्म्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतॐसमाः॥२॥

पिण्ड गोलकर पितामह के आसन पर रख पुनः प्रेत पिण्ड का दूसरा भाग उठाकर संकल्प बोले-

अमुक गोत्रस्य अमुकप्रेतस्य द्वितीय पिण्ड शकलं

---

१. प्रेत पिण्डं त्रिधा कृत्वा सुवर्णस्य शलाकया।
पितामहादि पिण्डेषु मेलयेत पृथक पृथक॥ (ग० पु०)

अमुक प्रपितामहस्यामुकशर्मण: रुद्ररूपस्य पिण्डेन सह संयोजयिष्ये॥ ऐसा कह ये 'समाना:०' के दोनों मंत्र कहते हुए प्रेत पिण्ड के दूसरे भाग के साथ प्रपितामह के पिण्ड को गोलाकार बनाकर प्रपितामह के आसन के ऊपर रख दे। प्रेत पिण्ड के तीसरे भाग को उठाकर संकल्प बोले-

अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य तृतीयं पिण्डशकलं अमुक वृद्धपितामहस्यामुक शर्मण: आदित्यरूपस्य पिण्डेनसह संयोजयिष्ये॥

ऐसा कह ये समाना:० के दोनों मंत्र कहते हुए प्रेतपिण्ड के तीसरे भाग के साथ वृद्ध पितामह का पिण्ड मिला के आसन के ऊपर रखे। अब शेष अर्घ्य के जल को हाथ में लेकर संकल्प-

अमुकगोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपिता-महानां पिण्डोपरि अवनेजनं तेभ्य: स्वधानम:॥

जल देकर नीवी मोचन (अंट में रखे पैसा कुशा सुपारी) पिण्डो के पास रख सव्य होकर प्रार्थना करे-

ॐ नमो व: पितरो रसायनमो व: पितर शोषाय नमो व: पितरो जीवाय नमो व्र: पितर: स्वधायै नमो व: पितरो घोराय नमो व: पितरो मन्यवे नमो व: पितर: पितरो नमो व: गृहान्न: पितरो दत्त सतो व: पितरो द्वैष्मै तद्व: पितरो वास आधत॥

पिण्डों का पूजन पुनः वस्त्रः तीन सूत्र, अक्षत, पुष्प धूप, दीपक, नैवेद्य आदि से कर कर्मकर्ता उत्तर की दिशा को मुंह कर प्राणायाम की रीति से श्वास चढ़ाकर दक्षिण की तरफ छोड़े।

भगवान विष्णु को पक्वान चढ़ावें।

ॐ नाभ्याआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्याभूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकां २ऽ अकल्पयन्॥

विश्वेदेवा को भी पकवान का भोग लगावे-

कालकाम सञ्ज्ञक विश्वेदेवानां पक्वान्ननैवेद्यं अहमुत्सृजे॥

कर्मकर्ता हाथ जोड़कर पितरों से आर्शीवाद मांगे-

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः संततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं सदास्तुनः। अन्नंचनो बहु भवेदतिथी श्चलभामहे। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन॥

अब पिण्डों पर दूध की धारा देकर पितरों को प्रणाम कर बीच के पिण्ड को हिला देवे। अब अपसव्य हो पिण्डों को उठाकर सूघं ले और पिण्डों को विसर्जन के लिए थाली में रख सव्य हो थाली को रुपये से बजा देवे।

मंत्र

ॐवाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विभा अमृता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयान्यैः॥

ब्राह्मण को दक्षिणा संकल्प-

ॐ विष्णुः ३ देशकालौ संकीर्त्य पितृअमुक गोत्रपित्रादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनां काल सज्ञकानां विश्वेषां देवानां प्रीतये कृतस्य सपिण्डीकरण श्राद्धन्तर्गत विश्वदैविककर्मणः सांगता सिद्धयर्थं साद्गुणार्थंच इमां सुवर्णदक्षिणातन्निष्क्रय द्रव्यंवा ब्रह्मणाय दास्यै॥

कर्मकर्ता ब्राह्मण को दक्षिणा[१] देकर अपसव्य से दीपक बुझा पितरों को उठाये-

ॐ उतिष्ठन्तु पितरः॥ देवताओं का विसर्जन अक्षत चढ़ाकर करे- **देवाः स्वस्थानं यान्तु॥** प्रदक्षिणा भी कर लें-

ॐ अमावाजस्य प्रसवो जगम्यादेमेद्यावा पृथिवी विश्वरूपे। आमा गन्तां पितरा मातरा वामा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्॥

प्रार्थना- प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णस्यादिति श्रुति॥

कर्मकर्ता पिण्ड वेदी को साफ कर पिण्डों को जल में डाल दे या गाय को खिला देवे।

गौ, श्वान, काक बलि

तीन पत्तो पर बने हुए आहार से ग्रास निकाल कर निम्न प्रकार दे- **गो ग्रास (सव्य)**

---

१. ब्राह्मण को सन्तुष्ट करे-

विप्रस्य वृत्तिका कर ले लक्ष धेनु फलं भवेत्।
विप्रस्य वृतिका हरणान्मरकटश्वा कपिर्भवेत्॥

सौरभेय सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृहणन्तु मे ग्रासं गावस्त्रेल्योकमातरः॥

श्वान बलि (जनेऊ मालाकार कर)

द्वौ श्वानौ श्याम शवलौ वैवश्वतकुलोद्भवौ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ॥

काकबलि (अपसव्य)

ऐन्द्रवारुण वायव्याः सौम्या वै नैर्ऋतास्तथा।
वायसाः प्रतिगृहणन्तु भूमावन्नं मयार्पितम्॥

॥ शय्यादान ॥

पलंग पर गद्‌दा चद्‌दर तकिया आदि बिछाकर शैय्या उत्तर दक्षिण रख सुन्दर ढंग से शैय्या को सजाकर मृतक को जो वस्तुयें जीवनकाल में प्रिय लगती थी उनको भी शैय्या के पास रख, धृत कुंभ, जल कुंभ, बर्तन, वस्त्र आदि रख, शैय्या के ऊपर सुवर्ण से बनी लक्ष्मी नारायण की प्रतिमा एवं शालग्राम को दूध जल से धोकर प्रतिष्ठा करे-

ॐ एतन्ते देव सवितुर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे।
तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव॥१॥
मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं

यज्ञᳪसमिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३म्प्रतिष्ठ॥

प्रतिष्ठापन कर-

नमोस्त्वनंतायसहस्त्रमूर्तये, सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटी युग धारणे नमः॥ नमः कमलनाभाय नमस्तेजलशायिने। नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते॥

लक्ष्मीनारायण को पुष्प अर्पण कर पूजन पुरुष सूक्त से कर ब्राह्मण का पूजन कर दें-

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

कर्मकर्ता ब्राह्मण के मौली बांध शय्या के ऊपर बिठाकर हाथ मे तिल, जल कुशा रख यह संकल्प कहे-

ॐ विष्णुर्विष्णु र्विष्णुः अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्या अमुक-नामाहं मम पितु[१] विष्णुलोके सुखशयनार्थं इमां शय्यां सोपस्करां श्री लक्ष्मीनारायण कांचनप्रतिमासहितां विष्णु-दैवत्यां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे॥

हाथ के जलतिलकुश को ब्राह्मण के हाथ में दे शय्या को हिला देवे, ब्राह्मण को प्रणाम करें-

यदर्चनं कृतं विप्रं तव विष्णुस्तद् रूपिणः।

---

१. मातुः या जिसके निमित्त शय्या हो।

प्रार्थना मम दीनस्य विष्णुवेतु समर्पणम्॥

ब्राह्मण संकल्प हाथ में लेकर 'स्वस्ती' कह दे। दाता शय्यादान सांगतासिद्धि के लिए स्वर्ण या रजत द्रव्य हाथ में रख यह संकल्प कहे-

अद्यकृतैतत्सोपकरण शय्यादान कर्मणः सांगता-सिद्ध्यर्थमिदं हिरण्यमग्निदैवतं अमुकगोत्राया-मुककशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

दाता शय्या की प्रदाक्षिणा करें-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

प्रार्थना वाक्य कहे-

यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया।
शय्याममाप्यशून्याऽस्तु[१] तथा जन्मनिजन्मनि॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ कियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्योवन्दे तमच्युतम्॥

'इति शय्यादान'

।। त्रयोदश पद दान ।।

तेरह पददान[१] में निम्न द्रव्य वस्तु यथा शक्ति रखे-
१-आसन। २-उपानह। ३-छत्र। ४- मुद्रिका।
५- जलपात्र। ६-आमान्न, ७- जल। ८- पांच बर्तन।
९-वस्त्र। १०- यज्ञोपवीत। ११- घी। १२- दण्ड।
१३- ताम्बूल।

वस्तुयें रख कर्मकर्ता हाथ में जल, तिल, कुश, रख यह संकल्प कहे-

ॐ विष्णुविष्णुः अद्य अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुकशर्माहं अमुकगोत्राय मम पितुः अमुकनाम्नः शुद्धश्राद्धान्तरे परलोके सुखप्राप्तर्थं असद्गति निवारणार्थं इमानि आसनोपानहच्छत्रमुद्रिका कमण्डल्वन्नजलभाजन वस्त्राज्ययज्ञोपवीतदण्डताम्बूलानित्रयोदश पदानिनाना-दैवतानि नानानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे।
कर्मकर्ता अलग-२ ब्राह्मणो को अलग-अलग वस्तुयें देकर सन्तुष्ट करें।

इति त्रयोदशपददान

---

१. शय्यादान फल-

पुरन्दर गृहे दिव्ये सूर्यपुत्रालये ऽपि च।
उपतिष्ठेन्न संदेहः शय्यादान प्रभावतः।। (ग.पु.)

२. पददान प्रभाव-

अनेन पददानेन धार्मिका यान्ति सद्गतिम्।
यममार्ग गतानां च पददानं सुखप्रदम्।। (ग.पु.)

।। गोदान[१] ।।

कर्मकर्ता ब्राह्मण से आचमन लेकर आसन पूजन भूशूद्धि कर गाय के ऊपर तिल छोड़े-

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः।
पितरं च प्रयन्त्स्वः।। पूजन क्रम-

आवाहन-

आवाहयाम्यहं देवीं गां त्वां त्रैलोक्यमातरम्।
यस्या शरणमाविष्टः सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

पाद्य-

त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुन्धरा।
गायत्री त्वं च सावित्री गंगा त्वं च सरस्वती।।
तृणानिभक्षसेनित्यं अमृतंस्त्रवसे प्रभो।
भूतप्रेतपिशाचांश्चपितृदैवत मानुषान्।
सर्वास्तारयसदेवि नरकात् पाप संकटात्।।

वस्त्र-

आच्छादनं सदाशुद्धं मयादत्त सुनिर्मलम्।
सुरभिर्वस्त्र दानेन प्रीताभव सदामयि।।

आभूषण-

स्वर्णश्रृंगाद्वयं रौप्य खुराचातुष्कमुत्तमम्।
ताम्रपृष्टं मुक्तपुच्छं स्वर्ण विन्दु च शोभितम्।।

अपवित्र नहीं होते- अतः कुशा वह्नि-मंत्र-तुलसी-विप्र-धेनवः।
नैते निर्माल्यतां यान्ति क्रियमाणाः पुनः पुनः।।

कब अपवित्र है- दर्भा पिण्डेषु निर्माल्या ब्राह्मणा प्रेतभोजनै।
मन्त्रागौ तुलसी नीचे चितायां च हुतासनः।। (ग.पु.)

यत्तेमयार्पितं शुद्धं घण्टा चामरसंयुतम।
धेनोगृहाण सततं मयादत्तं नमोऽस्तुते।।

चन्दन–

सर्वदेव प्रियंदेवि चन्दनं चन्द्रकान्तिदम्।
कस्तूरी कुंकुमाढ्यं च गोगन्धः प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षत–

अक्षतान्धवलान्देवि रक्तचन्दन संयुतान्।
गृहाण परयाप्रित्या यतस्त्वं त्रिदशार्चिता।।

पुष्प–

पुष्पमाला तथाजाति पाटली चम्पकानि च।
सुपुष्पाणि गृहाणत्वं सर्वविघ्नं प्रणाशिनी।।

अंगपूजन–

ॐ आस्यायनमः।। ॐ श्रृगाभ्यांनमः।।
ॐ पृष्ठाभ्यानमः।। ॐ पुच्छाय नमः।।
ॐ अग्रपादाभ्यांनमः।। ॐ पृष्ठपादाभ्यांनमः।।

धूप–

वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्योगन्धउत्तमः।
आघ्रेयः सर्वतोधेनो धूपोऽयं प्रतिगृहयताम्।।

दीप–

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण सुरभे मयादत्तं हि भक्तितः।।

नैवेद्य–

सुरभि वैष्णवी माता नित्य विष्णु पदे स्थिते।
नैवेद्यंहिमयादतं गृह्यतां पापहारिणी।।

जल–

सर्वपाप हरं दिव्यं गागेयं निर्मलं जलम्।
आचमनं मयादत्तं गृह्यतां परमेश्वरि॥

॥ गोपुच्छ तर्पण॥

पूर्व मुख हो कर्मकर्ता हाथ में यव, कुश, जल, तिल, हाथ में रख गो की पूंछ पकड़ सव्य हो देवतीर्थ से तर्पण करे–

गणपतिस्तथा ब्रह्मा माधवो रुद्र देवता।
लक्ष्मी सरस्वती चैव कार्तिकश्च नवग्रहाः॥
देवाधि देवताः सर्वास्तथा प्रत्यधि देवता।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्दोदक तर्पणै।
किन्नराश्चपिशाचाश्च यक्षगंधर्व राक्षसा॥
दैत्याश्च दानवाश्चैव ये चान्येऽप्सरसांगणाः॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणै॥

जनेंऊ कण्ठी कर उत्तरमुख कार्यतीर्थ से तिल,यव, कुश जल हाथ में रख तर्पण करे–

सनकः सनन्दनश्चैव सनातनस्तथैव च।
कपिलश्च सुरैश्चैव वोढुपंचशिखस्तथा॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणै॥

अपसव्य हो मुंह दक्षिण, पितृतीर्थ से तिल, यव, कुश जल हाथ में रख तर्पण करे–

पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः।
मातामहस्तत्पिता च वृद्धमातामहस्तथा॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुछोदकतर्पणै॥
माता पितामहीचैव तथैवं प्रपितामहि।
मातामह्यादयः सर्वास्तथैवान्याश्च गोत्रजाः॥
ता सर्वा तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणै॥
पितृवंशेमृतायेच मातृवंशे तथैव च।
गुरुश्वसुर बन्धूनां ये चान्ये बांधवाः स्मृताः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणैः॥

सव्य हो कर्मकर्ता आचमन लेकर प्रार्थना वाक्य कहे-

या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवेष्ववस्थिता।
धेनुरूपेण सादेवी मम पापं व्यपोहतु॥

॥ गोदान संकल्प ॥

पूर्व मुख गाय, उत्तरमुख ब्राह्मण हो, कर्मकर्ता गो की पूंछ की तरफ, गोपुच्छ तीन कुशा, जल, तिल, हाथ में रख संकल्प कहे-

अद्येत्यादि० अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितुरमुक नाम्नः स्वर्गकाम इमां गां सवत्सां सुपूजितां पयस्विनीं सुवर्णश्रृगीरौप्य खुरां ताम्रपृष्ठां वस्त्रयुगच्छनां कांस्यपानीयपात्रां[१] पैत्तिलदोहां रुद्र दैवताममुक-

---

१. स्वर्ण श्रृंग चांदी के खुर आदि न हो सके तो तन्निक्रय द्रव्य रखे।

गोत्राया मुकशर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहं सम्प्रददे॥

हाथ में रखे तिल,जल आदि को ब्राह्मण के हाथ में देवें पश्चात सुवर्ण दक्षिणा हाथ में रख निम्न संकल्प कहे-
अद्यकृतैतद्गोदान प्रतिष्ठार्थं मिमा सुवर्णदक्षिणामग्नि-दैवताममुकगोत्रायाकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥

ब्राह्मण दक्षिणा लेकर 'ॐ स्वस्ति' ऐसा कहे। कर्मकर्ता चार बार गो प्रदक्षिणा करे-

यानिकानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि नाशय धेनो त्वं प्रदक्षिण पदे पदे॥

ब्राह्मण तर्पण जल से कर्मकर्ता को सपरिवार छीटे दे कर्मकर्ता प्रार्थना वाक्य कहे-

नमो ब्राह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोः नमः॥

॥ इति गोदान॥

॥ एकोदिष्ट श्राद्ध ॥

प्रातः स्नान कर श्वेत धुले वस्त्र पहन नित्यकर्मोपरान्त श्राद्धभूमि को गोबर से लीप उसके ऊपर जलता हुआ तृण घुमाकर पिण्ड के लिए चावल पकाकर, वेदी के ऊपर पितृरूप कुशा रख श्राद्ध के लिए तिल के तेल से दीपक जलाकर कर्मकर्ता पूर्व मुंह आचमन लेकर दोनों हाथों में पवित्री धारण कर प्राणायाम कर बांयें हाथ में जल ले दाहिने हाथ से अभिमंत्रित करे-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरी काक्षं स बाह्यभ्यन्तरः शुचिः।
पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥

ऐसा कह जल के छींटे श्राद्ध सामग्री तथा शरीर को लगावे, भूमि का पूजन कर ले-

ॐ श्राद्धस्थल भूम्यै नमः॥ ॐ भगवत्यै गयायै नमः॥ ॐ भगवते गदाधराय:॥ पूजन कर प्रार्थना करे-

पृथिवी त्वयाधृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृताः।
त्वं च धारय मां भद्रे पवित्रं कुरुचासनम्॥

कुशतिल जल हाथ में रख संकल्प बोले-

देशकालौ संकीर्त्य ॐ अद्यामुकगोत्रस्य असमत्पितु अमुक-शर्मणो वसुरूपस्य सांवत्सरिकै[1] कोदिष्ट श्राद्धं करिष्ये॥

पूर्वमुख हो तीन बार गायत्री स्मरण करे-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः॥

दक्षिणमुख अपसव्य हो तिल सरसो दिशाओं में फेंके-

ॐ नमोनमस्तेगोविंद पुराण पुरुषोत्तम।
इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशः॥१॥
अग्निष्वाताः पितृगणाः प्राची रक्षंतुमेदिशम्।
तथाबर्हिषदः पातु याम्यां ये पितरस्थिताः॥२॥

---

१. संवसरस्य मध्ये यदिस्याधिमासकः तदा त्रयोदशे मासि क्रिया प्रेतस्य वार्षिकी॥ (ग०पु०)

प्रतीचीमाज्यपास्तद्वदुदीचीमपि सोमपाः।
अद्योर्ध्वमपिकोणेषु हविष्मन्तश्च सर्वदा ॥३॥
रक्षोभूत पिशाचेभ्यस्तथैवासुर दोषतः।
सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमोरक्षां करोतु वै॥४॥

सव्य हो श्राद्ध कर्ता दक्षिण मुख दीपक का पूजन करे-

भो दीप दीप रूपस्त्वं कर्मसाक्षीह्यविघ्नकृत।
यावत् श्राद्ध समाप्तिः स्यातावदत्र स्थिरौभव॥

ब्राह्मण का भी पूजन करे-

यदर्चनं कृतं विप्रं तवविष्णुस्तद् रूपिणः।
प्रार्थना मम दीनस्य विष्णुवेतु समर्पणम्॥

ब्राह्मण कर्मकर्ता को तिलक लगावे-

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु इष्ट कामार्थ सिद्धये॥

अपसव्य हो कर्मपात्र में कुश छोड़े-

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुना-म्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ जल छोड़े-

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये। शंय्यो रभि स्रवन्तु नः॥ तिल छोड़े-

ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देव निर्मितः। प्रत्नमद्भि पृक्तः स्वधयापितृन्लोकान् प्रिणाहिनः स्वधा।

पात्र में गन्ध पुष्प छोड़कर तीन कुश से हिला देवे-

ॐ यद्देवा देवहेडन देवासश्चकृमा वयम्।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुंचत्वꣳहसः॥१॥
ॐ यदि दिवा यदिनक्त मेनाꣳसिचकृमावयम्।
वायुर्मातस्मादेनसो विश्वान्मुंचत्वꣳहसः॥२॥
ॐ यदिजाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसिचकृमावयम्।
सूर्योमा तस्मादेन सो विश्वान्मुंचत्वꣳहसः॥३॥

श्राद्ध सामग्री के छीटे लगाकर संकल्प तिल, जल, कुश हाथ में लेकर अपसव्य हो बोले-

अद्यामुकगोत्रस्य वसुस्वरूपस्यास्मत्पितुरमुकशर्मणः सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धे इदमासनं ते स्वधा॥

कुश आसन को पितृरूप कुश के पास रख वेदी पर तिल बिखेर दे-

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसिवेदिषदः॥

एक दोने में अर्घ्य बनाकर हाथ में तिल जल कुश रखकर कहे-

ॐ अमुकगोत्र अस्मत्पितुर अमुक शर्मन् वसुरूप एष ते हस्तार्घः स्वधा॥ कह कर दोने के जल को पितृ कुश पर छोड़ वेदी के बांये रख दे, नीवि बन्धन कर पितृ पूजन करे-

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। पितामहेभ्यः स्वधयिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधनमः॥ अक्षन्पितरो मीमदन्तपितरोऽतीतृपन्त पितरः

पितरः सुन्धवम्।।

पितृरूप कुश का गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य, दक्षिणा, वस्त्रादि से पूजन कर संकल्प बोले-
अद्यामुक गोत्रस्य वसुस्वरूपास्मत्पितर अमुकशर्मन् साम्वत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धे एतानि गन्धाक्षत पुष्पधूप दीप नैवेद्य ताम्बूल दक्षिणा वासांसि ते स्वधा।।

अन्न में मधु मिलाकर दक्षिण में जल पात्र, घी रख दाहिनें हाथ से अन्न पर हाथ रख पितृ को अर्पण करें-
ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः संत्वोषधीः।।१।। मधुनक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः मधुद्यौरस्तुनः पिता।।२।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां ऽ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।३।। मधु मधु मधु।। बायां हाथ जमीन पर रख दाहिना हाथ उसके नीचे रख अन्न दिखावे-

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य।
मुखे ऽअमृते ऽअमृतं जुहोमि स्वधा।।

सव्य हो भगवान विष्णु का पूजन भी कर ले-

ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमेत्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पाꣳसुरे।। पूजन कर प्रार्थना करे-
कृष्ण कृष्ण कृपालो त्वं अगतिर्नाम गतिर्भव।
संसार भव मग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम।।१।।
अन्नहीनं क्रियाहीनं मंत्रहीनं च यद्भवेत्।

तत्सर्व क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वरः॥२॥

पिण्ड के लिए प्रादेश मात्र की वेदी बनाकर रक्षोघ्न सूक्त पढ़कर तिल वेदी के ऊपर बिखेर दे-

ॐ कृष्णुष्वपाजः प्रसितिं न पृथ्वी याहि राजेवामवां २ ऽ इमेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानो ऽ स्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः॥१॥ तव भ्रमास ऽ आशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः। तपूꣳष्यग्ने जुह्वा पतङ्गान सन्दितो विसृज विष्वगुल्काः॥२॥ प्रतिष्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशोऽ अस्या अदब्धः। यो नो दूरे ऽ अघसꣳसो यो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिराद धर्षीत्॥३॥ उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यमित्रां २ऽ ओषतात्तिग्म हेते। यो नोऽआरातिꣳसमिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्॥४॥ ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मदा-विष्कृण्णुष्व दैव्यान्यग्ने। अवस्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून। अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि॥५॥ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपाꣳरेताꣳसि जिन्वन्ति। इन्द्रस्य त्वौजसा सादयामि॥६॥ भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः। दिवि मूर्द्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने च कृषे हव्यवाहम्॥७॥ ध्रुवासि धरुणास्तृता विश्वकर्मणा। मात्वासमुद्रऽद्वधीन्मासुपर्णो ऽ व्यथमाना पृथिवीं ट्टꣳह॥८॥ प्रजापतिष्ट्वा सादयत्वपां

पृष्ठेसमुद्रस्येमन्। व्यचस्वतींप्रथस्वतिं प्रथस्व पृथिव्यासि॥९॥ ॐ अंगिरसोनः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः तेषां वयꣳ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥१०॥ ॐ एनः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः। तेभिर्यमः ꣳस रराणो हवीꣳष्युशन्नु शद्भिः प्रतिकाममत्तु॥११॥

॥ पिण्ड निर्माण ॥

कर्मकर्ता दोनों हाथों से विल्वफल प्रमाण का पिण्ड पायस से बनावे पिण्ड निर्माण समय ब्राह्मण पुरुष सूक्त के १६ मंत्र, आशुः शिशानो के १७ मंत्र, कृष्णष्वपाजः प्रसिति0 के ५ मंत्र, तथा निम्न मंत्र को कहे-

ॐ उदीरतामवर ऽ उत्परास ऽ उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंय ऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥

निम्न गाथा का गान भी करे-

सप्तव्याधा दशार्णेषु मृगाः कालंजरे गिरौ।
चक्रवाका सरद्वीपे हंसा सरसि मानसे॥१॥
तेभिजाता कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणावेद पारगाः॥
प्रस्थितादूरमध्वानं यूयन्तेभ्योऽवसीदत॥२॥

॥ रुचिकृत पितृस्तोत्र ॥

पिण्ड निर्माण समय रूचिकृत पितृस्तोत्र का पाठ अत्यन्त पुण्य देने वाला है श्राद्ध काल में स्तोत्र का पाठ करने से पितरों को अक्षय तृप्ति होती है-

रुचिरुवाच

नमस्ये ऽहं पितृश्राद्धे ये वसंत्यधिदेवताः।
देवैरपि हि तर्प्यंते ये च श्राद्धैः स्वधोत्तरैः॥१॥
नमस्ये ऽहं पितृन्स्वर्गे ये तर्प्यन्ते महर्षिभिः।
श्राद्धैर्मनोमयैर्भक्त्या भुक्ति मुक्तिमभीप्सुभिः॥२॥
नमस्ये ऽहं पितृन्स्वर्गे सिद्धाः संतर्पयन्तियान्।
श्राद्धेषु दिव्यैः सकलैरूपहारै रनुत्तमैः॥३॥
नमस्ये ऽहं पितृन्भक्त्या ये ऽर्च्यन्ते गुह्यकैरपि।
तन्मयत्वेन बांछाद्भिर्ऋद्धिमात्यतिकीं पराम्॥४॥
नमस्ये ऽहं पितृन्मर्त्यैरर्च्यन्ते भुवि ये सदा।
श्राद्धेषु श्रद्धयाभीष्टलोकप्राप्ति प्रदायिनः॥५॥
नमस्ये ऽहं पितृन विप्रैरर्च्यन्ते भुवि ये सदा।
वांछिताभीष्ट लाभाय प्राजापत्य प्रदायिनः॥६॥
नमस्ये ऽहं पितृन् ये वै तर्प्यन्ते ऽरण्यवासिभिः।
वन्यैश्राद्धैर्यताहारैस्तपोनिर्धूत किल्विषैः॥७॥
नमस्ये ऽहं पितृन् विप्रैर्नैष्टिक ब्रह्मचारिभिः।
ये संयतात्मभिर्नित्यं संतर्प्यन्ते समाधिभिः॥८॥

नमस्ये ऽहं पितृन् श्राद्धै राजन्यास्तर्पयन्तियान्।
कव्यैरशेषैर्विधिवत् लोकेत्रय फल प्रदान्॥९॥
नमस्ये ऽहं पितृन् वैश्यैरर्च्यन्ते भुवि ये सदा
स्वकर्माभिरतैर्नित्यं पुष्पधूपान्नवारिभिः॥१०॥
नमस्येऽहं पितृन श्राद्धे यें शूद्रैरपिभक्तितः।
संतृप्यन्ते जगत्यत्र नाम्नाज्ञाताः सुकालिनः॥११॥
नमस्येऽहं पितृन् श्राद्धैः पाताले ये महासुरैः।
संतर्प्यन्ते स्वधाहारैस्त्यक्तदंभ मदैः सदा॥१२॥
नमस्ये ऽहं पितृन् श्राद्धैरर्च्यन्ते ये रसातलै।
भोगेरशेषैर्विधिवन्नागैः कामानभीप्सुभिः॥१३॥
नमस्येऽ हं पितृन् श्राद्धैः सर्पे संतर्पितान् सदा।
तत्रैव विधिवन्मत्र भोग संपत्समन्वितैः॥१४॥
पितृन्नमस्ये निवसन्ति साक्षाद्येदेवलोके च तथांतरिक्षे।
महीतले ये च सुरादिपूज्यास्ते मे प्रयच्छन्तु मयोपनीतम्॥१५॥
पितृन्नमस्ये परमात्मभूता ये वै विमानै निवसन्ति मूर्ताः।
यजन्तियानस्तमलैर्मनोभिर्योगीश्वराः क्लेशविमुक्तिहेतुन्॥१६॥
पितृन्नमस्ये दिवियेच मूर्ताः स्वधाभुज काम्यफलाभि संधौ।
प्रदानसक्ता सकलैप्सितानां विमुक्तिदा ये ऽनभि संहितेषु॥१७॥
तृप्यन्तुते ऽस्मिन् पितरः समस्ता इच्छावतां ये प्रदिशं तिकामान्।
सुरत्व मिन्द्रत्वमतो ऽ धिकं वा सुतान् पशून् स्वानिबलंगृहाणि॥१८॥
सोमस्य ये रश्मिषु ये ऽर्क बिम्बे शुक्ले विमाने च सदा बसंति।
तृप्यन्तु तेऽस्मिन् पितरोऽन्नतोयैं गंधादिनापुष्टिमितो व्रजन्तु॥१९॥

येषां हुते ऽ ग्नौहविषा च तृप्तिर्ये भुंजते विप्रशरीरभाजः।
ये पिण्डदानेन मुदं प्रयांति तृप्यन्तु तेऽस्मिन् पितरौऽन्नतोयैः॥२०॥
ये खड्गिमांसेन सुरैरभिष्टैः कृष्णैस्तिलैर्दिव्य मनोहरैश्च।
कालेन साकेन महर्षिवर्यैः संप्रीणितास्ते मुदमन्न यान्तु॥२१॥
कव्यान्यशेषाणि च यान्यभीष्टान्यतीवतेषाममरार्चितानाम्।
तेषां तुसानिध्यमिहास्तुपुष्पगंधान्नभोज्येषु मया बकृतेषु॥२२॥
दिने दिने ये प्रतिगृह्णते ऽर्च्चां मासान्तपूज्या भुवियेऽष्टकासु।
ये वत्सरान्तेऽभ्युदये च पूज्याः प्रयान्तु तेमे पितरोऽत्र तृप्तिम्॥२३॥
पूज्या द्विजानां कुमुदेंदुभासो ये क्षत्रियाणां च नवार्कवर्णाः।
तथा विशां ये कनकावदाता नीलीनिभाः शूद्रजनस्य ये च॥२४॥
तेऽस्मिन् समस्ता मम पुष्पगंध धूपान्नतोयादि निवेदनेन।
तथाग्निहोमेन च यांतुतृप्तिं सदा पितृभ्यः प्रणतो ऽस्मितेभ्यः॥२५॥
ये देवपूर्वाण्यतितृप्तिहेतोरश्नंति कव्यानि शुभा हुतानि।
तृप्ताश्च ये भूतिसृजो भवंति तृप्यन्तु ते ऽस्मिन् प्रणतोस्मितेभ्यः॥२६॥
रक्षासिं भूतान्य सुरांस्तथोग्रान्निर्णाशयन्तस्त्व शिवं प्रजानाम्।
आद्याः सुराणाममरेशपूज्यास्तृप्यन्तुते ऽस्मिन्प्रणतोऽस्मि तेभ्यः॥२७॥

अग्नि वाता वर्हिषदा आज्यया: सोमपास्तथा ।
ब्रजन्त तृप्तिं श्राद्धेऽस्मिन पितरस्तर्पिता मया।२८॥
अग्निष्वान्ताः पितृगणाः प्राचीं रक्षन्तु मे दिशम्।
तथा बर्हिषदः पान्तु याम्यायां पिरस्तथा॥२९॥
प्रतीचीमाज्यपास्तद्वदुदीची मपि सोपपाः।
रक्षो भूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुर दोषतः॥३०॥

सर्वतश्चाधिपस्तेषां यमो रक्षां करोतु मे।
विश्वो विश्वभुगाराध्यो धर्म्यो धन्यः शुभाननः॥३१॥
भूतिदो भूतिकृद्भूतिः पितृणां ये गणा नव।
कल्याणः कल्पतां कर्त्ता कल्पः कल्पतराश्रयः॥३२॥
कल्पताहेतुरनघः षडिमे ते गणाः स्मृताः।
वरो वरेण्यो वरदः पुष्टिदस्तुष्टिदस्तथा॥३३॥
विश्वापाता तथा धाता सप्तैवैते गणास्तथा।
महान् महात्मा महितो महिमावान्महा बलः॥३४॥
गणाः पंच तथैवेते पितृणां पापनाशनाः।
सुखदो धनदश्चान्यो धर्मदोऽन्यश्च भूतिदः॥३५॥
पितृणां कथ्यतेचैतत्तथा गणाचतुष्टयम्।
एकत्रिशंत् पितृगणा यैर्व्याप्तमखिलं जगत्॥३६॥
तेमेऽनु तृप्तास्तुष्यंतु यच्छन्तु च सदा हितम्॥

॥ सप्तार्चिस्तव ॥

अमूर्तानां च मूर्तानां पितृणां दीप्ततेजसाम्॥३७॥
नमस्यामि सदा तेषां ध्यानिनां दिव्यचक्षुषाम्।
इन्द्रादीनां च नेतारो दक्षमारीचयोस्तथा॥३८॥
सप्तर्षीणां तथान्येषां तान्नमस्यामि कामदान्।
मन्वादीनां मुनीद्राणां सूर्य्याचंद्रमसोस्तथा॥३९॥
तान्नमस्याम्यहं सर्वान् पितरश्चार्णवेषु ये।
नक्षत्राणां ग्रहाणां च वाय्वग्न्योर्नभस्तथा॥४०॥

द्यवापृथिव्योश्च तथा नमस्यामि कृतांजलिः।
देवर्षिणां ग्रहाणां च सर्वलोक नमस्कृतान्॥४१॥
अभयस्य सदा दातृन्नमस्ये हं कृतांजलिः।
नमो गणेभ्यः सप्तभ्यस्तथा लोकेषु सप्तसु॥४२॥
स्वयंभुवे नमस्यामि ब्रह्मणे योग चक्षुषे।
सोमाधारान् पितृगणान् योगमूर्तिधरांस्तथा॥४३॥
नमस्यामि तथा सोमं पितरं जगतामहम्।
अग्नि रूपांस्तथैवान्यान्नमस्यामि पितृन्हम्॥४४॥
अग्नीसोममयं विश्वं यत एतदशेषतः।
ये तु तेजसि ये चैते सोम सूर्याग्निमूर्त्तयः॥४५॥
जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरूपिणः।
तेभ्योऽ खिलेभ्यो योगिभ्यः पितृभ्योयतमानसाः॥
नमोनमो नमस्ते मे प्रसीदन्तु स्वधाभुजः॥४६॥

॥ पितृस्तोत्र पाठ फल ॥

पितर उचुः

स्तोत्रेणानेन च नरो यो मां स्तोष्यन्ति भक्तितः।
तस्य तुष्टा वयं भोगानात्मज्ञानं तथोत्तमम्॥४७॥
शरीरारोग्यमर्थं च पुत्रपौत्रादिंक तथा।
प्रदास्यामो न संदेहो यच्चान्यदभिवांछितम्॥४८॥
तस्मात्पुण्यफलं लोके वांच्छाद्भि सततं नरैः।
पितृणां चाक्षयां तृप्ति स्तव्यां स्तोत्रेण मानवै॥४९॥

वाञ्छद्भिः सततं स्तव्या स्तोत्रेणानेन वै यतः।
श्राद्धेच य इमं भक्त्या अस्मत्प्रीतिकरं स्तवम्।।५०।।
पठिष्यन्ति द्विजाग्राणां भुंजतां पुरतः स्थिताः।।
स्तोत्र श्रवण संप्रीत्या सन्निधाने परे कृते।।५१।।
अस्माकंमक्षयं श्राद्धं तद्भविष्यत्य संशयम्।
यद्यप्य श्रोत्रियं श्राद्धं यद्यप्युपहतं भवेत्।।५२।।
अन्यायोप्राप्त वित्तेन यदि वा कृतमन्यथा।
अश्राद्धार्हैरुपहृतैरूपहारैस्तथा कृतम्।।५३।।
अकालेऽ प्यथवा ऽदेशे विधिहीनमथापि वा।
अश्रद्धया वा पुरुषैर्दंभमाश्रित्य वा कृतम्।।५४।।
अस्माकं तृप्तये श्राद्धं तथाप्येतदुदीरणात्।
यत्रैतप्तपठ्यते श्राद्धे स्तोत्रमस्मत्सुखावहम्।।५५।।
अस्माकं जायते तृप्तिस्तत्र द्वादशवार्षिकी।
हेमन्ते द्वादशाब्दानि तृप्तिमेतत्प्रयच्छति।।५६।।
शिशिरे द्विगुणाब्दांश्च तृप्तिस्तोत्रमिदंशुभभ्।
बसंते षोडश समास्तृप्तये श्राद्ध कर्मणि।।५७।।
ग्रीष्मे च षोडशे वैतत्पठितं तृप्तिकारकम्।
विकले ऽपि कृते श्राद्धे स्तोत्रेणानेन साधिते।।५८।।
वर्षासु तृप्तिरस्माकमक्षया जायते रुचे।
शरत्कालेपिपठितं श्राद्धकाले प्रयच्छति।।५९।।
अस्माकमेतत्पुरुषैस्तृप्तिं पंचदशाब्दिकाम्।
यस्मिन् गृहे च लिखितमेतत्तिष्ठति नित्यदा।।६०।।

सन्निधानं कृते श्राद्धे तत्रास्मांक भविष्यति।
तस्मादेतत्वया श्राद्धे विप्राणो भुंजतां पुरः।।६१।।
श्रावणीयं महाभाग अस्माकं पुष्टि हेतुकम्।
इत्युक्त्वा पितरस्तस्य स्वर्गता मुनिसत्तम।।६२।।

इति मार्कण्डेय पुराणे रुचिमनुना कृतं रुचिस्तवं सप्तर्चिस्तवं चपितृ स्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

उपरोक्त स्तोत्र का पाठ श्राद्धकाल में करने से पितरो को अक्षय तृप्ति की प्राप्ती होती है। इस स्तोत्र के पाठ से शरीर की आरोग्यता, पुत्र पौत्र की वृद्धि, मनोवाच्छित फल की प्राप्ती होती है जिस घर में यह लिखित रुचि स्तोत्र रहता है वहां सब प्रकार से सिद्धि होती है। श्राद्ध कार्य में अवश्य ही रुचि स्तोत्र का पाठ करे जिससे पितरों को अक्षय तृप्ति प्राप्त हो।

।। पिण्ड स्थापन पूजन ।।

पिण्ड निर्माण कर थाली में रख अपसव्य हो बांया जंघा नवाकर तीन कुशाओं को लेकर वेदी के पश्चिम भाग में रख दें-

असंस्कृत प्रमीतानां त्यागिनां कुल भागिनाम्।
आच्छिष्ट भाग धेयानां दर्भेषुविकिरासनम्।।

कुछ पका अन्न पत्ते पर उठाकर जल घुमाकर खड़े हो तीन कुशाओं के ऊपर रख दे-

ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा ये ऽप्यादग्धा कुलेमम।
भूमौ दत्तेन चान्नेन तृप्तायान्तु परा गतिम्॥

सव्य हो भगवान का स्मरण करे-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

पुनः अपसव्य हो बांया घुटना नवाकर कुशा से वेदी के ऊपर दक्षिण से उत्तर को रेखा खींचे-

ॐ अपहता असुरा रक्षा सिवेदिषदः।

अब जलता हुआ अंगार लेकर कुशा से वेदी की रेखा के ऊपर घुमाकर दक्षिण की तरफ रख दे-

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुंचमाना ऽअसुराः संतः स्वधयाचरन्ति।
परा पुरोनिपुरो ये भरन्त्यग्निष्टां लोकात्प्रणुदात्यस्मात्॥

पुनः वेदी में जल छिड़क दें। दोनें में निम्न जलादि डाल दे-

शन्नोदेवीतिजलम्॥ तिलोसीति तिलान्॥
गंधाक्षतपुष्पाणि तूष्णी निक्षिप्य॥

दोने को बांये हाथ में रख उसमें रखे कुश को वेदी में रख, कुश तिल जल हाथ में रख संकल्प कहे-

अद्यामुकगोत्र वसुस्वरूपास्मत्पितरमुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोदिष्ट श्राद्धे पिण्डस्थाने ऽत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा।

दोने के थोड़े जल को वेदी के कुशा के ऊपर छोड़ दोनें को पास रख पिण्ड पर घी, शहद लगा तिल, जल, कुश के साथ हाथ में रख संकल्प कहे-

अद्यामुकगोत्रामुक वसुस्वरूपा अस्मत्पितरमुक शर्मन् सांवत्सरिक श्राद्धे एष ते पिण्डः स्वधा नमः॥

वेदी के मध्य कुशासन के ऊपर पिण्ड को रख थाली में पिण्ड के शेष अन्न को पिण्ड के पास छोड़ दें-

लेपभागभुजस्तृप्यन्तु॥

कुश मूल से हाथ पोंछ हाथ धो सव्य हो आचमन लेकर गायत्री स्मरण करे।

॥ निश्वास ध्यान ॥

कर्मकर्ता उत्तर की ओर मुंह कर प्राणायाम रीति से श्वास ले, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर पितरों का ध्यान करते हुए श्वास छोड़े।

मंत्र- ॐ अत्र पितर्मादयस्व यथाभागमावृषायस्व॥ श्वास ले॥ **ॐ अमीमदन्तपितर्यथा भागमाबृषयिषत्॥** स्वास छोड़े॥ अर्घ्य के पात्र को हाथ में लेकर अपसव्य हो जल को पिण्ड पर छोड़े-

अद्यामुकगोत्र वसुस्वरूपास्मत् पितर अमुक शर्मन् सांवत्सरिकैकोदिष्ट श्राद्धे पिण्डे प्रत्यवने निक्ष्वते स्वधा।

नीवी कुशा आदि को पिण्ड के पास रख सव्य होकर आचमन लेवे पुनः अपसव्य होकर बांया जंघा नवा कर कपास सूत्र हाथ में लेकर दक्षिण मुख हो पिण्ड पर चढ़ावे-

ॐ नमस्ते पितरो रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर्जीवायः पितः स्वधायै नमस्ते पितर्धोराय नमस्ते पितर्मन्यवे नमस्ते पित पितर्नमस्ते गृहान्नः पितर्देहि नमस्ते पितर्देष्म॥ हाथ जोड़कर पिण्ड पर सूत्र रख दे-

ॐ एतत्ते पितर्वासः॥

हाथ में तिल, कुश, जल रख संकल्प कहे-

अद्यामुक गोत्र वसुस्वरूपास्मात्पितरमुक शर्मन् सांवत्सरिकैको श्राद्धे पिण्डे एतत्तेवासः स्वधा।

पिण्ड पर गंध, अक्षत, पुष्प तुलसी, धूप, दीप, ताम्बूल, दक्षिणा चढ़ वस्त्र से ढक दे पिण्ड का शेष अन्न पिण्ड के पास छोडें।

ॐ शिवा आपः सन्तु। जल छोड़े। **सौमनस्य मस्तु।** पुष्प छोड़े॥ **अक्षतंचारिष्टं चास्तु।** ऐसा कह यव और तिल को अन्न पर छोड़े। दोनें पर जल में तिल रख अक्षयोदक देवे-

अद्यामुक गोत्रस्यवसुस्वरूपस्यास्मत्पितर अमुक शर्मणः सांवत्सरिकैकोदिष्टः श्राद्धे प्राणाप्यापन कामनायै दत्तै तदन्नपानादिकं अक्षयं अस्तु॥

सव्य होकर पूर्वमुख हो आशिष ग्रहण करे-

ॐ अघोरः पिताऽ स्तु॥ ऐसा कह पुनः कहे- **ॐ गोत्रंनो वर्द्धतां दातारोनोभिवर्द्धतां वेदा सन्ततिरेव च। श्रद्धा चनोमा व्यगमद्बहुदेयंचनोऽस्तु॥ अन्नंचनो बहुभवेद**

तिथिंश्चलभेमहि। याचितारश्च नः संतुमाचयाचिष्म कंचन।। एतः सत्या आशिषः सन्तु।।

पुनः अपसव्य हो पिण्ड़ के ऊपर तीन कुशा रखे तथा जल धारा दें-

ॐ उर्जं वहंती रमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रुतम्। स्वधास्थतर्पयतमे पितरम्।।

अर्घ्यपात्र को उल्टा कर दे। यथा शक्ति सुवर्ण दक्षिणा हाथ में लेकर संकल्प कहे-

ॐ अमुकगोत्रस्यास्मत्पितुरमुक शर्मणो वसुरूपस्य कृतै-तत्सांवत्सरिकैकोदिष्ट श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजत चन्द्र दैवतममुक गोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणात्वेन दातुमहमुत्सृजे।। ब्राह्मण को दक्षिणा दे नम्र हो पिण्ड को उठाकर सूंघ ले तथा थाली में रखे, कुश से जलते अंगार को अग्नि में डाल दीपक को बुझाकर हाथ पैर धो सव्य हो प्रार्थना करे-

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत्।
स्मरणादेवतद्विष्णो संपूर्ण स्यादिति श्रुतिः।।
देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः।

पितृरूप कुश को भी उठाकर पिण्ड के साथ रख जल में विसर्जन कर दे।

एकोदिष्ट श्राद्ध में शय्यादान, वस्त्र, अन्न, आमान्न, गायदान, देकर प्रार्थना करे-

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मनावाऽनु सृतः स्वभावात्। करोमियद्यत्सकलं परस्मै नारायणायैति समर्पयामि॥

कमकर्ता पके हुए अन्न को तीन पत्तों पर रख अपसव्य हो काक को, जनेंऊ मालाकार कर श्वान को, सव्य हो कर गाय को खिलावे। ब्राह्मण से तिलक आशीष ग्रहण करे ब्राह्मण को भोजन देकर दक्षिणा से सन्तुष्ट करे स्वयं परिवार के साथ भोजन करें।

॥ इति एकोदिष्ट श्राद्ध सम्पूर्ण॥

॥ पंचक मरण शान्ति॥

पंचक में मृत्यु होने[1] पर वंश के लिए अनिष्ट कारक होता है इसलिए जहां पर शव जलाना हो वहां भूमि शुद्धकर कुश से मनुष्याकृति की पांच प्रतिमा बनाकर यव के आटे से उनका लेपन कर, अपसव्य हो पूजन संकल्प करे-

अद्येत्यादि० अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य धनिष्ठादि पंचके-मरणसूचितवंशानिष्ट विनाशार्थं पंचकशान्ति करिष्ये।

प्रतिमाओं को स्थापित कर पूजन करे-

१- प्रेतवाहाय नमः॥ २- प्रेतसखाय नमः॥
३- प्रेतपाय नमः॥ ४- प्रेतभूमिपाय नमः।
५- प्रेत हर्त्रे नमः॥

नाम मंत्र से प्रत्येक प्रतिभा को गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य से पूजन कर दाह से पहले शव के ऊपर रख दे-

पहली प्रतिमा- शिर पर।
दूसरी दक्षिण कुक्षी पर।
तीसरी बांयी कुक्षी पर।
चौथी नाभी के ऊपर।

१.- पंचकेस्तु मृतोयस्तु न गतिं लभते नरः।
दाहस्तत्र न कर्तव्य कृतेऽन्य मरणं भवेत्॥
ततो दाहः प्रकर्तव्यस्तैश्च पुत्तलकैसह।
सपिण्डन दिने कुर्यात् तस्य शान्तिविधिं सुतः॥ (ग. पु.)

पांचवी पैरों के ऊपर रख घी को आहुति दें।

१- प्रेतवाहाय स्वाहा।। २- प्रेतसखाय स्वाहा।।
३- प्रेतपाय स्वाहा।। ४- प्रेत भूमिपाय स्वाहा।।
५- प्रेत हर्त्रे स्वाहा।।

उपरोक्त आहुति देकर पूर्व प्रकार से शव का दाह कर अशौचान्तर (ग्यारहवें,बारहवे दिन पंचक शान्ति करे।।

कर्मकर्ता नदी, तालाब, तीर्थ आदि के पास जाकर श्राद्ध भूमि को साफ कर गोबर से लीप स्नान के बाद नया यज्ञोपवीत वस्त्र धारण करे। होम के लिए वेदी बनावे। कलश स्थापन पूर्व, दक्षिण, पश्चिम उत्तर तथा चारों के मध्य में करे। गणेश नवग्रह आदि का पूजन कर अपसव्य हो सकंल्प करे-

अद्येत्यादि० अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य धनिष्ठादि-पंचक जनित दुर्भरण दोष निवृत्यर्थं (सव्य हो) मम गृहे सपरिवाराणामायुरारोग्य सुख प्राप्तर्थं विष्णुपूजन पूर्वकं पंचक शांतिकर्माहं करिष्ये।

संकल्प कर भगवान विष्णु (शालिग्राम) का पूजन षोडशोपचार से कर पुनः संकल्प करे-

अद्येत्यादि० अमुकप्रेतस्य पंचक शांति कर्मांगतया विहितं कलश पंचक देवतानां स्थापनं प्रतिष्ठा पूजनं च करिष्ये।

---

१. पंचक

आदौकृत्वा धनिष्ठार्धमेतन्नक्षत्र पंचकम्।
रेवत्यं तं न दाहार्हं दाहेवा न शुभं भवेत्।।

।। कलश स्थापन।।

कलशों के लिए पृथक-वेदी बनाकर, पांचों कलशों को पास रख कर्मकर्ता प्रतिष्ठा करे-

भूमि का स्पर्श-

ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वधाता विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीन्दृ हꣳपृथिवीम्माहिꣳसीः।

वेदी पर सतनाजा रखे-

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वोदाना-यत्वाव्यानायत्वा। दीर्घा मनुप्प्रसितिमायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्य पाणिः। प्रतिगृब्भणा त्वच्छिद्रेण पांणिना चक्षुषेत्वा महीना पयोसि।।

सतनाजे पर कलशों को रखे-

ॐ अजिघ्र कलशं मह्या त्वां विशन्तिन्दवः। पुनरुर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयि।।

कलशों को जल से भर दे-

वरुण स्योस्तंभनमसिवरुणस्य स्कंभसर्जनी स्थो वरुणस्य ऽऋत-सदन्यसिवरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽऋत सदन मासीत्।।

कलशों में गन्ध डाले-

**ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
इश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्।।**

कलशों में सर्वोषधी डाले-

ॐ या औषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनैनु बभ्रुणामहꣳशतं धामानि सप्तच॥

कलशों में दूर्वा डाले-

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परस्परि,
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥

कलशों में कुशा डाले-

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छ केयम्॥

कलशों में सप्तमृत्तिका डाले-

ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी।
यच्छानः शर्म स प्रथाः॥

कलशों में पूंगीफल डाले-

ॐ याः फलिनीर्याऽ अफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वꣳहसः॥

कलशों में पंचरत्न डाले-

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्या न्य क्रमीत्।
दधद्रत्नानि दाशुषे॥

कलशों में सुवर्ण दक्षिणा डाले -

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽ आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥

कलशों में पंच पल्लव डाले-

ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता।
गोभाजइत्किलासथयत् सनवथ पुरुषम्।।

सब कलशों पर चावलों से भरकर पूर्णपात्र रखे-

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहा ऽइषमूर्ज ँ शतक्रतो।।

कलशो में सूत्र बांधे-

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उश्रेयान भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

कलशों की प्रतिष्ठा कर लें-

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽ इह मादयन्तामोऽम्प्रतिष्ठ।

कलशों में वरुण का आवाहन करे-

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणावंदमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानोव्वरुणेहबोद्ध्युरुश ँ समान ऽआयुः प्रमोषीः।।

कलश में तीर्थो का आवाहन-

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयांतु यजमानस्य दुरितक्षय कारकाः।।

तीर्थो का आवाहन कर 'वरुणाय नम' से पूजन कर प्रार्थना करे-

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूलेतस्य स्थितो ब्रह्मामध्ये मातृगणाः स्मृता।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीप वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगैश्च सहिता सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।।

सुवर्ण निर्मित पांचो प्रतिमाओं का अन्युत्तारण करलें-
ॐ समुद्रस्यत्वा वकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको ऽअस्मभ्य ᳪ शिवोभव।। प्रतिमाओं को दुग्ध जलधारा से स्नान कराके ताम्बे के पात्र में कलशों के ऊपर रखे।।
पूर्व कलश में दूध डालकर वसु (धनिष्ठा) का आवाहन पूजन करे-
ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधाम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्ता काम धुक्षः।। ॐ वसुभ्यो नमः। वसूनावाहयामि स्थापयामि।।

वसु (धनिष्टा) का पूजन गन्धाक्षतादि से कर लें। दक्षिण के कलश में दधि डाल वरुण (शतमिषा) का आवाहन पूजन करे-
ॐ वरुणस्योतंभनमसि वरुणस्यस्कभसर्जनस्थिो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्यऋतसदनमसिवरुणस्य ऋतसदनमासीद्।। ॐ वरुणाय नमः।। वरुणा मावाहयामि स्थापयामि।।

प्रतिमा में वरुण (शतमिषा) का पूजन गन्धाक्षतादि से कर लें।

पश्चिम कलश में घृत डालकर अजैकपद (पूर्वाभाद्रपद)

का आवाहन पूजन करें-

ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवा ऋतावृधो हुवानास्तुता मंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपादाय नमः॥ अजैकयादमावाहयामि स्थापयामि॥

अजैकपाद (पूर्वाभाद्रपद) का पूजन गन्धाक्षतादि से कर लें।

उत्तर के कलश में गोमय डालकर अहिर्बुध्न्य (उत्तराभाद्रपद) का आवाहन पूजन करें-

ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मा मा हि ꣳ सीः। निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुबीर्याय॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः॥ आवाहयामि स्थापयामि॥

अहिर्बुध्न्य (उत्तराभाद्रप्रद) का पूजन गन्धाक्षतादि से कर लें।

मध्य के कलश में गोमूत्र डालकर प्रतिमा में पूषा (रेवती) का आवाहन पूजन करे-

ॐ पूषन्तवव्रतेव्वयंनरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इहमस्मि॥ ॐ पूष्णेनमः॥ पूषाणमावाहयामि स्थापयामि॥

पूषा (रेवती) का पूजन गन्धाक्षतादि से कर लें पश्चात् प्रतिष्ठा करे-

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइहमादयन्तामों ३म्प्रतिष्ठ॥ पांचों प्रतिमाओं में उपरोक्त नक्षत्र देवताओं

का पूजन नाम मंत्र द्वारा षोडशोपचार से कर उनके पीछे दहि चावल यव पूगीफल की ढेरी पन्द्रह स्थानों में रख नाम मंत्रों से यमादि का आवाहन करे-

१- ॐ यमाय नमः यमं आवाहयामि स्थापयामि॥
२- धर्मराजाय नमः धर्मराजं आवाहयामि स्थापयामि॥
३- मृत्यवेनमः मृत्युमावाहयामि स्थापयामि॥
४- अन्तकाय नमः अन्तकं आवाहयामि स्थापयामि॥
५- वैवस्वताय नमः वैवस्वतं आवाहयामि स्थापयामि॥
६-कालाय नमः कालं आवाहयामि स्थापयामि॥
७- सर्वभूत क्षयाय नमः सर्वभूत आवाहयामि स्थापयामि॥
८-औदुम्बराय नमः औदुम्बरं आवाहयामि स्थापयामि॥
९-दध्नाय नमो दध्नं आवाहयामि स्थापयामि॥
१०-नीलायनमो नीलं आवाहयामि स्थापयामि॥
११-परमेष्ठिने नमः परमेष्ठिनं आवाहयामि स्थापयामि॥
१२-वृकोदराय नमः वृकोदरं आवाहयामि स्थापयामि॥
१३-चित्राय नमः चित्रं आवाहयामि स्थापयामि॥
१४-चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तं आवाहयामि स्थापयामि॥

१५-ईशान में रुद्र पूजन-

ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः सर्वेभ्यः। सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ अघोराय नमः अघोरं आवाहयामि स्थापयामि॥ ॐ चतुर्दशयमेभ्योनमः॥ ॐ मृत्युञ्जयाय नमः॥

चौदह यम तथा रुद्र का पूजन शोडषोपचार से (नाममंत्र) से कर लें।।

पंचसूक्त पाठ के लिए पांच ब्राह्मणों का वरण भी कर लें- ब्राह्मण पंचसूक्त का पाठ करे-

१. पहले कलश के पास **ॐ कृष्णाष्वपाज०** रक्षोघ्न सूक्त मंत्र पाठ।

२. द्वितीय कलश के पास **ॐ विभ्राडबृहत्पिबतु०** अध्याय का मंत्र पाठ।

३. तीसरे कलश के पास **ॐ आशुः शिशानो०** इस अध्याय का मंत्र पाठ।

४. चौथे कलश के पास **ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव०** इस अध्याय का पाठ करे।।

५. पंचम कलश के पास **ऋत्वं वाचं प्रपद्ये०** इस अध्याय का पाठ करें।।

वेदी पर अग्निस्थापन (बृषोत्सर्ग समान) कर 'वरद' नाम से अग्नि को स्थापित कर ब्रह्मा से अन्वारब्ध हो आज्यहोम करें-

ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम।
ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय न मम।
ॐ अग्नये स्वाहा । इदं अग्नये न मम।
ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय न मम।

वरद नाम से अग्नि का षोडशोपचार से पूजन कर निम्न मंत्रो से १०८ या २८ आहुतियां देवे-

१. ॐ वसोः पवित्रमासि शतधारं वसोः पवित्रमासि

सहस्त्रधारं देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकाम धुक्षः स्वाहा॥ इदं वसुभ्यः।

२. ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कम्मसर्जनीस्थो वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनम-सिवरुणस्यऽ ऋतसदनमासीद॥ ॐ स्वाहा इदं वरुणाय॥

३. ॐ उतनोहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः विश्वेदेवा ऋतावृधो हुवाना स्तुता मंत्राः कविशस्ता अवन्तु स्वाहा॥ इदं जैकपादाय॥

४. ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामाहि ॐ सीः। निवर्तयाम्यायुषेनाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय स्वाहा॥ इदमहिर्बुध्न्याय॥

५. ॐ पूषं तव व्रतेवयन्नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इहस्मसि स्वाहा॥ इदं पूष्णो॥

उपरोक्त आहुति देकर 14 यमों के लिए आहुति दे-

१. ॐ यमाय स्वाहा इदं यमाय॥
२. ॐ धर्मराजाय स्वाहा इदं धर्मराजाय॥
३. ॐ मृत्यवे स्वाहा इदं मृत्यवे॥
४. ॐ अन्तकाय स्वाहा इदं अन्तकाय॥
५. ॐ वैवस्वताय स्वाहा इदं वैवस्वताय॥
६. ॐ कालाय स्वाहा इदं कालाय
७. ॐ सर्वभूतक्षायाय स्वाहा इदं सर्व भूतक्षयाय।

८. ॐ औदुम्बराय स्वाहा इदं औदुम्बराय॥
९. ॐ दध्नाय स्वाहा इदं दध्नाय॥
१०. ॐ नीलाय स्वाहा इदं नीलाय॥
११. ॐ परमेष्ठिने स्वाहा इदं परमेष्ठिने॥
१२. ॐ बृकोदराय स्वाहा इदं बृकोदराय॥
१३. ॐ चित्राय स्वाहा इदं चित्राय॥
१४. ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा इदं चित्रगुप्ताय॥

इसके बाद नवग्रहादि की नौ आहुतियां देकर १०८ आहुतियां निम्न मंत्र से दे-

ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः सर्वेभ्यः।
सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

विष्णु मंत्र से तिल होम करे मंत्र-

ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमेत्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पा ॐ सुरे स्वाहा॥ विष्णवे स्वाहा॥

स्विष्टकृत आहुति देकर

दश दिक्पालो का उदड़ चावल दहि से पूजन कर बलिदान देवे। पश्चात् पूर्णाहुति निम्न मंत्र से दे-

ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः पृथिव्यै स्वाहाऽग्नये स्वाहा अन्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा॥१॥ दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहाऽद्भ्यः स्वाहा वरुणाय स्वाहा नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा॥२॥

ॐ मूर्द्धानं दिवोऽ अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृतऽ अजात मग्निम्। कवि ꣳ सम्राज मतिथिं जनाना मासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा॥

पूर्णाहुति के बाद संस्रवप्रासन आचमन करक ब्रह्मा की गांठ खोल प्रणीता के जल से शिरोमार्जन करे-

ॐ सुमित्रि या नऽआप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रिया स्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः॥

ईशान में प्रणीता को उलट अग्नि में पवित्रियांडाल विछाई कुशाओं को घी में भिगोकर अग्नि में डाले-

ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वागातुमितमनसस्पत। इमं देव यज्ञ ꣳ स्वाहाव्वातेधाः स्वाहा॥

श्रुव से भस्म निकाल दाहिने हाथ की अनामिका अंगुष्ठ से भस्म ललाट, गले, बाहुमूल, हृदय पर लगावे-

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तुत्र्यायुषम्॥

कर्मकर्त्ता पांचों कलश तथा स्वर्ण प्रतिमा का संकल्प बोल दान देवे-

अद्यैत्यादि० आमुकनाम्नः पंचकमरणोत्पन्नदुर्गति निवारणार्थं च इमान् पंचघटान् सदक्षिणान् ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे॥

पंचक शान्ति के लिऐ पंचदान-गाय, महिषी सप्तधान्य, तिल व काला वस्त्र, दक्षिणा सहित कांस्यपात्र में घी, अभाव में द्रव्यादि ब्राह्मणो को देवे।

ब्राह्मण कलशों के जल से सपरिवार कर्मकर्त्ता का अभिषेक करें-

ॐ शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा॥
शन्न ऽ इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णु रुरुक्रमः॥१॥
शन्नो वातः पवता ꣳ शन्नस्तपतु सूर्य्यः।
शन्नः कनिक्रन्दद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु ॥२॥
अहानिशं भवन्तु नः श ꣳ रात्रीः प्रतिधीयताम्॥ शन्नऽइन्द्राग्नी भवता मवोभिः शन्नऽइन्द्रा वरुणा रातहव्या। शन्नऽइन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयो॥३॥ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतयोशंयोरभिस्रवन्तु नः॥४॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

अभिषेक के बाद कर्मकर्त्ता घी में मुंह देख ब्राह्मणों को दक्षिणा से सन्तुष्ट कर देवता, अग्नि का विसर्जन[1] कर संकल्प करे-

अधेत्यादि० अमुकगोत्रस्य अमुकनाम्न पितुः (प्रेतस्य) पंचकजनित दुर्मरणदोषनिवृत्तिः मम गृहे सकल शान्तिरस्तु॥ कर्मपूर्ति के लिए भगवान का स्मरण करे-

ॐ यस्यस्मृत्वा चनामोक्त्यातपोयज्ञ क्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतांयाति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

---

१. एवं यः कुरुते पुत्र शुभं तस्य प्रजायते।
विधानं यो न कुर्वीत विघ्नस्तस्य भवेत्सदा॥ (ब्रहमपुराण)

संक्षिप्त नारायण बलि प्रयोग

कमकर्त्ता नदी, तालाब या तीर्थ पर जाकर पहले दशविध स्नान करे- (भस्म आदि को मस्तक ह्रदय पर लगावें)

१. भस्म स्नान- **ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवेनमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥** पुनः शुद्ध स्नान।

२. मृत्तिका स्नान- **ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्यपा ँ सुरे स्वाहा।** पुनः शुद्ध स्नान॥

३. गोमय स्नान- **गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥**पुनः शुद्ध स्नान।

४. पंचगव्य स्नान- **ॐ सहत्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्रपात्। स भूमि ँ सर्वत्तस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशांगुलम्॥** पुनः शुद्धस्नान।

५. गोरजस्नान- **ॐ आयं गौः पृश्नि रक्रमीदसदन्मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः॥** पुनः शुद्ध स्नान।

६. धान्य स्नान- **धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वो-दानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः। प्रतिगृभ्ण्णात्वच्छिद्रेण पांणिना चक्षुसेत्वा महीना पयोसि॥** पुनः शुद्धस्नान।

७. फल स्नान- **ॐ याः फलिनीर्याऽअसफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ँ**

हसः।। शुद्धस्नान।

८. सर्वोषधि स्नान- **ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेनसह राज्ञा। यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्त ँ राजन् पारयामसि।** पुनः शुद्ध स्नान।

९. कुशोदक स्नान- **ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेश्विनो-र्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्।।** पुनः शुद्धस्नान

१०. हिरण्य स्नान **ॐ आकृष्णेन रजसावर्त्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यंच। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।**

गंगादितीर्थ में प्रणाम कर स्नान करे-

विष्णुपादाब्जसंभूते गंगे त्रिपथ गामिनी।
धर्मद्रवीतिविख्याते पांप में हर जान्हवी।।

तीर्थो का स्मरण करते हुए स्नान कर, स्नान के बाद अपसव्य हो एक अंजली जल ले किनारे पर छोड़े।

ॐअग्निदग्धाश्च ये जीवा ये ऽप्यदग्धाः कुलेमम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायांतुपरां गतिम्।।

एक जलाजली सूर्य अर्घ्य देवे-

ॐ एहिसूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्य नमोस्तुते।।

नया यज्ञोपवीत पहन, दशबार गायत्री मंत्र स्मरण कर पंचगव्य पान करे-

ॐ यत्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामकै।
प्राशनं पंचगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम्।।

भूमि को साफ कर गोबर से लीप आचमन प्राणायाम कर, तिलक धारण शिखाबंधन कर कुशासन पर बैठ पवित्रियां पहन भगवान शालिग्राम अथवा स्वर्ण निर्मित प्रतिमा का अग्न्युतारण कर, पूजन षोडशोपचार से कर, ब्राह्मणो का वरण कर ले।

॥ संकल्प ॥

हाथ में तिल जल अक्षत लेकर संकल्प कहे-

अद्यैत्यादि० अमुकगोत्रोऽहममुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्ति पूर्वकाक्षय स्वर्गलोक फल प्राप्तिकाम चतुष्षष्ठि दुर्मरणांतर्गत यत् किंचिदपमृत्युजनितदोषोप शान्त्यर्थं करिष्यमाण नारायणबलिकर्मणि निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणपत्यादि षोडश मातृणां सूर्यादि नवग्रहादि देवाना आवाहनं पूजनमहं करिष्ये।

जल चावल छोड गणेश मातृका ग्रह आदि का पूजन[१] कर ले उपरोक्त पूजन कर सप्तऋषि का पूजन जलादि से कर दे-

ॐ गौतमाय नमः ॥१॥ ॐ अत्रये नमः ॥२॥ ॐ भारद्वाजाय नमः॥३॥ विश्वामित्राय नमः॥४॥ कश्यपाय नमः॥५॥ अरून्धति सहित वशिष्ठाय नमः॥६॥ जमदग्नेय नमः॥७॥ पूजन कर दें

१-पूजन के लिए 'सम्पूर्ण पूजन रहस्यम्' पुस्तक देखें।

प्रायश्चित संकल्प

अद्येत्यादि० अमुकगोत्रस्य अमुकप्रेतस्य अमुकदुर्मरण दोष परिहारार्थं तथा रोगोत्पति मरणावसाने उर्द्धोच्छिष्टाऽधउच्छिष्टोभयोच्छिष्टाऽकृतस्नानमरणे मरण समये हरिनामोच्चारवर्जिते संध्याशौचलोपे अशौचमरणे तुलसीतिलकुशगोपीचन्दन गंगोदक स्नान रहिते तथा मार्गे शववाहे अशौचदेशे खर्परास्थिचर्मामेध्य केशमार्जार संमार्जनी रजस्वलादिसंस्पर्शे अतीर्थे दक्षिणायने पंचक मध्ये त्रिपुष्कर यमल योगे रात्र्यंतरिते रान्नोकृष्णपक्षे परकाष्ठे पराग्निदाहे मुखे आज्याहुतिरहिते चितामध्ये-कीटपतंगादि ज्वलितादिदोषपरिहारार्थं कुगति निवारणार्थं उत्तमलोक प्राप्त्यर्थं पंचदश प्राजापत्यात्मकं प्रायश्चितं तत्प्रतिनिधि रूपं प्रतिप्राज्यापत्यं गोमूल्यमथवा प्रतिप्राज्यापत्यममुकसहस्र परिमित गायत्री जपं ब्राह्मण द्वारा यथा कालेन अद्यवा अहमाचरिष्ये।

कर्मकर्त्ता गायत्री जप, ब्राहमण भोजन, गोमूल्य द्वारा प्रायश्चित संकल्प को पूर्ण करे।। पुनः संकल्प करें।

अमुक गोत्रस्य अमुकप्रेतस्य देहोद्धरण कामनाय चतुःपष्ठिर्दुर्मरणांतर्गत यत्किंचिदपमृत्युजनित दोष निवारणार्थं नारायण बलिकर्माख्यंमहं करिष्ये।।

भगवान विष्णु का पूजन कर विष्णु भगवान के दक्षिण में पांच वेदी कलश स्थापन हेतु बनावे कलश पूजन पंचक शान्ति से कर कलश स्थापन करे-

१. ब्रह्मा का कलश पूर्व दिशा की वेदी पर चांदी का पूर्णपात्र में गेहूं रख, श्वेतवस्त्र से ढक दे।
२. स्वर्णमय विष्णु का कलश पश्चिम दिशा में पूर्णपात्र में चना रख, पीतवस्त्र से ढक दे।
३. रुद्र कलश ताम्बे का उत्तर दिशा में, पूर्णापात्र में मूंग रख श्वेतवस्त्र से ढक दे।
४. लोहमय यमकलश दक्षिण दिशा में रख, पूर्णपात्र में उड़द रख कृष्ण वस्त्र से ढक दे।
५. चारों कलशों के मध्य मिट्टी का प्रेत कलश रख, पूर्णपात्र में उड़द रख कृष्णवस्त्र से ढक दें।

पूर्णपात्रों के ऊपर ब्रहमा की चांदी की मूर्ति, विष्णु की सुवर्ण की, रुद्र की ताम्बे की, यम की लोहे की प्रेत की शीशे की मूर्ति अग्युतारण कर स्थापित कर दें। इनका आवाहन निम्न मंत्रों द्वारा करे-

१. ब्रह्मा- ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः॥

२.विष्णु ॐ इदं विष्णुविचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ᳪ सुरे स्वाहा।

३.रुद्र ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्या मुत ते नमः॥

४.यम ॐ यमाय त्वङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे॥

५.प्रेत ॐ प्रेताजयतानर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु। उग्रावः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ॥

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, यम का पूजन गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीपक नैवेद्य से कर, प्रेत का पूजन अपसव्य हो गन्धाक्षत पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य से कर दे। पुन सव्य होकर कहे-

एतत्कृत ब्रह्मादि देवतानां प्रेत सहितानां।
पूजनं तेन ते देवाः प्रीता भवन्तु॥

पुष्प लेकर प्रार्थना करे-

अनादिनिधनो देवः शंखचक्रगदाधरः।
अक्षय्यः पुंडरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भवः॥

कलश पूजन के बाद अग्नि स्थापना कर ब्रह्मा से अन्वारब्ध हो आहुति दे, प्रथम चार आहुतियों का अवशिष्ट घृत का त्याग प्रोक्षणी पात्र में **'इदं न मम'** कहकर त्याग करे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये नमः।
ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय।
ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये।
ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय।

आहुति देकर अग्नि का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवद्य दक्षिणा से कर नारायणबलि होम करे।

नारायण बलि प्रधान होम

ॐ युंजते मनऽउत युंजते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः । विहोत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा।। इदं विष्णवे न मम।।१।। ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ॐ सुरे स्वाहा इदं विष्णवे न मम।।२।। ॐ इरावती धेनुमती हि भूत ॐ सूर्यवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्भ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्थ पृथिवी मभितो मयूखै स्वाहा इदं विष्णवे न मम।।३।। ॐ देवश्रुतौ देवेष्वा धोषतं प्राचीप्रेतमध्वरं कल्पयन्ती उर्ध्वं यज्ञं नयतं मा जिह्वरतम्। स्वं गोष्ठमावदतं देवी दुर्गे आदुर्मानिर्वादिष्टं प्रज्ञां मा निर्वादिष्ट मत्र रथेमां वर्ष्मन् पृथिव्याः।। इदं विष्णवे न मम।।४।। ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानिविममे रंजासि। योऽअस्कभायदुत्तरं सधस्यं विचक्रमाणस्त्रे धोरूगायो विष्णवे त्वा ।। इदं विष्णवे न मम।।५।। दिवो वा विष्ण उत व पृथिव्या महो वा विष्ण उरोरन्तरिक्षात् उमा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणोतसव्याद् विष्णवे त्वा।। इदं विष्णवे न मम।।६।। प्रेत द्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगौ न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा स्वाहा। इदं विष्णवेन मम।।७।। ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः शनप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा।। इदं विष्णवे न नमः।।८।।

पुनः ३४ आहुति घी से देकर त्याग भी करता जावे- ॐ लोमभ्य: स्वाहा।। इदं लोमभ्यः।। ऐसा सब जगह बोले।।६।। ॐ त्वचेभ्य: स्वाहा।।२।। ॐ लोहिताय स्वाहा।।३।। मेदेभ्य: स्वाहा।।४।। ॐ मासेभ्य: स्वाहा।।५।। ॐ स्नायुभ्य: स्वाहा।।६।। ॐ अस्थिभ्य: स्वाहा।।७।। ॐ मज्जाभ्य: स्वाहा।।८।। रेतसे स्वाहा ।।९।। ॐ पायवे स्वाहा।।।१०।। ॐ आयासाय स्वाहा।।११।। ॐ प्रायासाय स्वाहा।।१२।। ॐ संयासाय स्वाहा।।१३।। ॐ वियासाय स्वाहा ।।१४।। ॐ उद्यासाय स्वाहा।।१५।। ॐ शुचे स्वाहा। ।।१६।। ॐ शोचिते स्वाहा।।१७।। ॐ शोचमानाय स्वाहा।।१८।। ॐ शोकमानाय स्वाहा।।१९।। ॐ तप से स्वाहा।।२०।। ॐ तप्यते स्वाहा।।२१।। ॐ तप्यमानाय स्वाहा।।२२।। ॐ तप्ताय स्वाहा।।२३।। धर्म्माय स्वाहा।।२४।। ॐ निष्कृत्यै स्वाहा।।२५।। ॐ प्रायश्चित्यै स्वाहा।।२६।। ॐभेषजाय स्वाहा।।२७।। ॐ यमाय स्वाहा ।।२८।। ॐ अन्तकाय स्वाहा।।२९।। ॐ मृतवे स्वाहा।।३०।। ॐ ब्राह्मणे स्वाहा।।३१।। ॐ ब्रह्म हत्यायै स्वाहा।।३२।। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्य: स्वाहा।।३३।। ॐ द्यावापृथिव्यां स्वाहा।।३४।।

।। पुरुषसूक्त होम ।।

पुरुषसूक्त के सोलह मंत्रों से घी की आहुति देवे- ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। सभूमि ७ँ सर्वत स्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशांगुलम्।। ॐ स्वाहा इदं

विष्णवे इदं न मम॥१॥ सोलह आहुतियों में त्याग करें।
ॐ पुरुषऽएवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्व
स्येशानो यदन्नेनाति रोहति॥ॐ स्वाहा इदं विष्णवे०॥२॥
ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः पादोऽस्य
विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतं दिवि॥ ॐ स्वाहा इदं०॥३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो
विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि॥ ॐ स्वाहा
इदं०॥४॥ ततो विराडजायत विराजोऽअधिपुरुषः। सजातो
अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः॥ ॐ स्वाहा इदं॥५॥
ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूस्ताँश्चक्रे
वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥ ॐ स्वाहा इदं॥६॥
ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व हुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे छन्दा ँ
सिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ ॐ स्वाहा॥ इदं॥७॥
तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे
तस्मात्तस्मा ज्जाता ऽ अजावयः॥ ॐ स्वाहा॥ इदं॥८॥
तंजज्ञं वहिर्षि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेनदेवाऽअयजंत
साध्या ऽ ऋषयश्चयै॥ ॐ स्वाहा॥ इदं०॥९॥ ॐ यत्पुरुषं
व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू
किमूरूपादा ऽ उच्येते॥ ॐ स्वाहा॥ इदं॥१०॥ ॐ
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। उरू तदस्य
यद्वैश्यः पद्भ्यां ँ शूद्रोऽअजायतः॥ ॐ स्वाहा॥ इदं॥११॥
चन्द्रमां मनसोजातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च

प्राणश्च मुखादग्निरजायत।। ॐ स्वाहा।। इदं०।।१२।। ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रातथा लोकां२ऽअकल्पयन्।। ॐ स्वाहा।। इदं।।१३।। यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत वसन्तोऽस्यासी दाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।। ॐ स्वाहा।। इंद०।।१४। ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअवध्नन् पुरुषं पशुम्।। ॐ स्वाहा।। इदं।।१५।। ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। ॐ स्वाहा।। इदं।।१६।।

निम्न मंत्रो से धृत, पापस, चरु से होम करते हुए त्याग करे

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधाधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे ।। ॐ स्वाहा।। इदं विष्णवे. ।।१।। ॐ आपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नूर्जस्वती राजस्वश्चितानाः। यामिर्मित्रा व वरुणावभ्यषिञ्चन्याभिरिन्द्रमनयन्नत्यराती।। ॐ स्वाहा।। इदं ।।२।। ॐ प्रपर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्ना-वश्चरन्तिस्वसि च इयाना। ता आववृत्रन्नधरा गुदत्ता। अहिर्बुधन्वमनुरीयमाणाः। विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि।। ॐ स्वाहा। इदं।।३।। विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि

विममे रजांसि यो अस्कभायदुत्तर ँ सधस्थं विचक्रमाण-स्त्रेधोरूगायो विष्णवेत्वा।। ॐ स्वाहा।। इदं।।४।। ॐ दिवो वा विष्णउत वा पृथिव्यामहोवा विष्ण उरोरन्तरिक्षात्। उभा हि हस्ता वसुना पृणस्व प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद् विष्णवे त्वा।। ॐ स्वाहा।। इदं।।५।। ॐ प्रेतद्विष्णुस्तवते विर्येण मृगो न भीमः। कुचरो गिरिष्ठाः यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।। ॐ स्वाहा।। इदं।।६।। ॐ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। ॐ स्वाहा।। इदं।।७।। तद् विप्रासो विपन्यवो जागृवा ँ स समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्।। ॐ स्वाहा।। इदं।।८।। ॐ विष्णोः कर्माणिः पश्यत यतो व्रतानि पस्पृशे। इन्द्रस्य युज्यः सखः।।ॐ स्वाहा।। इदं।।९।। ॐ तद्विष्णोः परमं पद ँ सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततं ँ स्वाहा।। ॐ स्वाहा।। इदं।।१०।। ॐ अद्भयः संभृतः पृथिव्यैः रसाच्य विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे तस्य त्वष्टा विदधद्रूप मेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजान मग्रे।। ॐ स्वाहा।। इदं।।११।। ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेयनाय।। ॐ स्वाहा।। इदं।।१२।। ॐ प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते। तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीराः। तस्मिन् हतस्थुर्भुवानानि विश्वा।। ॐ स्वाहा।।

इदं॥१३॥ ॐ यो देवभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये॥ ॐ स्वाहा॥ इदं॥१४॥ ॐ रुचं ब्राह्मं जनयन्तोदेवा अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यातस्य देवा असन्वशे॥ ॐ स्वाहा।।इदं॥१५॥ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण॥ ॐ स्वाहा।।इदं॥१६॥

घृताक्त तिल, यव शर्करा से निम्न मंत्र द्वारा 108 आहुति दें -

ॐ तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाꣳसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पद ꣳ स्वाहा॥ इदं विष्णवे॥

पुनः सव देवताओं का उत्तर पूजन कर ब्रह्मा से अन्वारब्ध कर एक आहुति दे।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥

अब पुनः नौ आहुति घी से दे-

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये॥१॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे ॥२॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय ॥३॥ ॐ त्वंनो अग्ने वरुणस्य. ॥४॥ ॐ सत्वन्नो अग्नेवमो॥५॥ ॐ अयाश्चाश्चने॥६॥ ॐ ये ते शतंवरुणं॥७॥ ॐ उदुत्तमं वरुण.॥८॥

(उपरोक्त पूरे मंत्र वृषोत्सर्ग में देखे)

ॐ प्रजापत्तये स्वाहा इदं प्रजापतये (मनसा)॥९।

।। दिक्पाल पूजन ।।

अद्य पूर्वोच्चारित मासे पक्षे तिथौ वासरे इन्द्रादि।दिक्पालानां पूजन पूर्वकं बलिदानं करिष्ये।। इन्द्राय नमः। अग्नये नमः। यमाय नमः। निर्ऋतये नमः। वरुणाय नमः। वायवेनमः। कुवेरायनमः।। ईश्वराय नमः। ब्रह्मणे नमः। अनन्ताय नमः।। दिक्पालेभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं समर्पयामि।। पूजन कर बलिदान देवें।

पूर्वे इन्द्राय नमो बलिं समर्पयामि आग्नेय्यां अग्नये नमो बलिं.। दक्षिणे यमाय नमो बलि.। नैऋत्यां नृर्ऋतये नमो बलि.। पश्चिमे वरुणाय नमो बलिं। वायव्यां वायवे नमो बलिं। उत्तरे सोमाय नमो बलिं.।। ईशान्यां ईश्वराय नमो बलिं.। ऊर्ध्वब्रह्मणे नमो बलि.। ईशान्यां ईश्वरायनमो बलिं। ऊर्ध्वब्रह्मणे नमो बलिं। अधोऽनन्ताय नमो बलि।

आचमन लेकर पूर्णाहुति के लिए श्रुवा में 12 या 4 बार घी रख उसके ऊपर नारियल को गन्धाक्षत लगाकर रख दे तथा खड़े होकर पूर्णाहुति मंत्र कह कर होम करे- ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः स्वाहा पृथिव्यै स्वाहा अग्नये स्वाहा अन्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा।।१।। दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा ऽभ्यद्यः स्वाहा वरुणाय स्वाहा

नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा।।२।। बाचे स्वाहा प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा।।३।। ॐ मुर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि ँ सम्राज मतिथिं जनाना मासन्नापात्रं जनयन्त देवा ॐ स्वाहा।।४।। इतिपूर्णाहुति।। यज्ञ विभूति लगावे- **ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेर (ललाटे) कश्यपश्य त्र्यायुषं (ग्रीवायां) यद्देवेषु त्र्यायुषं (दक्षिण बाहु मूले) तन्नो अस्तुत्र्यायुषम् (हृदये)**

एक आचमन जल निम्न मंत्र बोलते हुए छोड़ दें-

ॐ आधारादिपूर्णाहुति पर्यन्तं अस्मिन् प्रायश्चित्त होम कर्मणि स्वैः स्वैर्मन्त्रैः यस्यै यस्यै देवतायै यावद्यावद् आहुतयः ताभिः तास्ताः देवताः प्रीयन्ताम्।

संस्रव प्रासन, ब्रह्मा को पूर्णपात्र दान, पवित्रे से मार्जन कर कुशाओं को अग्नि में डाल देवे-

ॐ देवागातु विदोगातु वित्वागातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञ ँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा।।

ब्राह्मण भोजन संकल्पः-

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुक प्रेतस्यामुक दुर्मरण निमित्तक नारायणबलि हवन कर्म्मणः सांगता सिद्धयर्थं यथा शक्ति ब्राहमणान् भोजयिष्ये।।

कर्मकर्त्ता कहे-

अनेनदुर्मरण प्रायश्चित्ताङ्गहोमकृतेन असद्गति विनाशः सद्गतिप्राप्तिश्च भवेत्।।

'विष्णु तर्पण'

आचमन प्राणायाम कर हाथ में जलादि लेकर संकल्प करे-

ॐ अद्यामुकगोत्रस्य अमुक प्रेतस्य अमुक दुर्मरण निमित्तक (अथवा) ज्ञाताज्ञातपाप प्रायश्चितार्थं कृत नारायण बलि पूर्वाङ्गभूतं परलोके महातृषानिवारणार्थं वैष्णवे: सूक्तैराद्यन्तयो: पुराणश्लोक त्रयावृत्या विष्णोरुपरि विष्णु तर्पणमहं करिष्ये-

शंख में जल, तिल, दूध, सर्वोषधि, तुलसी रख तर्पण करे-

अनादि निधनो देव: शंख चक्रगदाधर:।
अक्षय पुण्डरीकाक्ष: प्रेतमोक्षप्रदोभव।।१।।
अतसीपुष्प संकाशंपीतवास समच्युतम्।
ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यतेभयम्।।२।।
कृष्ण कृष्ण कृपालोत्वमगतिनांगतिर्भव।
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम।।३।।
नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त जनार्दन।
अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव।।४।।

अब **"सहस्त्रशीर्षा पुरुष:"** इत्यादि १६ मंत्रों से तर्पण (मंत्र हवन प्रकरण में देखें) कर **"युंजतेमन."** आदि मंत्र से (ये आठ मंत्र नारायण बलि प्रधान होम में देखें) तर्पण कर पुन: **अनादिनिधनोदेव:** आदि ४ मंत्रों से तर्पण कर पुन: निम्न ६ मंत्रों से तर्पण करे-

ॐ युजे वां ब्रह्म पूर्वन्नमोभिर्विश्लोक येतु पथ्यैव सूरेः। श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रऽ आयेधाम्मानिदिव्यानि तस्थुः ॥१॥ ॐ यस्य प्रयांण मन्वन्यऽ इद्ययुर्देवा देवस्य महिमान मोजसा। यः पार्थिवानी विममेसऽएतशोरजा ७ँ सि देवः सविताममहित्वना॥२॥ ॐ देवसवितः प्रसुव यंत्र प्रसुव यज्ञपतिभगाय। दिव्योगन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदुत ॥३॥ ॐ इमं नो देव सवितर्यज्ञं प्रणय देवाव्य ७ँ सखिविद् ७ँ सत्राजितं धनजित ७ँ स्वर्जितम्। ऋचास्तोम ७ँ समर्द्धय गायत्रेण रथन्तरं बृहद् गायत्रवर्तनि स्वाहा॥॥४॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽ शिवनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे गायत्रेण छन्दसाऽङ्गिरस्वत् पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमंगिरस्वदाभर त्रैष्टुभेन छन्दसांगिर-स्वत्॥५॥ ॐ अभ्रिरसि नार्यसि त्वया वयमग्नि ७ँसकेमखनितु७ँसधस्थ आ। जागतेन छन्दसांगिरस्वत्॥६॥ ॐ हस्त आधाय सविताबिभ्र दभ्रि ७ँ हिरणययीम्। अग्ने ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअद्ध्या-भरदानुष्टुभेन छन्दसांगिरस्वत् ॥७॥ ॐ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥८॥ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीन चक्षुराततम्॥९॥

पुनः अनादि निधनो देव० आदि ४ मंत्रों से तर्पण कर निम्न १४ मंत्रों से तर्पण करे-

ॐ रक्षोहणं बलगेहनं वैष्णवीमिदमहं तं

बलगमुत्किरामियं मे निष्टयो याममात्यो निचखानेदमहं तं बलगुमत्किरामि यम्मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेद-महं तं बलगुमत्किरामि यंमे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि॥१॥

ॐ स्वराडसि सपत्नहा सत्रराडस्यभिमतिहा जनराडसि रक्षोहा सर्वराडस्यमित्रहा॥२॥ ॐ दिवि विष्णुर्व्यक्र ꣳ स्त जागतेन छन्दसा ततो निर्भक्तो योस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मोन्तरिक्षे पृथिव्यां विष्णुर्व्यक्र ꣳस्त त्रैष्टुभेन छन्दसा ततो निर्भक्तों योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः। पृथिव्यां विष्णुर्व्यक्र ꣳस्त गायत्रेण छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽ स्मान्द्वेष्ट यं च वयं द्विष्मो स्मादेनादस्यै प्रतिष्ठाया अगन्मस्वः संज्योतिषाभूम ॥३॥ ॐ प्रेता जयतानर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु उग्रावः सन्तु बाहवोनाधृष्यायथासथ॥४॥ ॐ अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः। कृष्णग्रीव आग्नेयोरराटे पुरस्तात् सारस्वती मैष्यधस्ताद् धन्वोराश्विनावधो रामो बाह्वोः सौमा पोष्णं श्यामो नाभ्या ꣳ सौर्ययामो श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्व योस्त्वाष्ट्रो लोमश सक्थौ सक्थोर्वायव्य ꣳ श्वेतः पुच्छः इन्द्राय स्वपस्याय स्वेहद्वैष्णवो वामनः॥५॥ ॐ विष्णोः क्रमोऽसि सपत्न्हा गायत्रं छन्द आरोह पृथिवी मनु विक्रमस्व विष्णोः क्रमोस्यभिमातिहात्रैष्टुभं छन्द आरोहान्तरिक्ष मनु विक्रमस्व विष्णोः क्रमोस्य रातीयतो हन्ता जाग्रतं छन्द आरोह दिवमनु विक्रमस्व विष्णोः

क्रमोऽषि सत्रूयतो हन्तानुष्टुभं छन्द आरोह दिशो नु विक्रमस्व॥६॥ ॐ सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः। इन्द्रस्य त्वा भाग ॐ सोमेनातनच्मि विष्णो हव्य ॐ रक्ष॥७॥ ॐ अहुतमसि हविर्धान दृ ॐ हस्व मा वहर्म्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्। विष्णुस्त्वाक्रमतामरु-वातायापहत ॐ रक्षो यच्छन्तां पंच॥८॥ ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्षऽआयुधं निधाय कृत्ति वसानऽ आचर पिनांक बिभ्रदागहि॥९॥ ॐ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥१०॥ ॐ तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवा ॐ सः समिन्धते। विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥११॥ ॐ विश्वेदेवासऽआगत श्रुणुताम इम ॐ हवम्। एदं बर्हिनीषीदत् ॥१२॥ ॐ उपयाम गृहीतोस्यादित्ये भ्यस्त्वा विष्णु उरुगायैषतेसोमस्त ॐ रक्षस्व मा त्वा दभन्॥१३॥ ॐ उरू विष्णो विक्रमस्वोरुक्षयाय नस्कृधि घृतं घृतयोने पिबयप्र यज्ञपतिन्तिर स्वाहा॥ १४॥

पुनः ४ मंत्र अनादि निधनो देव. से तर्पण कर कर्मकर्त्ता जल छोड़ कर कहे- **एतत्कृतं यद्विष्णुतर्पणं तेन महाविष्णुः प्रियताम्॥**

ब्राह्मणों को दक्षिणादान संकल्प- **अद्येत्यादि अमुकप्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्त्यर्थं उत्तमलोकप्राप्तयर्थं दुर्मरणनिमित्तक नारायण बलि बिहित ब्रह्मादि पंच देवानां श्राद्धकर्मणः प्रतिष्ठार्थमिदहिरण्यमग्निदैवतंयथा-**

नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे॥ ब्राह्मण पंच सूक्त का पाठ कर लें।[1] कर्मकर्त्ता पंचदान भूमि, धेनु, सुवर्णचक्र, तिल, दक्षिणा सहित बृषदान कर दे, अभाव में यथाशक्ति सुवर्ण से ब्राह्मणों को प्रसन्न करे।

कर्मकर्त्ता पंचकलश ब्रह्म, विष्णु, रुद्र, यम, तत्पुरुषकलश को दक्षिणा सहित ब्राह्मणों को देवे। पिण्डदान एकादशाह समान करे।

"इति नारायण बलि"

1. ब्रह्म सूक्त पुरुष सूक्त, रुद्रसूक्त, यम सूक्त, प्रेत सूक्त।

"तीर्थ श्राद्ध"

तीर्थस्थल हरिद्वार, गया, गंगोत्रीं, काशी आदि पुण्य क्षेत्रों में श्राद्ध के दिन पिण्ड के लिए पहले दिन[1] श्राद्धकर्ता मुण्डन करा दे। श्राद्ध के दिन पिण्ड[2] के लिए यव चूर्ण या खीर तैयार कर दूध, तिल, चीनी, शहद आदि पिण्ड चूर्ण में मिला देवे तीर्थ स्नान करने के लिए तीर्थ आवाहन करे-

अभिनव विषवली पादपद्मस्य विष्णो-
मदनमथन मौलेर्मालती पुष्प माला।
जयति जय पताका काप्यसौ मोक्ष लक्ष्म्याः
क्षपित कलिकलकांजाह्नवी नः पुनातु॥

स्नान संकल्प-

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय अत्र पृथिव्या ब्रह्मणोह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतित मे कलियुगे कलि प्रथम चरणे प्रभवादिषष्ठ्यब्दानां मध्ये. ...नाम संवत्सरे......अयने मासे.......पक्षे........तिथौ....... वासरे..........राशिस्थेसूर्ये.......स्थेचन्द्रे.....स्थे देवगुरौ....... योगे......करणे अमुक गोत्रो.......राशी.......शर्म्माहं[3] मम

---

१. श्राद्धस्य पूर्व दिवसे तीर्थावाहनं च मुण्डनम्।
स्नानं च हविष्यान्नमथऽपरेद्युः श्राद्धमीरितम्॥

२. एकोद्दिष्टे विल्वमानं पार्वणे विल्वकोपमम्।
तीर्थे धात्रीसम श्राद्धे पुत्रः पिण्डं विनिर्वपेत्॥

३. शर्मान्तं विप्रनामोक्तं वर्मान्तं क्षत्रियस्यतु।
गुप्तान्तं चैव वैश्यस्य दासान्तं शूद्र जन्मजः॥

इह जन्मनि जन्मान्तरे वा वाल्यकाल यौवनवार्ध-क्यावस्थासु कायिक-वाचिक मानसिक ज्ञाताज्ञातमनो वा क्वाय कर्मेन्द्रिय महापातकोपपातकादि संचित सकल-पापक्षय सकल पित्र्युद्धारपूर्वक ब्रह्म लोकादि श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये शरीर शुद्धये तीर्थ स्नानं करिष्ये।।

(तीर्थ प्रार्थना)

गाङ्गं वारि मनोहारिं मुरारीचरणच्युतम्।
त्रिपुरारिशिर श्चारि पापहारि पुनातु माम्।।

तीर्थ स्नान[1] कर आचमन ले पुनः प्रार्थना करे-

गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेवच।
निष्पापोऽस्मि हे देवि त्वत्प्रसादात्तव जान्हवी।।

स्वच्छ वस्त्र यज्ञोपवीत पहन ब्राह्मण पूजन, तिलक धारण, सन्ध्यावन्दन, तर्पण देव पूजन आदि कर श्री गंगा पूजन के लिए पूजन संकल्प करे-

अद्येत्यादि..........अमुकोऽहं सकलपापक्षयपूर्वकं श्रुति स्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये अमुक क्षेत्रे श्री गङ्गयाः पूजनं करिष्ये।।

ध्यान-

सितमकर निष्णां शुभ्रवर्णा त्रिनेत्रां
करधृत कलशोद्यत् सोत्पलामत्य भीष्टाम्।

---

1. गंगा शतद्रूं यमुना विपासां सरस्वतीं नैमिषगोमतीं वा।
तन्नावगाह्यार्चनमादरेण कृत्वापितृणां दुरितानि हन्ति।। (विष्णु पुराण)

विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटिरचूडां।
कलितसितदुकुलां जाह्नवी त्वां नमामि।।

ध्यान समर्पण कर आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयजल, स्नान, वस्त्र उपवस्त्र गन्ध, अक्षत, पुष्प, श्रृंगार सामग्री, धूप, दीपक, नैवेद्य, ताम्बूल दक्षिणा आदि से पूजन कर गङ्गा को बारह नामों से प्रणाम करे-

ॐ नारायिण्यै नमः।।१।। ॐ दशविधपापहरायैनमः।।२।। ॐ गङ्गायै नमः।।३।। ॐ भगवत्यै नमः।।४।। ॐ विश्व-जनन्यै नमः ।।५।। ॐ अमृतायै नमः।।६।। ॐ दक्षायै नमः।।७।। ॐ शिवायै नमः।।८।। ॐ रेवत्यै नमः।।९।। ॐ बृहत्यैनमः।।१०।। ॐ नन्दिन्यै नमः।।११।। ॐ तारायै नमः ।।१२।। गंगा गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि। मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।।

"श्राद्ध[1] प्रयोग"

कर्म पात्र रखने के स्थान पर भूमि में चन्दन से मण्डल बनाकर शंख चक्रादि लिख कर्मपात्र रख पात्र में जलादि छोडे-

शन्नोदेतिजलं, यवोऽसि इतियवान् तिलोऽसीति तिलान् निक्षिप्य (जल, यव, तिल कर्म्मपात्र में डाल) **कर्मपात्रं सुसम्पनमस्तु।।**

---

1. देशेकाले च पात्रे च श्रद्धया विधिनात्रयत्।
पितृनुदिश्यविप्रेभ्यो दत्तं श्राद्धमुदाहतम।।

बालु की वेदी प्रादेशमात्र प्रमाण की बनाकर कुश से उसे ढक कर दीप जला देवें।

श्राद्ध संकल्प[1]

ॐ अद्येत्यादि अमुकोहं अमुकगोत्राणां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां अस्मपत्पितृपितामह प्रपितामहानाममुक-शर्म्मणां सपत्निकानां मातामह प्रमातामहानां अमुक अमुक शर्मणां अक्षयतृप्ति कामनया आमुकतीर्थे धूरिलोचन संज्ञक विश्वेदेवार्चन पूर्वकं तीर्थ श्राद्धं करिष्ये।

पूर्वमुख हो अंजली बांध पितृ गायत्री का स्मरण करे-

ॐ देवताभ्य: पितृभ्यश्च: महायोगिभ्य एव च।
नम: स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नम:॥

विश्वेदेवा स्थापित कर विश्वेदेवा का पूजन करें-

इदं पाद्यं एषोऽर्घ्य एषगन्ध: एऽतेक्षतं इमानि पुष्पाणि एष धूप एषदीप: इदं नैवेद्यं इदं जलं इदं फलं इयं दक्षिणा इमानि वासंसि भो विश्वेदेवा वो नम:॥

अपसव्य हो पिता माता आदि के पिण्ड के लिए आसन दे तथा कुश से पितर आदि बना लेवे तथा तिलकुश जल हाथ में ले संकल्प करें-

---

1. तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध गजछाया च पैतृकम्।
अब्ध मध्ये न कुर्वीत ग्रहणे न युगादिषु (ग.पु.)

अस्मत् पितृपितामह प्रपितामहानां अमुक गोत्राणां ३ शर्मणां (पिता आदि का नाम उच्चारण करे) वसु रुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्निकानां तीर्थश्राद्धे इदमासन मस्तु॥

पुनः तिल, जल कुश हाथ में रख संकल्प करे-
अस्मन् मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहा अमुक-३

(नाना आदि का नाम उच्चारण करे) अमुक गोत्राः वसु रुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्निकानां तीर्थ श्राद्धे इदमासन मस्तु॥

पितर रूप कुशाओं का पूजन गन्धक्षतादि से कर देवे-
अद्येत्यादि अस्मत् पितृपितामह प्रपितामहाः अमुक ३ शर्माणः अमुकगोत्राः सपत्निका वसुरुद्रादित्य स्वरूपाः तथा अस्मन् मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहा अमुक ३ शर्माणः अमुकगोत्राः सपत्नीका वसु रुद्रादित्यस्वरूपाः इमानि गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य वासो आभूषणानि वः स्वधा सव्य होकर

प्रार्थना-

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्न पितरो मीमदन्त पितरोतीतृप्यन्तु पितरः शुन्धध्वम्॥

---

1. तीर्थ श्राद्ध में आसनं पिण्ड दानं च पुनः प्रत्यवने जनम्।
दक्षिणां चान्न संकल्प तीर्थश्राद्धेत्वयं विधिः॥

पिण्ड वेदि के ऊपर तिल डाल दे-

ॐ अपहता असुरा रक्षा ँ सि वेदिषदः।

दोने पर जल लेकर संकल्प करे-

अद्येह अस्मत्पितः अमुकशर्मन् अमुकगोत्र सपत्निक वसुस्वरूप पिण्डासने अवनेनिक्ष्व ते स्वधा।

जल छोड़ कर पितामह प्रपितामह, तथा मातामह आदि को भी अबनेजन देवे।।

"पिण्डदान"

कर्मकर्त्ता अपसव्य हो तिल जल कुश के साथ एक-एक पिण्ड उठाकर संकल्प[1] करे-

ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रः वसुस्वरूप अस्मत् पितरः अमुक शर्मन् तीर्थ श्राद्धे एषः पिण्डः मद्दत्तस्ते स्वधा।।

ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रः रुद्रस्वरूप अस्मत् पितामह अमुक शर्मन् तीर्थ श्राद्धे एषः पिण्डः मद्दत्तस्ते स्वधा।।२।।

ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रः आदित्यस्वरूप अस्मत् प्रपितामह अमुक शर्मन् तीर्थश्राद्धे एषः पिण्डः मद्दत्तस्ते स्वधा।।३।।

ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रे गायत्री स्वरूपे अस्मन् मातरः अमुकी देवि तीर्थ श्राद्धे एषः पिण्डः मद्दत्तस्ते स्वधा।।४।।

ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रे सावित्री स्वरूपे अस्मत् पितामही अमुकी देवि तीर्थ श्राद्धे एषः पिण्डः मद्दत्तस्ते स्वाधा।।५।।

---

1. तीर्थे तिथि विशेषे च गयायां प्रेतपक्षके।
   निषिद्धेऽपि दिने कुर्यात् तर्पणं तिलमिश्रितम्।।

ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रे सरस्वतीस्वरूपे अस्मत् प्रपितामही अमुकी देवि तीर्थ श्राद्धे एषः पिण्डः मद्दत्तस्ते स्वधा।।६।।
ॐअद्येत्यादि अमुकगोत्रः वसुस्वरूपास्मन्मातामहा-मुकशर्मन् एषः तीर्थ पिण्डः मद्दत्तस्ते स्वधा।।७।।
ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रः रुद्र स्वरूपास्मद् प्रमाता-महामुकशर्मन् एषः तीर्थ पिण्डः मद्दत्तस्ते स्वधा।।८।।
ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रः आदित्य स्वरूपास्मद्वृद्ध प्रमातामहामुकशर्मन् एषः तीर्थ पिण्डः मद्दत्तस्ते स्वधा।।९।।
ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रे गायत्री स्वरूपे अस्मन् मातामह्यामुकि देवि तीर्थ श्राद्धे एषः पिण्डः मद्दत्तस्ते स्वधा।।१०।।
ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रे सावित्री स्वरूपे अस्मन् प्रमातामही अमुकि देवि तीर्थ श्राद्धे एषः पिण्डः मद्दत्तस्ते स्वधा।।११।।
ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रे सरस्वती स्वरूपे अस्मन् वृद्ध प्रमातामही अमुकि देवी तीर्थ श्राद्धे एषः पिण्डः मद्दत्तस्ते स्वधा।।१२।।

यदि तीर्थ में गुरु श्वसुर बान्धव आदि को भी पिण्ड देना हो तो पृथक संकल्प कर पिण्ड दान देवें-

पिण्डदान देकर सव्य हो आचमन लेकर तीन बार 'गंगा विष्णु' ऐसा कह पुनः अपसव्य हो पिण्डों पर जल धारा दे-

ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्र वसुरुद्रादित्य स्वरूपास्मन् पित्तरः पितामह प्रपितामह अमुक ३ शर्मन् तीर्थ श्राद्धे पिण्ड प्रत्यवने निक्ष्वते स्वधा।।

ॐ अद्यामुक गोत्रे गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपेस्मन् मातरपितामहि प्रपितामही अमुकि ३ देवि तीर्थ श्राद्धे पिण्ड प्रत्यवने निक्ष्वते स्वधा॥

ॐ अद्यामुकगोत्र वसुरुद्रआदित्यरूपास्मत् मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामह अमुक ३ शर्मन् तीर्थ श्राद्धे पिण्ड प्रत्यवने निक्ष्वते स्वधा॥

ॐ अद्यामुक गोत्रे गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपेस्मन् मातामही प्रमातामही वृद्धप्रमातामही अमुकि ३ देवि तीर्थ श्राद्धे पिण्ड प्रत्यवने निक्ष्वते स्वधा॥

पिण्ड पूजन

पिण्डो का पूजन निम्न सामग्री से कर दे-

इदं पाद्यं एषोऽर्घ्य एष गन्धः एऽतेक्षतं इमानि पुष्पाणि एषधूपः एषदीपः इदं नैवेद्यं इदं जलं इदं फलं इयं दक्षिणा इमानि वासांसि भूषणादीनि वः स्वधा॥

पिण्डो का पूजन कर सव्य हो दक्षिणा संकल्प करे-

अद्येत्यादि अमुकगोत्र अस्मत् पित्रादि त्रयश्राद्ध सम्वन्धिनां धूरिसुलोचन संज्ञाकानां विश्वेदेवानां प्रीतये कृतैतद्वैश्व-दैविकतीर्थश्राद्ध कर्मणः साद्गुण्यार्थं इदं हिरण्यं ब्राह्मणाय दास्यै॥

अपसव्य होकर कर्मकर्त्ता सामने आमान्न रख कर कहे-

ॐ अद्येत्यादि० अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहेभ्यः अमुक ३ शर्मेभ्यः अमुक गोत्रेभ्यः सपत्निकेभ्यो व

सुरुद्रादित्यस्वरूपेभ्यः तथा अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः अमुक३ शर्मेभ्योऽमुक गोत्रेभ्यः सपत्नीकेभ्योवसुरुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः तीर्थ श्राद्ध निमित्तकं पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः इदमन्नोदकादिकं यद्दत्तं तदक्षयमस्तु॥

आमान्न ब्राहमण को देकर सव्य हो पितृ गायत्री का स्मरण करे-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

विश्वेदेवा विसर्जन कर अपसव्य हो पितरों का विसर्जन करे ब्राह्मण से आशीर्वाद ग्रहण कर पुनः सव्य होकर कहे-

ॐ यः कश्चित् पितृरूपेण तिष्ठति परमेश्वरः।
सोऽयं श्राद्ध प्रदानेन तृप्तिं लभतु शाश्वतीम्॥१॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत्।
स्मरणा देव तद्विष्णोः सम्पूर्णस्यादिति श्रुतिः॥२॥
यस्यस्मृत्या च नामोक्त्यां तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूणतां याति सद्यौवन्दे तमच्युतम्॥३॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्धयात्मना वाऽनुसृत स्वभावात्।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मैनारायणायेति समर्पयामि॥
नारायणाय नमः। नारायणाय नमः। नारायणाय नमः।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः।

मृतक अशौच के सामान्य ज्ञान

प्रेत सूतक में ४ पीढ़ी तक के गोत्री १० दिन में शुद्ध होते हैं। ५वीं पीढ़ी के गोत्री ७ दिन में शुद्ध होते हैं। ६वीं पीढ़ी के गोत्री ५ दिन तथा ७वीं पीढ़ी के ३ दिन ८वीं पीढ़ी के गोत्री १ दिन ९वीं पीढ़ी के गोत्री स्नान मात्र से शुद्ध होते हैं।

विदेश गये व्यक्ति को सूतक १० दिन का होता है, मृतक होने के १० दिन बाद सुनें तो ३ दिन का सूतक होता है। यदि १ वर्ष उपरान्त मृतक होना सुनें तो स्नान मात्र से शुद्धि होती है।

पहले मृतक के बाद यदि दूसरा मृतक ६ दिन के मध्य हो तो पहले मृतक के साथ दूसरे की सपिण्डी अथवा पहले मृतक के ६ दिन बाद दूसरा मृतक हो तो दूसरे मृतक के साथ पहले मृतक की सपिण्डी होती है।

गर्भपात जितने माह का हो उतने दिन में माता की शुद्धि होती है। बालक की मृत्यु होने पर शुद्धि एक दिन रात्रि में होती है। चूड़ाकर्म होने के बाद बालक मृतक हो तो तीन रात्रि का सूतक तथा यज्ञोपवीत संस्कार के बाद मृतक होने पर १० दिन का अशौच होता है। कन्या की मृत्यु के पश्चात् सब वर्णों की स्नान मात्र से शुद्धि होती है। वाक्दान होने के उपरान्त पिता तथा भर्ता दोनों पक्षों को तीन दिन का अशौच होता है। कन्या का विवाह होने के उपरान्त पति पक्ष को ही पूर्ण अशौच होता है।

पिता माता के मरने पर पुत्र, स्त्री अथवा भाई या भाई के पुत्र या सगोत्री पिण्डदान करे। पुत्रहीन अथवा जिसके सगोत्री न हों उसके पिण्डदन मित्र अथवा पुरोहित करे।

अनाथ के पिण्डदान (प्रेतक्रिया) करने वाले को करोड़ यज्ञ करने का फल प्राप्त होता है। पुत्र की मृत्यु के बाद पिता प्रेतकर्म न करे, किसी दूसरे से करावे।

रात्रि में शव स्पर्श करने से सूर्य दर्शन तक तथा दिन में शव का स्पर्श करने से अन्य को भी नक्षत्र दर्शन तक अशौच होता है।

मृतक को पहले दिन भात या जौ के आटे का जो भी पिण्ड दिया जाये। ६ दिन तक वही दें १०वें दिन उड़द के चूर्ण का पिण्ड दें।

जब तक सपिण्डन श्राद्ध न हो तब तक घर में यज्ञोपवीतादि संस्कार, विवाह, यज्ञ, उत्सव आदि नहीं होते।

मृतक होने के बाद संवत्सर मध्य अधिकमास हो तो तेरहवें मास वार्षिक श्राद्ध होंगे। तीर्थश्राद्ध वर्ष व्यतीत होने के उपरान्त होंगे।

सूतिका के मरने पर पंचगव्य से स्नान करवा सूर्प द्वारा १०८ बार स्नान करवाकर दाह करे। कुष्ठि मरण होने पर उसे भूमि में तीन दिन दबाकर रखें पुनः निकाल गोदान के पश्चात् विधिपूर्वक दाह करें।

श्राद्धदिन यदि ग्रहण हो तो श्राद्ध अन्न या सुवर्ण से करे। श्राद्ध में ब्राह्मणों को निमन्त्रण देने के बाद कोई मर जाय या उत्पन्न हो तो बने भोजन को खाने तक अशौच नहीं होता।

प्रथम दिन सामग्री

तुलसी दल	सुवर्ण	गंगाजल
जौ	चावल	तिल
पिण्ड-६	शहद	कुशा
सफेद पुष्प	धूपराल	घी
दूध	मूंज रस्सी	लकड़ी
कलश	सफेद वस्त्र	चन्दन

दशगात्र सामग्री

जौ का आटा ६ पिण्ड	त्रिकाष्टि
उड़द का आटा १ पिण्ड	बालू वेदी के लिए

ऊन का धागा	घड़ा १ चितानल का
तीन सूत का धागा	कुश पवित्री २
भृंगराज पत्र	दूध
सफेद चन्दन	दोने
दन्त धावन १०	हल्दी
नैवेद्य	खस
ताम्बूल	आंवला
मजीठ	दीपक
कमल गठ्ठा	इलायची दाना
शतावरी	पिण्ड वस्त्र
रुई	फल
राल धूप	तेल
अगरबत्ती	तिल
जौ	चाकू १
कर्मपात्र	आसन २

एकादशाह की विशेष सामग्री

ब्राह्मण वरण सामग्री	आसन
स्वर्ण प्रतिमा	गोबर
पिण्ड के लिए चावल	दूध
पेड़ा	दही
दीपक घी का	घी
दीपक तेल का	पंचगव्य
गोरज	शय्यादान
फल	धृतकुंभ
तुलसी	आभूषण
सप्तधान्य	छत्र
सर्वोषधि	आसन आदि
वस्त्र (पांच)	बर्तन पांच

पिण्ड थाली	ज़लपात्र
३६० दीपक, घड़े	दातुन ३६०
गाय दान	गाय के लिए वस्त्र
उदकुंभ दान	पिण्ड वस्त्र
यज्ञोपवीत	चावल पिण्डों के लिए
तुलसी पत्र	दोने
यव	राल धूप
तिल	पुष्प

वृषोत्सर्ग सामग्री

मैनफल	श्वेत वस्त्र
रक्त वस्त्र	सुपारी
कलश	पंच पल्लव
धान्य	श्रीफल
सर्वोषधी	स्वर्ण प्रतिमा
दूर्वा	हवन सामग्री
कुशा	हवन के लिए समिधा
सप्त मृतिका	प्रणिता पात्र
सर्वोषधी	प्रोक्षणी पात्र
घी	श्रुव
उड़द चावल	मौली

सपिण्ड सामग्री

खीर	प्रतिमा सोने की
धूप	चांदी के खुर ४
दीपक	ताम्बे की पीठ गाय के लिए
सरसों	पीतल दोहनी १
दोने	सोने के सींग २
रोली	चांदी की शलाका १

पंचपल्लव	जनेऊ
पंच बर्तन	पांच वस्त्र
छत्र	दण्ड
आसन	उपानह
मुद्रिका	जलपात्र
आमान्न	गंगाजल
यज्ञोपवीत	ताम्बूल
शय्या	गोदान
श्रंगार सा0	गोदान वस्त्र
गोबर	गोमूत्र

एकोदिष्ट सामग्री

गोबर	चावल पिण्ड के लिए
तिल	जौ
कुशा	शय्या
वस्त्र	आमान्न
स्वर्ण प्रतिमा	वस्त्र
अन्न	गायदान

प्रत्येक दिन लगने वाली सामग्री

गंध	अक्षत	पुष्प
धूप	दीपक	नैवेद्य
फल	रुई	दूध
दही	घी	शहद
तिल	जौ	पेड़ा
दक्षिणा आदि		

पं० शिवस्रूप 'याज्ञिक' संगृहीत

अन्त्येष्टिकर्म रहस्यम् सम्पूर्णम्

घर बैठे वी० पी० पी० से मंगवाये

पंडित विद्वानों के लिए पढ़ने योग्य पुस्तकें

- सम्पूर्ण पूजन रहस्यम्
- सम्पूर्ण हवन रहस्यम्
- पूजा भास्कर
- श्री सुक्त (भाषा टीका)
- रुद्राष्टाध्यायी
- षटवर्गी जन्म पत्रिका
- गरुड़ पुराण (भाषा टीका)

कर्म सिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता, हरिद्वार